गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका जून-2019

गुरुत्व ज्योतिष

गायत्री जयंति विशेष

NOT FOR SALE



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
जून 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग
गुरुत्व कार्यालय
92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

भावार्थ: उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

हिन्दू धर्मग्रंथों में उल्लेख हैं की देवी गायत्री सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की जननी है। इसलिए तो जिन वेदों को समस्त विद्याओं का खजाना माना जाता हैं, चारों वेदों को देवी गायत्री के पुत्र माने जाते हैं। यहि कारण हैं, के देवी गायत्री को वेदों की माता अर्थात "वेदमाता" कहा गया हैं।

देवी गायत्री के मन्त्र के चार पद से क्रमशः

ॐ भूर्भवः स्वः से ऋग्वेद की रचना हुई। तत्सवितुर्वरेण्यं से यर्जुवेद की रचना हुई। भर्गोदेवस्य धीमहि से सामवेद की रचना हुई। और धियो योनः प्रचोदयात् से अथर्ववेद की रचना हुई हैं ऐसा धर्मग्रंथों में उल्लेखित हैं।

पौराणिक काल में ही हमारे ज्ञानी ऋषी मुनियों को ज्ञात हो गया था की गायत्री देवी समस्त विद्याओं की जननी हैं। ऐसा माना जाता हैं की चार वेदों से ही समस्त शास्त्र, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद्, पुराण, स्मृति आदि का निर्माण हुआ हैं।

पौराणिक मान्यता हैं की कालांतर में इन्हीं ग्रन्थों में वर्णित ज्ञान से समस्त शिल्प, वाणिज्य, शिक्षा, रसायन, वास्तु, संगीत आदि ८४ कलाओं का आविष्कार हुआ हैं। यहि कारण हैं की देवी गायत्री को संसार के समस्त ज्ञान-विज्ञान की जननी कहाँ जाता हैं। जिस प्रकार किसी बीज के भीतर संपूर्ण वृक्ष सन्निहित होता है, उसी प्रकार गायत्री के 24 अक्षरों में संसार के समस्त ज्ञान और विज्ञान सन्निहित हैं। यह सब गायत्री का ही अर्थ विस्तार हैं।

वेदमाता गायत्री के जन्म से संबंधित विभिन्न मान्यताएं प्रचलित हैं।

कुछ जानकारो का मानना हैं की वेदमाता गायत्री का जन्म श्रावणी पूर्णिमा को हुवा था इस लिये इस दिन को गायत्री जयंति के रुप में भी मनाया जाता हैं।

कुछ अन्य पोराणीक मान्यताओं एवं धर्म ग्रंथो में उल्लेख हैं की हिन्दी पंचांग के ज्यैष्ठ महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मां गायत्री का प्राकटय हुवा हैं। कुछ समय के पश्चयात इसी दिन ऋषि विश्वामित्र ने गायत्री मंत्र की रचना की थी। ऐसी मान्यता है कि इसी दिन वेदमाता गायत्री साक्षात में धरती पर अपने रूप में प्रकट हुई थीं। ज्ञान तथा वेदों का ज्ञान देवी गायत्री से ही प्रकट हुआ है।

अन्य पौराणिक मान्यता के अनुसार कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी के सूर्यास्त और सप्तमी के सूर्योदय के मध्य वेदमाता गायत्री का जन्म हुआ था। भले ही मां गायत्री के जन्म दिन को लेकर विभिन्न लोक मान्यता एवं शास्त्रों की भिन्नता से अलग-अलग मत हो। लेकिन सभी ऋषियों ने एक मत से गायत्री मंत्र की महिमा को स्वीकार किया हैं। अथर्ववेद में उल्लेख हैं की गायत्री मंत्र के जप से मनुष्य की आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज में वृद्धि होती हैं।

गायत्री मंत्र के संदर्भ में विभिन्न महापुरुषो के कथन से मिलते-जुलते अभिमत हैं महापुरुषो के कथन से आपको परिचित कराने हेतु इस अंक में उसके अंश को विभिन्न स्रोत के माध्यम से संलग्न करने का प्रयास किया गया हैं जिससे यह स्पष्ट है कि कोई ऋषि या विद्वान अन्य विषयों में चाहे अपना मतभेद रखते हों, पर गायत्री के

बारे में

उन सब में समान श्रद्धा थी और वे सभी अपनी उपासना में उसका प्रथम स्थान रखते थे ! कुछ विद्वानो का कथन हैं की शास्त्रों में, ग्रंथों में, स्मृतियों में, पुराणों में गायत्री की महिमा तथा साधना पर प्रकाश डालने वाले सहस्रों श्लोक भरे पड़े हैं । इन सबका संग्रह किया जाए, तो एक बड़ा भारी गायत्री पुराण बन सकता हैं।

सामान्यतः गायत्री मन्त्र की महिमा एवं प्रभाव से प्रायः हर हिन्दु धर्म को मानने वाले लोग परिचित हैं। गायत्री मंत्र को "गुरु मंत्र" के रुप मे जाना जाता है। क्योकि हिन्दु धर्म में गायत्री मन्त्र सभी मंत्रों में सर्वोच्च है और सबसे प्रबल शक्तिशाली मंत्र हैं।

इस अंक में अत्यंत सरल और अधिक प्रभावी दैनिक गायत्री उपासना जो हर साधारण से साधारण व्यक्ति जो अर्थात जो व्यक्ति किसी भी प्रकार के कर्म-कांड या पूजा पाठ को नहीं जानता हों या जानते हो ओर उसे करने में असमर्थ हो, ऐसे व्यक्ति भी सरल गायत्री उपासना आसानी से कर सके इस उद्देश्य से इस अंक में सलग्न करने का प्रयास किया गया हैं। क्योकि गायत्री उपासना जीवन के हर स्थिति में भक्त के लिए निश्चित रूप से फायदेमंद होती हैं।

वैसे तो मां गायत्री की पूजा हेतु अनेको विधि-विधान प्रचलन में हैं लेकिन साधारण व्यक्ति जो संपूर्ण विधि-विधान से गायत्री का पूजन नहीं कर सकते वह व्यक्ति यदि गायत्री जी के पूजन का सरल विधि-विधान ज्ञात करले तो वहँ निश्चित रुप से पूर्ण फल प्राप्त कर सकते हैं। इसी उद्देश्य से इस अंक में पाठको के ज्ञान वृद्धि के उद्देश्य से मां गायत्री के पूजन की अति सरल शीघ्र फलप्रद विधि, मंत्र, स्तोत्र इत्यादि से आपको परिचित कराने का प्रयास किया हैं। जो लोग सरल विधि से मंत्र जप पूजन इत्यादि करने में भी असमर्थ हैं वहँ लोग श्री गायत्री जी के मंत्र-स्तोत्र इत्यादि का श्रवण कर के भी पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रख कर निश्चित ही लाभ प्राप्त कर सकते हैं, यहँ अनुभूत उपाय हैं जो निश्चित फल प्रदान करने में समर्थ हैं इस में जरा भी संसय नहीं हैं। इस अंक में आप अपने कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु सरल से सरल उपायों को कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके इस उद्देश्य से गायत्री मन्त्र के विलक्षण प्रयोग को इस अंक में सलग्न करने का प्रयास किया गया हैं। जिसे संपन्न करके आप वेदमाता गायत्री की कृपा प्राप्त कर अपने मनोरथों को निश्चित रुप से पूर्ण कर सकते हैं।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से ढेर सारी शुभकामनाएं..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो माता गायत्री की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। माता गायत्री से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

माता गायत्री समस्त विद्याओं की जननी हैं...

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

हिन्दू धर्मग्रंथों में उल्लेख हैं की देवी गायत्री सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की जननी है। इसलिए तो जिन वेदों को समस्त विद्याओं का खजाना माना जाता हैं,

विद्वानो के मतानुशार सभी वेद देवी गायत्री की व्याख्या हैं । यहि कारण हैं, के देवी गायत्री को वेदों की माता अर्थात "वेदमाता" कहा गया हैं। चारों वेदों को देवी गायत्री के पुत्र माने जाते हैं।

शास्त्रोक्त मत से जब ब्रह्माजी ने एक-एक करके अपने चारों मुख से गायत्री के चार अलग-अलग चरण की व्याख्या की थी उस वक्त चारों वेदों का उद्भम माना जाता हैं या चार वेद प्रकट हुए हैं।

देवी गायत्री के मन्त्र के चार पद से क्रमशः

ॐ भूर्भवः स्वः से ऋग्वेद की रचना हुई। **तत्सवितुर्वरेण्यं** से यर्जुवेद की रचना हुई। **भर्गोदेवस्य धीमहि** से सामवेद की रचना हुई। और **धियो योनः प्रचोदयात्** से अथर्ववेद की रचना हुई हैं ऐसा धर्मग्रंथों में उल्लेखित हैं।

पौराणिक काल में ही हमारे ज्ञानी ऋषी मुनियों को ज्ञात हो गया था की गायत्री देवी समस्त विद्याओं की जननी हैं। ऐसा माना जाता हैं की चार वेदों से ही समस्त शास्त्र, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद्, पुराण, स्मृति आदि का निर्माण हुआ हैं।

पौराणिक मान्यता हैं की कालांतर में इन्हीं ग्रन्थों में वर्णित ज्ञान से समस्त शिल्प, वाणिज्य, शिक्षा, रसायन, वास्तु, संगीत आदि ८४ कलाओं का आविष्कार हुआ हैं। यहि कारण हैं की देवी गायत्री को संसार के समस्त ज्ञान-विज्ञान की जननी कहाँ जाता हैं। जिस प्रकार किसी बीज के भीतर संपूर्ण वृक्ष सन्निहित होता है, उसी प्रकार गायत्री के 24 अक्षरों में संसार के समस्त ज्ञान और विज्ञान सन्निहित हैं। यह सब गायत्री का ही अर्थ विस्तार हैं।

मंत्र की परीभाषा:

मंत्र उस ध्वनि को कहते है जो अक्षर(शब्द) एवं अक्षरों (शब्दों) के समूह से बनता है। संपूर्ण ब्रह्माण्ड में दो प्रकार कि ऊर्जा से व्याप्त है, जिसका हम अनुभव कर सकते है, वह ध्वनि उर्जा एवं प्रकाश उर्जा है। इस के अलावा ब्रह्माण्ड में कुछ एसी ऊर्जा भी व्याप्त होती है जिसे ना हम देख सकते है नाही सुन सकते है नाहीं अनुभव कर सकते है। आध्यात्मिक शक्ति इनमें से कोई भी एक प्रकार की ऊर्जा दूसरी उर्जा के सहयोग के बिना सक्रिय नहीं होती। मंत्र सिर्फ़ ध्वनियाँ नहीं हैं जिन्हें हम कानों से सुनते सकते हैं, ध्वनियाँ तो मात्र मंत्रों का लौकिक स्वरुप भर हैं जिसे हम सुन सकते हैं। ध्यान की उच्चतम अवस्था में व्यक्ति का आध्यात्मिक व्यक्तित्व पूरी तरह से ब्रह्माण्ड की अलौकिक शक्तिओ के साथ मे एकाकार हो जाता है और विभिन्न प्रकारी की शक्तियां प्राप्त होने लगती हैं। प्राचीन ऋषियों ने इसे शब्द-ब्रह्म की संज्ञा दी वह शब्द जो साक्षात् ईश्वर हैं! उसी सर्वज्ञानी शब्द-ब्रह्म से एकाकार होकर व्यक्ति को मनचाहा ज्ञान प्राप्त कर ने मे समर्थ हो सकता हैं।

हर मंत्रों में कई विशेष प्रकार की शक्ति निहित होती हैं। मंत्रों के अक्षर शक्ति बीज माने जाते हैं। जैसे सभी विशिष्ट मंत्रों में उनके शब्दों में विशेष प्रकार की शक्ति तो होती है, पर किसी-किसी मन्त्र में उन शब्दों का कोई विशेष महत्वपूर्ण अर्थ नहीं होता। लेकिन गायत्री मंत्र में ऐसा नहीं हैं। गायत्री मंत्र के हर एक-एक अक्षर में अनेक प्रकार के गूढ़ रहस्यमय तत्त्व छिपे हुए हैं। ऐसा माना जाता हैं की समस्त लोक में प्रचलित ६४ कलाओं, ६ शास्त्रों, ६ दर्शनों एवं ८४ विद्याओं के रहस्य प्रकाशित करने वाले सभी अर्थ गायत्री के हैं।

***

गायत्री मंत्र का परिचय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सामान्यतः गायत्री मन्त्र की महिमा एवं प्रभाव से प्रायः हर हिन्दु धर्म को मानने वाले लोग परिचित हैं। गायत्री मंत्र को "गुरु मंत्र" के रुप मे जाना जाता है। क्योकि हिन्दु धर्म में गायत्री मन्त्र सभी मंत्रों में सर्वोच्च है और सबसे प्रबल शक्तिशाली मंत्र हैं।

ॐ भूर्भवः स्वः तत्स वितुर्वरेण्यं।
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात॥

भावार्थ: उस प्राणस्वरूप, दु:खनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

गायत्री मंत्र का अर्थ विस्तृत शब्दो में

ओम	-	है सर्वशक्तिमान परमेश्वर	भर्गो	-	पापों का नाशक
भूर	-	आध्यात्मिक ऊर्जा का अवतार	देवस्य	-	परमात्मा
भव	-	दुख की विनाशक	धीमहि	-	मुजे प्राप्ति हो
स्वह	-	खुशी के अवतार	धियो	-	एसि बुद्धि
तत्	-	जो (भगवान का संकेत)	यो	-	जो
सवितुर	-	उज्ज्वल, चमकीले, सूर्य की तरह	नह	-	हमे
वरेण्यं	-	उत्तम	प्रचोदयात	-	प्रेरणा दे

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों का ब्रह्मांड से गूढ़ संबंध

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

देवी गायत्री की विभिन्न २४ शक्तियाँ

वर्णानां शक्तयः काश्च् ताः शृणुषव् महामुने ।। वामदेवी प्रिया सत्या विश्वा भद्रविलासिनी॥ प्रभावती जया शान्ता कान्ता दुर्गा सरस्वती ।। विद्रुमा च् विशालेशा व्यापिनी विमला तथा॥ तमोऽपहारिणी सूक्ष्माविश्वयोनिर्जया वशा ।। पद्मालया परा शोभा भद्रा च् त्रिपदा स्मृता॥ चतुर्विंशतिवर्णानां शक्तयः समुदाहृताः॥

अर्थात्: हे मुनि ! अब सुनो कि देवी गायत्री के २४ अक्षरों में कौन-कौनसी शक्तियाँ समाहित हैं। जो क्रमशः (१) वामदेवी (२) प्रिया (३) सत्या (४) विश्वा (५) भद्र विलासिनी (६) प्रभावती (७) शान्ता (८) कान्ता (९) दुर्गा (१०) सरस्वती (११) विद्रुमा (१२) विशालेशा (१३) व्यापिनी (१४) विमला (१५) तमोपहारिणी (१६) सूक्ष्मा (१७) विश्वयोनि (१८) जया (१९) यशा (२०) पद्मालया (२१) परा (२२) शोभा (२३) भद्रा (२४) त्रिपदा, हैं।

देवी गायत्री के मूल मंत्र में चौबीस अक्षर हैं। विद्वानो ने इन अक्षरों में बीज रूप में समाहित विभिन्न शक्तियों विस्तृत वर्णन करते हुए इस अद्भूत शक्तियों का वर्णन चौबीस अवतार, चौबीस ऋषि, चौबीस शक्तियाँ एवं चौबीस सिद्धियाँ दर्शाकर किया हैं।

देवी गायत्री की २४ कला

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों एवं कला से संबंध (१) तापिनी (२) सफला (३) विश्वा (४) तुष्टा (५) वरदा (६) रेवती (७) सूक्ष्मा (८) ज्ञाना (९) भर्गा (१०) गोमती (११) दर्विका (१२) थरा (१३) सिंहिका (१४) ध्येया (१५) मर्यादा (१६) स्फुरा (१७) बुद्धि (१८) योगमाया (१९) योगात्तरा (२०) धरित्री (२१) प्रभवा (२२) कुला (२३) दृष्या (२४) ब्राह्मी ।

देवी गायत्री व २४ मातृका

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों एवं मातृका से संबंध (१) चन्द्रकेश्वरी (२) अजतवला (३) दुरितारि (४) कालिका (५) महाकाली (६) श्यामा (७) शान्ता (८) ज्वाला (९) तारिका (१०) अशोका (११) श्रीवत्सा (१२) चण्डी (१३) विजया (१४) अंकुशा (१५) पन्नगा (१६) विर्वाक्षी (१७) वेला (१८) धारिणी (१९) प्रिया (२०) नरदत्ता (२१) गन्धारी (२२) अम्बिका (२३) पद्मावती (२४) सिद्घायिका।

देवी गायत्री व २४ देवता

(१) अग्नि (२) प्रजापति (३) चन्द्रमा (४) ईशान (५) सविता (६) आदित्य (७) बृहस्पति (८) मित्रावरुण (९) भग (१०) अर्यमा (११) गणेश (१२) त्वष्टा (१३) पूषा (१४) इन्द्राग्नि (१५) वायु (१६) वामदेव (१७) मैत्रावरूण (१८) विश्वेदेवा (१९) मातृक (२०) विष्णु (२१) वसुगण (२२) रूद्रगण (२३) कुबेर (२४) अश्विनीकुमार ।

देवी गायत्री व २४ अवतार

(१) नारायण, (२) हंस, (३) यज्ञ पुरुष, (४) मत्स्य, (५) कर्म, (६) वाराह, (७) वामन, (८) नृसिंह, (९) परशुराम, (१०) नारद, (११) धन्वतरि, (१२) सनत्कुमार, (१३) दत्तात्रेय, (१४) कपिल, (१५) ऋषभदेव, (१६) हयग्रीव, (१७) मोहनी, (१८) हरि, (१९) प्रभु, (२०) राम, (२१) कृष्ण, (२२) व्यास, (२३) बुद्ध और (२४) निष्कलंक - प्रज्ञावतार ।

देवी गायत्री व २४ ऋषि

(१) वामदेव, (२) अत्रि, (३) वशिष्ठ, (४) शुक्र, (५) कण्व, (६) पाराशर, (७) विश्वामित्र, (८) कपिल, (९) शौनक, (१०) याज्ञवल्क्य, (११) भारद्वाज, (१२) जमदग्नि, (१३) गौतम, (१४) मुद्गल, (१५) वेदव्यास, (१६) लोमश, (१७) अगस्त्य, (१८) कौशिक, (१९) वत्स, (२०) पुलस्त्य, (२१) माण्डूक, (२२) दुर्वासा, (२३) नारद और (२४) कश्यप ।

देवी गायत्री व मस्तिष्कीय २४ शक्ति

(१) प्रज्ञा, (२) सृजन, (३) व्यवस्था, (४) नियंत्रण, (५)

सद्ज्ञान, (६) उदारता, (७) आत्मीयता, (८) आस्तिकता, (९) श्रद्धा, (१०) शुचिता, (११) संतोष, (१२) सहृदयता, (१३) सत्य, (१४) पराक्रम, (१५) सरसता, (१६) स्वावलम्बन, (१७) साहस, (१८) ऐक्य, (१९) संयम, (२०) सहकारिता, (२१) श्रमशीलता, (२२) सादगी, (२३) शील और (२४) समन्वय ।

देवी गायत्री व २४ छन्द

(१) गायत्री, (२) उष्णिक, (३) अनुष्टुप, (४) वृहती, (५) पंक्ति, (६) त्रिष्टुप, (७) जगती, (८) अतिजगती, (९) शक्वरी, (१०) अतिशक्वरी, (११) धृति, (१२) अतिधृति, (१३) विराट्, (१४) प्रस्तार पंक्ति, (१५) कृति, (१६) प्रकृति, (१७) आकृति, (१८) विकृति, (१९) संकृति, (२०) अक्षर पंक्ति, (२१) भूः, (२२) भुवः, (२३) स्वः और (२४) ज्योतिष्मती ।

देवी गायत्री व २४ मुद्रा

(१) महामुद्रा, (२) नभोमुद्रा, (३) उड्डीयान, (४) जालन्धर बन्ध, (५) मूलबन्ध, (६) महाबन्ध, (७) खेचरी, (८) विपरीत करणी, (९) योनिमुद्रा, (१०) बज्रोली, (११) शक्ति चालनी, (१२) ताड़ागी, (१३) माण्डवी, (१४) शांभवी, (१५) अश्विनी, (१६) पाशिनी, (१७) काकी, (१८) मातंगी, (१९) भुजङ्गिनी, (२०) पार्थिवी, (२१) आम्भसी, (२२) वैश्वानरी, (२३) वायवी और (२४) आकाशी ।

अन्य मत से

(१) सुमुख, (२) सम्पुट, (३) वितत, (४) विस्तृत, (५) द्विमुख, (६) त्रिमुख, (७) चतुर्मुख, (८) पंचमुख, (९) षडमुख, (१०) अधोमुख, (११) व्यापकाञ्जलि, (१२) शकट, (१३) यमपाश, (१४) ग्रंथित, (१५) सन्मुखोन्मुख, (१६) प्रलम्ब, (१७) मुष्टिक, (१८) मत्स्य, (१९) कूर्म, (२०) बराहक, (२१) सिंहाक्रान्त, (२२) महाक्रान्त, (२३) मुद्गर और (२४) पल्लव ।

देवी गायत्री व अष्टसिद्धि, नव निद्धि एवं सप्त विभूतिया

(१) प्रज्ञा, (२) वैभव, (३) सहयोग, (४) प्रतिभा, (५) ओजस्, (६) तेजस्, (७) वर्चस्, (८) कान्ति, (९) साहसिकता, (१०) दिव्य दृष्टि, (११) पूर्वाभास, (१२) विचार, संचार, (१३) वरदान, (१४) शाप, (१५) शान्ति, (१६) प्राण प्रयोग, (१७) देहान्तर सम्पर्क, (१८) प्राणाकर्षण, (१९) ऐश्वर्य, (२०) दूर श्रवण, (२१) दूरदर्शन, (२२) लोकान्तर सम्पर्क, (२३) देव सम्पर्क और (२४) कीर्ति ।

देवी गायत्री व २४ तत्व

(१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) वायु, (५) आकाश, (६) गन्ध, (७) रस, (८) रूप, (९) शब्द, (१०) स्पर्श, (११) उपस्थ, (१२) गुदा, (१३) पाद, (१४) पाणि, (१५) वाणी, (१६) प्राण, (१७) जिह्वा, (१८) चक्षु, (१९) त्वचा, (२०) श्रोत्र, (२१) प्राण, (२२) अपान, (२३) व्यान और (२४) समान ।

अन्य मत से

(१) पृथ्वी, (२) जल, (३) तेज, (४) वायु, (५) आकाश, (६) गन्ध, (७) रस, (८) रूप, (९) स्पर्श, (१०) शब्द, (११) वाक्, (१२) पैर, (१३) गुदा, (१४) जननेन्द्रिय, (१५) त्वचा, (१६) नेत्र, (१७) कान, (१८) जीभ, (१९) नाक, (२०) मन, (२१) बुद्धि, (२२) अहंकार, (२३) चित्त और (२४) ज्ञान ।

देवी गायत्री व चौबीस बीज अक्षर

(१) ॐ, (२) ह्रीं, (३) श्रीं, (४) क्लीं, (५) ह्रों, (६) जूं, (७) यं, (८) रं, (९) लं, (१०) वं, (११) शं, (१२) सं, (१३) ऐं, (१४) क्रों, (१५) हुं, (१६) ह्लीं, (१७) पं, (१८) फं, (१९) टं, (२०) ठं, (२१) डं, (२२) ढं, (२३) क्षं और (२४) लृं ।

गायत्री मंत्र के संदर्भ में महापुरुषों के वचन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सभी ऋषियों ने एक मत से गायत्री मंत्र की महिमा को स्वीकार किया हैं।

अथर्ववेद में उल्लेख हैं की गायत्री मंत्र के जप से मनुष्य की आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज में वृद्धि होती हैं।

विश्वामित्र जी का कथन हैं:



गायत्री मंत्र से बढ़कर पवित्र करने वाला और कोई मंत्र नहीं हैं। उन्हों नी गायत्री मंत्र की महिमा में कहां हैं की जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री जाप करता हैं, वह निश्चित रुप से ईश्वर को प्राप्त करता हैं।

जो द्विज अर्थात ब्राह्मण दोनों संध्याओं में गायत्री मंत्र जपता हैं, वह समस्त वेद को पढ़ने के समान फल को प्राप्त करता हैं। मनुष्य अन्य कोई अनुष्ठान या साधना करे या न करे, केवल गायत्री मंत्र के जप से वहँ सभी सिद्धि प्राप्त कर सकता हैं। प्रतिदिन एक हजार जप करने वाला मनुष्य समस्त पापों से छूट जाता हैं। विश्वामित्र जी का यहाँ तक कहना हैं की जो द्विज अर्थात ब्राह्मण गायत्री की उपासना नहीं करता, वह निन्दा का पात्र हैं।

योगिराज याज्ञवल्क्य जी का कथन हैं

वेदों का सार उपनिषद हैं, उपनिषद का सार व्याहृतियों सहित गायत्री हैं। गायत्री वेदों की जननी है, पापों का नाश करने वाली है, इससे अधिक पवित्र करने वाला अन्य कोई मन्त्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं हैं। जैसे गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव से श्रेष्ठ कोई देव नहीं। गायत्री से श्रेष्ठ मंत्र न हुआ हैं, न आगे होगा। गायत्री मंत्र जप लेने वाला समस्त विद्याओं का वेत्ता, श्रेष्ठ हो जाता हैं। जो द्विज अर्थात ब्राह्मण गायत्री परायण नहीं, वह वेदों का पारंगत होते हुए भी शूद्र के समान है, अन्यत्र किया हुआ उसका श्रम व्यर्थ हैं। जो मनुष्य गायत्री को नहीं जानता, ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणत्व से च्युत अर्थात बरख़ास्त और पापयुक्त हो जाता हैं।



पाराशर जी का कथन हैं

समस्त जप, सूक्तों तथा वेद मंत्रों में गायत्री मंत्र परम श्रेष्ठ हैं। वेद और गायत्री की तुलना में गायत्री का पलड़ा भारी हैं। भक्तिपूर्वक गायत्री का जप करने वाला मनुष्य मुक्त होकर पवित्र बन जाता हैं। वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास पढ़ लेने पर भी जो गायत्री से हीन है, उसे ब्राह्मण नहीं समझना चाहिये।



शंख ऋषि का कथन हैं

नरक के समान समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री ही हैं। उससे उत्तम तत्व स्वर्ग और

पृथ्वी पर कोई नहीं हैं। गायत्री का ज्ञाता निस्संदेह स्वर्ग को प्राप्त करता हैं।

शौनक ऋषि का कथन हैं



अन्य उपासनायें करें चाहे न करें, केवल गायत्री जप से ही द्विज (ब्राह्मण) जीवन मुक्त हो जाता हैं। व्यक्ति समस्त सांसारिक और पारलौकिक सुखों को प्राप्त करता हैं। संकट के समय दस हजार जप करने से विपत्ति का निवारण होता हैं।

अत्रि मुनि का कथन हैं

देवी गायत्री आत्मा का परम शोधन करने वाली हैं। उसके प्रताप से कठिन दोष और दुर्गुणों का परिमार्जन अर्थात सफ़ाई हो जाती हैं। जो मनुष्य गायत्री तत्त्व को भली प्रकार से समझ लेता है, उसके लिए इस संसार में कोई सुख शेष नहीं रह जाता हैं।

नारदजी का कथन हैं

गायत्री भक्ति का ही स्वरूप हैं। जहाँ भक्ति रूपी गायत्री है, वहाँ श्रीनारायण का निवास होने में कोई संदेह नहीं करना चाहिये ।

महर्षि व्यास जी का कथन हैं



जिस प्रकार पुष्प का सार शहद, दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री हैं। सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान हैं। गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती है, गायत्री रूपी ब्रह्म गंगा से आत्मा पवित्र होती हैं। जो गायत्री छोड़कर अन्य उपासनायें करता है, वह पकवान छोड़कर भिक्षा माँगने वाले के समान मूर्ख हैं। काम्य सफलता तथा तप की वृद्धि के लिये गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं हैं।

भारद्वाज ऋषि का कथन हैं



ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं, वह ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाली हैं। अनुचित काम करने वालों के दुर्गुण गायत्री के कारण छूट जाते हैं । गायत्री से रहित व्यक्ति शुद्र से भी अपवित्र हैं।

चरक ऋषि का कथन हैं



जो मनुष्य ब्रह्मचर्यपूर्वक गायत्री की उपासना करता है और आँवले के ताजे फलों का सेवन करता है, वह मनुष्य दीर्घजीवी होता हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य जी का कथन हैं



गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सार्मथ्य के बाहर हैं। बुद्धि का होना इतना बड़ा कार्य है, जिसकी समता संसार के और किसी काम से नहीं हो सकती । आत्म-प्राप्ति करने की दिव्य दृष्टि जिस बुद्धि से प्राप्त होती है, उसकी प्रेरणा गायत्री द्वारा होती हैं। गायत्री आदि मंत्र हैं। उसका अवतार दुरितों को नष्ट करने और ऋत के अभिवर्धन के लिये हुआ हैं।

वशिष्ठ जी का कथन हैं

मन्दमति, कुमार्गगामी और अस्थिरमति भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं, फिर **सद् गति** होना निश्चित हैं। जो पवित्रता और स्थिरतापूर्वक गायत्री की उपासना करते है, वे आत्म-लाभ प्राप्त करते हैं ।

महात्मा गाँधी जी का कथन हैं



गायत्री मंत्र निरंतर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्मा की उन्नति के लिये उपयोगी हैं। गायत्री का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया हुआ जप आपात्तकाल में संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता हैं।

लोकमान्य तिलक जी का कथन हैं



जिस बहुमुखी दासता के बंधनों में भारतीय प्रजा जकड़ी हुई है, उसके लिये आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिये, जिससे सत् और असत् का विवेक हो, कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले, गायत्री मंत्र में यही भावना विद्यमान हैं।

योगी अरविन्दजी

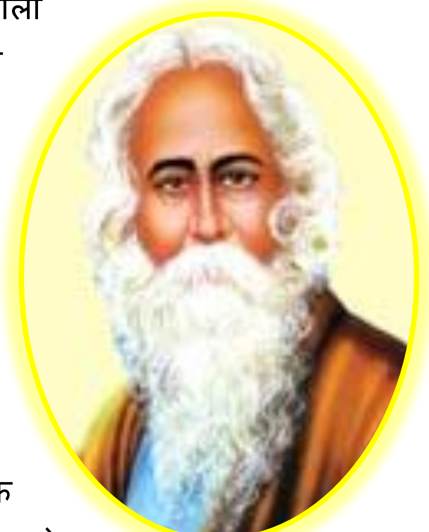
योगी अरविन्दजी ने विभिन्न स्थानो पर जगह गायत्री जप करने का निंदेश किया हैं। उन्होंने बताया कि गायत्री में ऐसी शक्ति सन्निहित है, जो महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं। उन्होंने कईयों को साधना के तौर पर गायत्री का जप बताया हैं।

महामना मदनमोहन मालवीय जी का कथन हैं



ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिये हैं, उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री हैं। गायत्री से बुद्धि पवित्र होती हैं। ईश्वर का प्रकाश आत्मा में आता हैं। इस प्रकाश में असंख्य आत्माओं को भव-बंधन से त्राण मिला हैं। गायत्री में ईश्वर परायणता के भाव उत्पन्न करने की शक्ति हैं। साथ ही वह भौतिक अभावों को दूर करती हैं। गायत्री की उपासना ब्राह्मणों के लिये तो अत्यन्त आवश्यक हैं। जो ब्राह्मण गायत्री जप नहीं करता, वह अपने कर्तव्य धर्म को छोड़ने का अपराधी होता हैं।

रवीन्द्र टैगोर जी का कथन हैं



भारतवर्ष को जगाने वाला जो मंत्र है, वह इतना सरल है कि एक ही श्वास में उसका उच्चारण किया जा सकता हैं। वह है- गायत्री मंत्र । इस पुनीत मंत्र का अभ्यास करने में किसी प्रकार के तार्किक ऊहापोह, किसी प्रकार के मतभेद अथवा किसी प्रकार के बखेड़े की गुंजाइश नहीं हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी का कथन हैं



मैं लोगों से कहता हूँ कि लम्बी साधना करने की उतनी आवश्यकता नहीं हैं। इस छोटी-सी गायत्री की साधना करके देखों । गायत्री का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं । यह मंत्र छोटा है, पर इसकी शक्ति बड़ी भारी हैं।

स्वामी रामतीर्थ जी का कथन हैं



राम को प्राप्त करना सबसे बड़ा काम हैं। गायत्री का अभिप्राय बुद्धि को काम-रुचि से हटाकर राम-रुचि में लगा देना हैं। जिसकी बुद्धि पवित्र होगी, वही राम को प्राप्त कर सकेगा । गायत्री पुकारती है कि बुद्धि में इतनी पवित्रता होनी चाहिये कि वह राम को काम से बढ़कर समझे ।

महर्षि रमण जी का कथन हैं



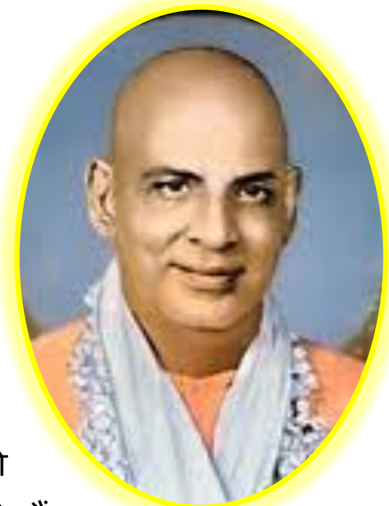
योग विद्या के अन्तर्गत मंत्र विद्या बड़ी प्रबलत हैं। मंत्रों की शक्ति से अद्भुत सफलतायें मिलती हैं । गायत्री ऐसा मंत्र है, जिससे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के लाभ मिलते हैं ।

स्वामी विवेकानंद जी का कथन हैं

राजा से वही वस्तु माँगी जानी चाहिये, जो उसके गौरव के अनुकूल हो । परमात्मा से माँगने योग्य वस्तु सद् बुद्धि हैं। जिस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं, उसे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं । सद्बुद्धि से सत् मार्ग पर प्रगति होती है और सत् कर्म से सब प्रकार के सुख मिलते हैं । जो सत् की ओर बढ़ रहा है, उसे किसी प्रकार के सुख की कमी नहीं रहती । गायत्री सद्बुद्धि का मंत्र हैं। इसलिये उसे मंत्रों का मुकुटमणि कहा हैं।



स्वामी शिवानंदजी जी का कथन हैं



ब्राह्ममुहूर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती हैं। शरीर नीरोग रहता है, स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होने से दूरदर्शिता बढ़ती है और स्मरण शक्ति का विकास होता हैं। कठिन प्रसंगों में गायत्री द्वारा दैवी सहायता मिलती हैं। उसके द्वारा आत्म-दर्शन हो सकता हैं।

उपरोक्त महापुरुषो के कथन से मिलते-जुलते अभिमत प्रायः सभी विद्वानो के हैं । इससे स्पष्ट है कि कोई ऋषि या विद्वान अन्य विषयों में चाहे अपना मतभेद रखते हों, पर गायत्री के बारे में उन सब में समान श्रद्धा थी और वे सभी अपनी उपासना में उसका प्रथम स्थान रखते थे ! कुछ विद्वानो का कथन हैं की शास्त्रों में, ग्रंथों में, स्मृतियों में, पुराणों में गायत्री की महिमा तथा साधना पर प्रकाश डालने वाले सहस्रों श्लोक भरे पड़े हैं । इन सबका संग्रह किया जाए, तो एक बड़ा भारी गायत्री पुराण बन सकता हैं।

गायत्री मन्त्र के विलक्षण प्रयोग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मूल मंत्र:

ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात ॥

विधि :

प्रतिदिन प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर उक्त मन्त्र की एक माला जप करें। विद्वानो के मतानुशार गायत्री मन्त्र को 108 बार पढ़कर स्वच्छ जल को अभिमंत्रित कर के पीने से साधक के समस्त रोग-शोक-भय दूर होते हैं।

गायत्री मन्त्र से भात (पके हुए चावल) में घी मिलाकर 108 बार विधिवत होम करने से साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु

गायत्री मंत्र के आगे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं बीज मंत्र लगाकर जप करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

मंत्र:

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात ॥

ज्ञान प्राप्ति हेतु

गायत्री मंत्र के पीछे ॐ ऐं क्लीं औं बीज मंत्र लगाकर जप करने से मूर्ख-जड़ से जड़ व्यक्ति भी विद्वान हो जाता हैं।

मंत्र:

ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि
। धियो यो नः प्रचोदयात ॥ ॐ ऐं क्लीं औं ॥

संतान की प्राप्ति हेतु

गायत्री मंत्र के आगे ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं बीज मंत्र लगाकर जप करने से संतान की प्राप्ति होती हैं।

मंत्र:

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात ॥

भूत-प्रेत इत्यादि उपद्रवों के नाश हेतु

गायत्री मंत्र के आगे ॐ ह्रीं क्लीं बीज मंत्र लगाकर जप करने से भूत-प्रेत, तंत्र बाधा, चोट, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, कामण-टूमण, इत्यादि उपद्रवों का नाश होता हैं।

मंत्र:

ॐ ह्रीं क्लीं ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात ॥

असाध्य रोगों के निवारण हेतु

गायत्री मंत्र के आगे ॐ ह्रीं बीज मंत्र लगाकर जप करने से असाध्य रोग एवं परेशानीयों से मुक्ति मिलती हैं।

मंत्र:

ॐ ह्रीं ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात ॥

धन-संपत्ति की वृद्धि हेतु

गायत्री मंत्र के आगे ॐ आं ह्रीं क्लीं बीज मंत्र लगाकर जप करने से धन-संपत्ति की वृद्धि एवं रक्षा होती हैं।

मंत्र:

ॐ आं ह्रीं क्लीं ॐ भूर्भुवस्वः । तत सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात ॥

गायत्री मन्त्र के अन्य अनुभूत प्रयोग:

प्राण भय निवारण हेतु

यदि व्यक्ति के प्राण को किसी भी कारण वश महान संकट हो, ऐसी अवस्था में शरीर का कण्ठ तक या जाँघ तक का हिस्सा पानी (पवित्र नदी, जलाशय या तालाब)

में डूबा रहे इस प्रकार खड़े होकर नित्य 108 बार गायत्री मन्त्र जपने से प्राण की रक्षा होती हैं, ऐसा विद्वानो का कथन हैं।

ग्रह-बाधा निवारण हेतु

यदि व्यक्ति को ग्रह जनित पीड़ाओं से कष्ट हो, तो शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर गायत्री मन्त्र का जप करने से ग्रहों के बुरे प्रभाव से रक्षा होती हैं। यह पूर्णतः अनुभूत प्रयोग हैं।

मृत्यु भय निवारण हेतु

- यदि व्यक्ति की कुंडली में अल्प मृत्यु योग का निर्माण हो रहा हो, तो गुरुचि के छोटे टुकड़े करके गाय के दूध में दुबाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर प्रतिदिन 108 बार हवन करने से अकाल **मृत्यु योग** का निवारण होता है। इसे मृत्युंजय हवन भी कहते हैं। (गुरुचि को अन्य भाषाओं में गुलवेल, मधुपर्णी, नीमगिलो, अमृतवेल, अमृतवल्लि आदि नाम से भी जाना जाता हैं) को शमी वृक्ष की लकड़ी में गाय का शुद्ध घी, जौ, गाय दूध मिलाकर 7 दिन तक नियमित गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से अकाल मृत्यु योग दूर होता है।
- मधु, गाय का शुद्ध घी, गाय दूध मिलाकर 7 दिन तक नियमित गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से अकाल मृत्यु योग दूर होता है।
- बरगद की समिधा में बरगद की हरी टहनी पर गाय का शुद्ध घी और गाय के दूध सब का मिश्रण कर 7 दिन तक नियमित गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से अकाल मृत्यु योग दूर होता है।

ज्वर निवारण हेतु

यदि ज्वर से पीडित व्यक्ति को उचित इलाज़ एवं दवाईयों से राहत नहीं मिल रही हो, तो आम के पत्तों को गाय के दूध में दुबाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से सभी प्रकार के ज्वर शीघ्र दूर होने लगते हैं और रोगी जल्दी स्वस्थ हो जाता हैं।

राज रोग निवारण हेतु

यदि कोई व्यक्ति राज रोग (अर्थात: ऐसा रोग जिससे पीछे छूटना असंभव हो, असाध्य रोग)से पीडित हो, तो मीठा वच को गाय के दूध में दुबाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से राज रोग में राहत होने लगती हैं और रोगी जल्दी स्वस्थ हो ने लगता हैं।

कुष्ठ रोग निवारण हेतु

यदि कोई व्यक्ति कुष्ठ रोग से पीडित हो, तो शंख पुष्पी के पुष्पों से गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से कुष्ठ रोग दूर होता हैं।

उन्माद रोग निवारण हेतु

यदि घर का कोई सदस्य उन्माद रोग से पीडित हो, तो गूलर की लकड़ी और फल से गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से उन्माद रोग का निवारण होता हैं।

मधुमेह (डायबिटीज) रोग निवारण हेतु

यदि व्यक्ति मधुमेह रोग से पीडित हो, तो ईख के रस में मधु मिलाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से **मधुमेह** रोग में लाभ होता हैं।

बवासीर रोग निवारण हेतु

यदि व्यक्ति बवासीर रोग से पीडित हो, तो गाय के दही, दूध व घी तीनो को मिलाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से बवासीर रोग में लाभ होता हैं।

दमा रोग निवारण हेतु

यदि व्यक्ति दमा रोग से पीडित हो, तो अपामार्ग, गाय का शुद्ध घी मिलाकर गायत्री मन्त्र पढ़कर 108 बार हवन करने से दमा रोग में लाभ होता हैं।

राष्ट्र भय निवारण हेतु

यदि किसी राजा, नेता प्रजा या देश पर किसी प्रकार से शत्रु पक्ष से आक्रमण का अंदेशा हो या किसी प्रकार से कुदरती संकट (विद्युत्पात, अग्नि आदि) का भय हो, तो बेंत की लकड़ी के छोटे-छोटे टूकडे कर गायत्री मन्त्र

पढ़कर108 बार हवन करने से राष्ट्र भय का निवारण होता हैं।

अनिष्टकारी दोष निवारण हेतु

यदि किसी दिशा, शत्रु विशेष या पंच तत्व से संबंधित दोष की आशंका हो, तो 21 दिन तक नित्य गायत्री मन्त्र का करें, जप की समाप्ति वाले दिन जिस दिशा में दोष या शत्रु हो उस दिशा में मिट्टी का ढेला अभिमंत्रित करके फेंक ने से दोष दूर होता हैं।

शारीरिक व्याधि निवारण हेतु

यदि शरीर के किसी अंग में व्याधि या पीड़ा हो, तो आत्म भाव एवं पूर्ण श्रद्धा से गायत्री मन्त्र का जप करते हुऐ कुशा पर फूँक मार कर शरीर के उस अंग या हिस्सी का स्पर्श करने से सभी प्रकार के रोग, विकार, विष, आदि नष्ट हो जाते हैं।

भूत-प्रत व्याधि निवारण हेतु

यदि व्यक्ति को भूत-प्रेत आदि बाधा से पीड़ा हो या कोई स्थान विशेष पर भूत-प्रेत आदि क्षुद्र जीवों का जमावड़ा हो, तो ताँबें के कलश में जल भरकर गायत्री मन्त्र का जप करते हुऐ उसमें फूँक मार कर जल को अभिमंत्रित करले फिर उस व्यक्ति पर जल छिटकने से या उसे पीलाने से अथवा संबंधित स्थान पर अभिमंत्रित जल का छिटकाव करने से भूतादि दोष दूर होता है।

सर्व सुख प्राप्ति हेतु

सभी प्रकार से सुखों की प्राप्ति के लिए, गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार ताजे फूलों से हवन करने से सर्व सुखों की प्राप्ति होती हैं।

लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु

- लाल कमल पुष्प अथवा चमेली के पुष्प और शालि चावल (सुगंधित चावल या मीठे चावल या लाल अक्षत) से गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं।
- बेल के छोटे-छोटे टुकड़े करके बिल्व, पुष्प, फल, घी, खीर को मिलाकर हवन सामग्री बनाकर, बिल्व की लकड़ी से गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं।

विजय प्राप्ति हेतु

यदि किसी से बिना किसी कारण से सरकारी लोगों या प्रसासनीय से अनावश्यक वाद-विवाद चल रहा हो, तो मदार की लकड़ी में मदार के ताजे पत्र गाय का शुद्ध घी मिलाकर गायत्री मन्त्र जपते हुए 108 बार हवन करने से विजय की प्राप्ति होती हैं।

नोटः- विशेष लाभ की प्राप्ति हेतु किसी भी प्रयोग के करने से पूर्व कुछ दिन निश्चित संख्या में 1, 3, 5, 7, 11, 21 यथा संभव जप करने से प्रयोग में शीध्र लाभ की प्राप्ति होती हैं। जप के साथ प्रतिदिन दशांश हवन करे अथवा दशांश की संख्या के अधिक जप करें।

विभिन्न देवी-देवता के गायत्री मन्त्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गायत्री देवी मन्त्र	ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥	Om bhur bhuvah svah Tat savitur vareniyam Bhargo devasya dheemahee Dhiyo yo nah prachodayat.
दुर्गा गायत्री मन्त्र	ॐ गिरिजायै विद्महे, शिव प्रियायै धीमहि, तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।।	Om Girijayai Vidhmahe Shiv Priyayai Dheemahee Tanno Durgaya Prachodayat.
देवी गायत्री मन्त्र	ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात्॥	Om Devyai Brahmanyai Vidhmahe Mahashaktyai Dheemahee Tanno Devi Prachodayat
कात्यायनी गायत्री मन्त्र	ॐ कात्यायन्यै विद्महे, कन्या कुमारि च धीमहि, तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।।	Om Katyayanayai Vidhmahe Kanya Kumari cha Dheemahee Tanno Durgaya Prachodayat.
लक्ष्मी गायत्री मन्त्र	ॐ महालाक्ष्मये विद्महे, विष्णु पत्नी च धीमहि तन्नो लक्ष्मी:प्रचोदयात।	Om Mahalakshmaye Vidhmahe Vishnu Pathniyai cha Dheemahee Tanno Lakshmi Prachodayat.
लक्ष्मी गायत्री मन्त्र	ॐ महालाक्ष्मये विद्महे, विष्णु प्रियाय धीमहि तन्नो लक्ष्मी:प्रचोदयात।	Om Mahalakshmaye Vidhmahe Vishnu Priyay Dheemahee Tanno Lakshmi Prachodayat.
सरस्वती गायत्री मन्त्र	ॐ वाग देव्यै विद्महे, काम राज्या धीमहि तन्नो सरस्वती :प्रचोदयात।	Om Vagdevyai Vidhmahe Kam Rajya Dheemahee Tanno Saraswati Prachodayat.
सीता गायत्री मन्त्र	ॐ जनक नंदिन्ये विद्महे, भुमिजाय धीमहि तन्नो सीता :प्रचोदयात।	Om Janaka Nandinye Vidhmahe Bhumijaya Dheemahee Tanno Sita Prachodayat .
राधा गायत्री मन्त्र	ॐ वृष भानु: जायै विद्महे, क्रिश्नप्रियाय धीमहि तन्नो राधा :प्रचोदयात।	Om Vrishabhanu jayai Vidhmahe Krishna priyaya Dheemahee Tanno Radha Prachodayat.
तुलसी गायत्री मन्त्र	ॐ श्री तुल्स्ये विद्महे, विश्नुप्रियाय धीमहि तन्नो वृंदा: प्रचोदयात।	Om Tulasyai Vidhmahe Vishnu priyayay Dheemahee Tanno Brindah Prachodayat.
पृथ्वी गायत्री मन्त्र	ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्र मूरतयै धीमहि तन्नो पृथ्वी :प्रचोदयात।	Om Prithivi devyai Vidhmahe Sahasra murthaye Dheemahee Tanno Prithvi Prachodayat.
जल गायत्री मन्त्र	ॐ जलबिंबाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि । तन्नो अम्बु: प्रचोदयात्॥	Om Jalabimbay Vidmahe Neelapurushay dheemahee tanno Ambu prachodyat.

आकाश गायत्री मन्त्र	ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि । तन्नो गगनं प्रचोदयात्॥	Om Aakashay Cha Vidmahe Nabhodevaya dheemahee tanno Gaganm prachodyat.
वायु गायत्री मन्त्र	ॐ पवन पुरुषाय विद्महे सहस्त्रमूर्त्ये च धीमहि । तन्नो वायु: प्रचोदयात्॥	Om Pavan Purushay Vidmahe Sahastramoortye Cha dheemahee tanno Vayuh prachodyat.
हंस गायत्री मन्त्र	ॐ परम्हन्साय विद्महे, महा हंसाय धीमहि तन्नो हंस: प्रचोदयात।	Om Param Hansay Vidmahe maha hanasay dheemahee tanno hansh prachodyat.
अन्नपूर्णा गायत्री मन्त्र	ॐ भगवत्तै विद्महे, महेश्वरयै धीमहि । तन्नो अन्नपूर्णा: प्रचोदयात।	Om bhagvattay vidmahe Maheshwariya dheemahee tanno annapurna prachodyat.
महालाकी गायत्री मन्त्र	ॐ कालिकयै विद्महे स्मशान वशिनयै धीमहि । तन्नो अघोर: प्रचोदयात।	Om kalikaye vidmahe smashan vashiney dheemahee tanno A ghora prachodyat.
रूद्र गायत्री मन्त्र	ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्र प्रचोदयात।	Om Tatpurushaya Vidhmahe Mahadevaya Dheemahee Tanno Rudra Prachodayat.
शिव गायत्री मन्त्र	ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमुर्तय धीमहि । तन्नो शिव: प्रचोदयात्॥	Om Mahadevay Vidhmahe Rudramurty Dheemahee Tanno Shiv Prachodayat
शिव गायत्री मन्त्र	ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे सहस्राक्षाय महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्र प्रचोदयात्॥	Om Panchchavaktraya Vidhmahe Sahastrakshau Mahadevaya Dheemahee Tanno Rudra Prachodayat.
गंगा गायत्री मन्त्र	ॐ भागीरथ्यै विद्महे विष्णुपद्यै च धीमहि । तन्नो गंगा प्रचोदयात्॥	Om Bhagirathyai Vidhmahe Vishnupadyai Dheemahee Tanno Ganga Prachodayat.
शंख गायत्री मन्त्र	ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नो शंखः प्रचोदयात्॥	Om Pachchajanyay Vidhmahe Pavamanay Dheemahee Tanno Shankh Prachodayat
नारायण गायत्री मन्त्र	ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णु: प्रचोदयात।	Om Narayanaya Vidhmahe Vasudevaya Dheemahee Tanno Vishnu Prachodayat.
ब्रहमा गायत्री मन्त्र	ॐ चतुर मुखाय विद्महे, हंसारुढाय धीमहि । तन्नो ब्रहमा प्रचोदयात्॥	Om Chathur mukhaya Vidmahe, Hanasaroodaya Dheemahee Tanno Brahma Prachodayat.
ब्रहमा गायत्री मन्त्र	ॐ वेदात्मनाय विद्महे, हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रहमा प्रचोदयात्॥	Om Vedathmanaya vidmahe, Hiranya Garbhaya Dheemahi, Tanno Brahma Prachodayat
राम गायत्री मन्त्र	ॐ दाशरथय विद्महे, सीता वल्लभाय धी महि॥ तन्नो रामः प्रचोदयात्॥	Om Dasarathaya Vidhmahe Sita Vallabhaya Dheemahee Tanno Rama Prachodayat.
लक्ष्मण गायत्री मन्त्र	ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिलेशाय धीमहि । तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्॥	Om Dasarathaya Vidhmahe Urmileshay Dheemahee Tanno Lakshman Prachodayat.
कृष्णा गायत्री मन्त्र	ॐ दामोदराय विद्महे, रुकमणी वल्लभाय धी महि॥ तन्नो कृष्ण प्रचोदयात्॥	Om Damodaraya Vidhmahe Rukmani Vallabhay Dheemahee, Tanno Krishna Prachodayat.

कृष्णा गायत्री मन्त्र	ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्॥	Om Devakinandanay Vidhmahe Vashudevay Dheemahee Tanno Krishna Prachodayat
कृष्णा गायत्री मन्त्र	ॐ गोविंदाय विद्महे, गोपी वल्लभाय धी महि॥ तन्नो कृष्ण प्रचोदयात्॥	Om Govindaya Vidhmahe Gopi Vallabhaya Dheemahee Tanno Krishna Prachodayat
गोपाल गायत्री मन्त्र	ॐ गोपीप्रियाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो गोपः प्रचोदयात्॥	Om Gopipriyay Vidhmahe Vashudevay Dheemahee Tanno Gop Prachodayat
परशुराम गायत्री मन्त्र	ॐ जामदग्न्याय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो विप्रः प्रचोदयात्॥	Om Jamadagnyay Vidhmahe Mahadevay Dheemahee Tanno Vipra Prachodayat
वेंकटेश्वर गायत्री मन्त्र	ॐ निरंजनाय विद्महे, निरापस्या धीमहि॥ तन्नो श्रीनिवास प्रचोदयात्॥	Om Nirnajanaya Vidmahe Nirapasaya Dheemahee Tanno Srinivasa Prachodayat.
नरसिंह गायत्री मन्त्र	ॐ नरसिंहाय विद्महे, वज्रनक्षाय धीमहि॥ तन्नो नरसिंह प्रचोदयात्॥	Om Narasimhaya Vidmahe Vajra Nakhaya Dheemahee Tanno Narasimha Prachodayat.
हयग्रीव गायत्री मन्त्र	ॐ वनैस्वराय विद्महे, हयग्रिवाय धीमहि॥ तन्नो हयग्रिव प्रचोदयात्॥	Om Vanaisvaraya Vidhmahe Hayagrivaya Dheemahee Tanno Hayagriva Pracodayat.
सुदर्शन गायत्री मन्त्र	ॐ सुदर्शनाय विद्महे, महाज्वलाय धीमहि॥ तन्नो चक्र प्रचोदयात्॥	Om Sudharshanaya Vidmahe Maha Jwalaya Dheemahee Tanno Chakra Prachodayat.
गणेश गायत्री मन्त्र	ॐ लम्बोदराय विद्महे, महोदराय धीमहि॥ तन्नो दंती प्रचोदयात्॥	Om Lambodaraya vidmahe Mahodaraya deemahee Tanno danti Prachodayat.
गणेश गायत्री मन्त्र	ॐ एकदंताय विद्महे, वक्रतुंडाय धीमहि॥ तन्नो दंती प्रचोदयात्॥	Om Ekadanthaya vidmahe Vakrathundaya dheemahee Tanno danthi Prachodayat.
गणेश गायत्री मन्त्र	ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ति प्रचोदयात्॥	Om Thatpurashaya vidhmahe Vakrathundaya dheemahee Tanno danti Prachodayat.
इन्द्र गायत्री मन्त्र	ॐ सहस्त्र नेत्रायै विद्महे, वज्र हस्ताय धीमहि, तन्नो इन्द्र प्रचोदयात्॥	Om Sahasra nethraye Vidhmahe, Vajra hasthaya Dheemahee Tanno Indra Prachodayat.
हनुमान गायत्री मन्त्र	ॐ अंजनी जाय विद्महे, महाबलाय धीमहि, तन्नो हनुमान प्रचोदयात्॥	Om Aanjanee jaya Vidhmahe Maha balaya Dheemahee Tanno Hanuman Prachodayat.
हनुमान गायत्री मन्त्र	ॐ अंजनी जाय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि, तन्नो हनुमान प्रचोदयात्॥	Om Aanjanee jaya Vidhmahe Vayu putraya Dheemahee Tanno Hanuman Prachodayat .
यम गायत्री मन्त्र	ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे, महा कालाय धीमहि, तन्नो यम प्रचोदयात्॥	Om Surya puthraya Vidhmahe Maha Kalaya Dheemahee Tanno Yama Prachodayat.

वरुण गायत्री मन्त्र	ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि । तन्नो वरुण: प्रचोदयात् ।।	Om Jala bimbaya Vidhmahe Nila Purushaya Dheemahee Tanno Varuna Prachodayat.
अग्नि गायत्री मन्त्र	ॐ महाज्वलाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि । तन्नो अग्नि: प्रचोदयात् ।।	Om Maha jwalaya Vidhmahe Agni devaya Dheemahee Tanno Agni Prachodayat.
वैश्वानर गायत्री मन्त्र	ॐ पावकाय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि । तन्नो वैश्वानरः प्रचोदयात् ॥	Om Pavakay Vidhmahe Sapta Jihvay Dheemahee TannoVaiswanar Prachodayat .
गरुड़ गायत्री मन्त्र	ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥	Om Thathpurushaya Vidhmahe, Suvarna Pakshaya Dheemahee Tanno Garuda Prachodayat
नंदी गायत्री मन्त्र	ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥	Om Thathpurushaya Vidhmahe, Vakratundaya Dheemahee Tanno Nandi Prachodayat .
शिरडी साई गायत्री मन्त्र	ॐ शिरडी वासाय विद्महे सच्चिदानंदाय धीमहि, तन्नो साईं प्रचोदयात्।।	Om Shirdi vasaya Vidhmahe Sachithanandaya Dheemahee Tanno Sai Prachodayat .
मन्मथ गायत्री मन्त्र	ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवनाय धीमहि । तन्नः कामः प्रचोदयात् ॥	Om Kama devaya Vidhmahe Pushpa vanaya Dheemahee Tanno Kama Prachodayat.
काम गायत्री मन्त्र	ॐ मन्मथेशाय विद्महे काम देवाय धीमहि । तन्नो अनंग प्रचोदयात् ॥	Om Manmatheshay Vidhmahe Kamdevay Dheemahee Tanno Ananga Prachodayat.
यम गायत्री मन्त्र	ॐ सुर्यपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि । तन्नो यम: प्रचोदयात् ॥	Om Suryaputray Vidhmahe Mahakalay Dheemahee Tanno Yam Prachodayat.

नवग्रह की शांति के लिये गायत्री मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विधि : प्रतिदिन प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर उक्त मन्त्र की एक माला जप करें। विद्वानो के मतानुशार नवग्रह गायत्री मन्त्र को 108 बार पढ़ने से साधक के समस्त रोग-शोक-भय दूर होते हैं।

सूर्य गायत्री मन्त्र



ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात् ॥
Om Bhaskaraya Vidhmahe
Diva karaya Dheemahee
Tanno Surya Prachodayat.

ॐ अश्वध्वजाय विद्महे पाशस्ताय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात् ॥
Om Aswadwajaya Vidhmahe
Pasa Hasthaya Dheemahee
Tanno Surya Prachodayat .

चन्द्र गायत्री मन्त्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमहि ।
तन्नोः चन्द्रः प्रचोदयात् ॥
Om Kshira putraya Vidhmahe
Amritathvaya Dheemahee
Tanno Chandra Prachodayat.



ॐ पद्मध्वजाय विद्महे हेम रूपाय धीमहि ।
तन्नोः सोम प्रचोदयात् ॥
Om Padmadwajaya Vidhmahe
Hema roopaya Dheemahee
Tanno Chandra Prachodayat .

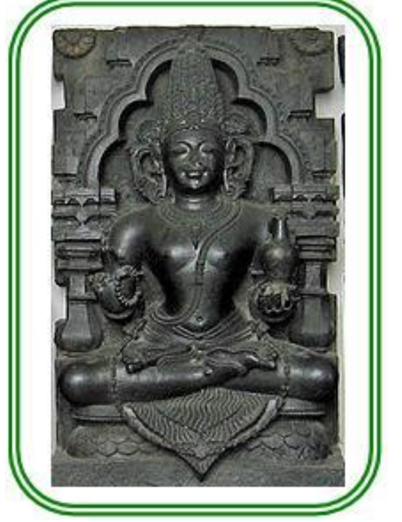
मंगल गायत्री मन्त्र



ॐ वीरध्वजाय विद्महे विघ्नहस्ताय धीमहि ।
तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥
Om veeradhwajaaya vidmahae
vighna hastaaya dheemahi
tanno bhouma prachodayaat

ॐ अंगारकाय विद्महे भूमिपालाय धीमहि । तन्नः कुजः प्रचोदयात् ॥
Om Angaarakaay vidmahae bhoomipaalaay dheemahi
tanno kuja prachodayaat

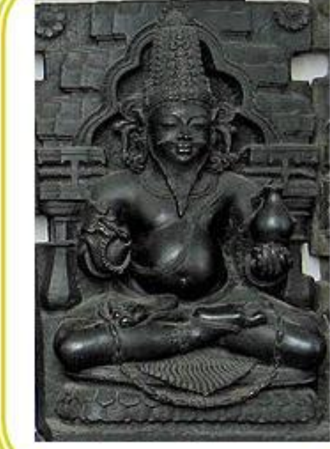
बुध गायत्री मन्त्र



ॐ गजध्वजाय विद्महे सुखहस्ताय धीमहि ।
तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥
Om gajadhwajaaya vidmahae
sukha hastaaya dheemahi
tanno budha: prachodayaat

ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि ।
तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥
Om Chandraputraaya vidmahae
rohini priyaay dheemahi
tanno budha: prachodayaat

गुरु (बृहस्पति) गायत्री मन्त्र



ॐ वृषभध्वजाय विद्महे क्रुनिहस्ताय धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥
Om vrishabadhwajaaya vidmahae
kruni hastaaya dheemahi
tanno guru: prachodayaat

ॐ सुराचार्याय विद्महे सुरश्रेष्ठाय धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥
Om Suraachaaryaay vidmahae
shurashresthaay dheemahi
tanno guru: prachodayaat

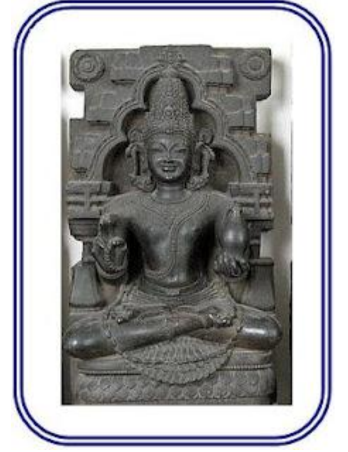
शुक्र गायत्री मन्त्र



ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात् ॥
Om aswadhwajaaya vidmahae
dhanur hastaaya dheemahi
tanno shukra prachodayaat

ॐ रजदाभाय विद्महे भृगुसुताय धीमहि ।
तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥
Om Rajadaabhaay vidmahae
Bhrugusutaay dheemahi
tanno shukra prachodayaat

शनि गायत्री मन्त्र



ॐ काकध्वजाय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि ।
तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥
Om kaakadhwajaaya vidmahae
khadga hastaaya dheemahi
tanno mandah: prachodayaat

ॐ शनैश्चराय विद्महे सूर्यपुत्राय धीमहि ।
तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥
Om shanaishcharay vidmahae
suryaputraay dheemahi
tanno mandah: prachodayaat

राहु गायत्री मन्त्र



ॐ नाकध्वजाय विद्महे पद्महस्ताय धीमहि ।
तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

Om naakadhwajaaya vidmahae
padma hastaaya dheemahi
tanno raahu: prachodayaat



केतु गायत्री मन्त्र

ॐ अश्वध्वजाय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥
Om aswadhwajaaya vidmahae
soola hastaaya dheemahi
tanno ketu: prachodayaat

उपरोक्त मंत्रो का ग्रहो के अनुशार जाप करने से ग्रहो की प्रतिकूलता दूर होकर अनुकूलता प्राप्त होती हैं।

गुरु पुष्यामृत योग 6 जून 2019

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियो का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुए अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यो में सफलता हेतु इस शुभ महूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत महूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जेसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुड़े कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होति है।

रात 10:17 से अगले दिन प्रात:05:14 तक

- गुरुपुष्यामृत योग बहोत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- गुरुवार के दिन शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से जुडे कार्यो के लिये अति शुभ माना गया है।
- जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यो के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते है।
- यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- मां महालक्ष्मी का आहवान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रो में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रो में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यो में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

देवी गायत्री का सरल पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अत्यंत सरल और अधिक प्रभावी दैनिक गायत्री उपासना भक्त के लिए आसानी की जा सकती हैं। मानसिक रूप से माँ गायत्री के भक्त किसी भी परिस्थिति में किसी भी समय पर आराधना कर सकते हैं।

गायत्री उपासना जीवन के हर स्थिति में भक्त के लिए निश्चित रूप से फायदेमंद होती हैं। लेकिन यहाँ सबसे महत्वपूर्ण हैं, पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से, आध्यात्मिकता से नियमित रूप से देवी आराधना करने से अधिक लाभप्रद होती हैं।

भक्त किसी भी आध्यात्मिक साधना या कार्य करते हैं, यदि वहँ पूर्ण एकाग्रता और नियमित समय से संपादित किया जाये तो वहँ अधिक प्रभावशाली होता हैं।



देवी गायत्री की दैनिक पूजा के साथ जुड़े अनुष्ठान को करने के लिए वांछित भक्त की आध्यात्मिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिती में आश्चर्यजनक रुप से विशेष बदलाव देखने को मिलते हैं। यहँ अत्यंत सरल विधि हैं जो हर एक के लिऐ उपयोगी हो सकती हैं। इस पूजा विधान या अनुष्ठान को मानव स्वयं की सच्ची आध्यात्मिकता की गहराई को समझ सके इस उद्देश्य से दिगई हैं।

दैनिक अनुष्ठान से जुडे महत्वपूर्ण और लाभप्रद पद्धति दर्शायी गयी हैं।

साधक अपनी आवश्यकता के अनुसार साकार और निराकर दोनो रुप में गायत्री की पूजा पद्धिती का चयन अपनी इच्छा पूर्ति के लिये कर सकते हैं।

साधक को अपने अनुष्ठा को संपन्न करने हेतु एक उपयुक्त जगह का चयन करना चाहिए, जहाँ वहँ किसी विघ्न-बाधा या विलंब के एक निर्धारित समय पर उपासना कर सकता हों। आम तौर पर एक अलग कमरे या घर में एक कमरे के एक शांत कोने में इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त है. या, भक्त दैनिक साधना हेतु ऐसे स्थान का चयन कर सकते हैं, जिस स्थान पर अधिक शांति, एकांत और पवित्रता हो, जैसे किसी मंदिर, नदी के किनारे, खुले मैदान का चयन भी संभवत कर सकते हैं. भक्तको अपने पूजा के स्थान को अवश्य साफ रखा जाना चाहिए।

साकार उपासना को करने हेतु भक्त को गायत्री माता की तस्वीर या मूर्ति को एक छोटी सी लकड़ी की चौकी पर स्थापित करना चाहिए और नियमित रुप से प्रतिदिन धूप, दीप (शुद्ध घी का), फूल आदि से पूजन करना चाहिए। निराकार उपासना के किसी भी तस्वीर या मूर्ति नहीं की आवश्यकता हैं, यहाँ मूर्ति के रुप में, उगते सूरज या कुछ सूक्ष्म अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित कर साधना की जाती हैं।

प्रातःकाल नियमित उपासना लिए सबसे अच्छा समय हैं। दैनिक अनुष्ठान को प्रतिदिन स्नानादी से निवृत्त या स्वच्छ हो ही शुरु करनी चाहिए। बीमारी या मौसम की खराबी जैसे मामलों में शरीर की सफाई के लिए हाथ पैर धोकर या गिले कपडे से शरीर की पौछाई कर साधना संपन्न कि जा सकती हैं।

पंचकर्म के रूप में नीचे वर्णित संध्या जप और ध्यान विधि से पहले अंतरमन से दैनिक उपासना करनी

चाहिए। यात्रा और इसी तरह अपरिहार्य परिस्थितियों में विशेष अवसर आदि पर अनुष्ठान को रोका जा सकता हैं एसी स्थिती में दैनिक उपासना जप और ध्यान के द्वारा भी संपन्न किया जा सकता हैं।

दैनिक उपासना के साथ पंच कर्म संध्या:

एक श्वेत ऊनी आसन या कुश के आसन पर आरामदायक मुद्रा में बैठ कर। (अर्थात आरामदायक स्थिति में बैठ, अपने पास ताँबें का कलश या गिलास में पानी भरकर रखलें। देवी के दाहिनी और एक शुद्ध घी का दीपक और अगरबत्ती जलाऐ। मंत्र जप के लिए तुलसी की माला, क्रिस्टल या चंदन, मोती की माला का प्रयोग करें।

उपासना प्रक्रिया के चार भाग

(1) पंच कर्म की शुद्धि;

(2) देव आह्वान

(3) जप और ध्यान

(4) सूर्यार्घ्यदान

जप और ध्यान को छोड़कर प्रत्येक पूजा विधि को 2 से 5 मिनट में संपन्न किया जा सकता हैं। जप और ध्यान को कम से कम 15 मिनट के लिए किया जाना चाहिए, साधक अपनी सुविधा के अनुसार मंत्र जप और ध्यान की लंबी अवधि भी चुन सकते हैं।

पंचकर्म संध्या:

निम्नलिखित पांच पूजा पद्धति शरीर और मन को पवित्र बनाने के लिए और प्राण के प्रवाह के सामंजस्य सक्रियण के लिए होती हैं।

पवित्रीकरण:

बाएँ हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढँक लें और पवित्रीकरण मंत्रोच्चारण के बाद जल को सिर तथा शरीर पर छिड़क लें।

मंत्र:

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

मंत्र उच्चारण के समय ऐसा भाव रखें की इस मंत्र के उच्चारण से अभिमन्त्रित जल आपके शरीर की बाह्य और आंतरिक शुद्धि कर रहा हैं।

आचमन:

वाणी, मन व अंतःकरण की शुद्धि के लिए चम्मच से तीन बार जल का आचमन करें। हर मंत्र के उच्चारण की समाप्ति के साथ एक आचमन किया जाना चाहिए।

मंत्र:

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।

शिखा स्पर्श एवं वंदन:

शिखा के स्थान को स्पर्श करते हुए ऐसी भावना रखें कि गायत्री के इस प्रतीक के माध्यम से सदा सद् विचार ही यहाँ स्थापित रहेंगे। निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र:

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

प्राणायाम:

श्वास को धीमी गति से भितर खींचकर रोकना व बाहर निकालना यहँ प्राणायाम का एक हिस्सा हैं। श्वास भितर खींचने के साथ भावना करें कि प्राण शक्ति, श्रेष्ठता श्वास के द्वारा अंदर खींची आ रही है, छोड़ते समय यह भावना करें कि आपके सभी दुर्गुण, दुष्प्रवृत्तियाँ, बुरे विचार प्रश्वास के माध्यम से उसके साथ ही बाहर निकल रहे हैं। प्राणायाम इस मंत्र के उच्चारण के साथ करें।

मंत्र:

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः,
ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ ।

न्यास:

न्यास का मुख्य प्रयोजन हैं, की वहँ शरीर के सभी महत्त्वपूर्ण अंगों में पवित्रता का समावेश हो तथा अंतःकरण की चेतना जाग्रत हो जाये ताकि देव-पूजन जैसा श्रेष्ठ कृत्य किया जा सके। बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को उनमें भिगोकर बताए गए स्थान को मंत्रोच्चार के साथ स्पर्श करें।

मंत्र:

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु । (मुख को स्पर्श करें)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिकाके दोनों छिद्रों को स्पर्श करें)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । (दोनों नेत्रों को स्पर्श करें)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । (दोनों कानों को स्पर्श करें)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु । (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)
ॐ ऊर्वोमे ओजोऽस्तु । (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । (समस्त शरीर का स्पर्श करें)

आत्मशोधन की ब्रह्म संध्या के उपरोक्त पाँचों क्रियाओं का भाव यह है कि साधक में पवित्रता एवं प्रखरता की वृद्धि हो तथा मलिनता-अवांछनीय गुणो की निवृत्ति हो । पवित्र-प्रखर व्यक्ति ही भगवान की कृपा प्राप्ति के अधिकारी होते हैं ।

देवपूजन:

देव पूजन का पहला कदम पृथ्वी पूजन हैं। हम पृथ्वी माता की गोद में पैदा हुए और उसी के ऊपर पलें-बढे हैं। हमारे जीवन का उनकी सहायता या आश्रय के बिना कोई अस्तित्व हैं। यह हमारी मातृभूमि हमारे लिये देवता की तरह हैं।

इस लिए पृथ्वी, मातृभूमि की उपासना इष्ट या देव उपासना से पहले की जाती हैं। पृथ्वी का आभार प्रकट करने के रूप में की जाती हैं। निम्नलिखित मंत्र का जप करके एक चम्मच पानी को पृथ्वी को अर्पण करें और फूल आदि से विधि-वत पूजन करें।

पूजन हमें सहनशीलता, उदारता, और पृथ्वी की तरह धैर्य के साथ संपन्न करना चाहिए। अपने दोनों हाथ को नमस्कार मुद्रा में करके निम्नलिखित मंत्र जपे

मंत्र:

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

गायत्री का आहवान:

आदि शक्ति गायत्री खाआ आह्वान तो आंतरिक (अंतरमन की गहराई से) से किया जाता हैं। गायत्री की दिव्य शक्ति हमारे भीतर हमारी अंतरचेतना में जाग्रत हो सके इस लिए निम्न मंत्र के माध्यम से प्रार्थना हैं।

ॐ आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः। ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥
ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि।

गुरु पूजन:

गुरु परमात्मा की दिव्य चेतना का अंश होते है, जो साधक को जीवन के विभिन्न क्षेत्र में मार्गदर्शन करते हैं। सद्‌गुरु के रूप में अपने गुरुदेव का अभिवंदन करते हुए उपासना की सफलता हेतु गुरु आवाहन इस मंत्रोच्चारण के साथ करें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अखण्डमंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
ॐ श्रीगुरवे नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

जप और ध्यान:

जप का सामान्य अर्थ हैं किसी मन्त्र या शब्दों को चक्रीय गति से सतत मनन करना या चिंतन करना

होता हैं। निश्चित मन्त्रों का लय बद्ध रुप से उच्चारण करना जप कहा जाता हैं। जप के कई प्रकार प्राचीन शास्त्रों में वर्णित हैं।

लेकिन दैनिक उपासना पद्धति में उपांशु जप अधिक उपयुक्त हैं। क्योकि उपांशु जप में जप करते समय मन्त्र को स्वयं साधक के अतिरिक्त अन्य किसी के कानों तक सुनाई नहीं देते इस लिए जप उपांशु दैनिक उपासना लिए सबसे उपयुक्त हैं।

उपांशु जप दूसरों को परेशान करने से बचाता है और यह साधक की मानसिक एकाग्रताको बढाता हैं। दैनिक उपासना दौरान कम से कम तीन माला (324 बार) गायत्री मंत्र के जप करना चाहिए।

यदि संभव हो तो जप की संख्या को बढ़ा सकते है, आमतौर पर अनुभवी साधक ग्यारह माला तक जप करते हैं। जप की संख्या और समय में नियमितता (निश्चित संख्या और गति) हर दिन समान रखना चाहिए।

जप एक प्रकार से सफाई और तेज़ करने की एक प्रक्रिया हैं। मंत्र के जप के द्वारा चक्रीय दबाव और संघर्षण से प्रेरित हो कर मन की सफाई और आंतरिक प्ररणा तेज हो जाती हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

इस प्रकार मंत्र का उच्चारण करते हुए माला की जाय एवं भावना की जाय कि मंत्र जप से हम निरन्तर पवित्र हो रहे हैं। दुर्बुद्धि की जगह सद्बुद्धि का संचार हो रहा हैं।

मन को ध्यान में केन्द्रित करना होता हैं। साकार ध्यान में गायत्री माता के दिव्य रुप की कल्पना कर के उनकी छाया में बैठ कर उनका स्नेह भरा प्यार अनवरत रूप से प्राप्त होने की भावना करनी चाहिए। निराकार ध्यान में गायत्री की सविता की प्रभातकालीन स्वर्णिम किरणों को शरीर पर बरसने व शरीर में श्रद्धा-प्रज्ञा-निष्ठा रूपी अनुदान उतरने की भावना करनी चाहिए। जप और ध्यान के समन्वय से ही चित्त एकाग्र होता है और आत्मसत्ता पर उस क्रिया का महत्त्वपूर्ण प्रभाव भी पड़ता है ।

सूर्याघ्र्यदान:

विसर्जन जप समाप्ति के पश्चात पूजा वेदी पर रखे ताँबें के कलश का जल सूर्य की दिशा में अर्ध्य के रूप में निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ाना चाहिए।

ॐ सूर्यदेव! सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः। आदित्याय नमः। भास्कराय नमः॥

जल चढाते समय यहँ भावना करें कि जल आत्म सत्ता का प्रतीक है एवं सूर्य विराट् ब्रह्म का तथा हमारी सत्ता सम्पदा समष्टि के लिए समर्पित या विसर्जित हो रही हैं।

उक्त विधि-विधान संपन्न होने के पश्चयात पूजा स्थल पर देवताओं को करबद्ध नतमस्तक होकर नमस्कार करके सभी वस्तुओं को एकत्र करके यथास्थान रख देनी चाहिए। साधक सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व से सूर्यास्त के 1 घंटे बाद तक कभी भी गायत्री उपासना कर सकते हैं।

गायत्री स्तोत्र व माहात्म्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

भावार्थ: प्राणस्वरूप, दु:खनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप अशा परमात्म्याला आम्ही अंतःकरणात धारण करतो. त्या परमात्म्या कडून आमची बुद्धी सन्मार्गी लागो । ॐ गायत्रीदेव्यै नमः॥ ॐ नमो श्रीगजवदना॥ गणराया गौरीनंदना । विन्घेशा भवभयहरणा । नमन माझे साष्टांगीं ॥१॥ नंतर नमिली श्रीसरस्वती । जगन्माता भगवती । ब्रह्माकुमारी वीणावती । विद्यादात्री विश्र्वाची ॥२॥ नमन तैसें गुरुवर्या । सुखनिधान सद्गुरुराया । स्मरुनी त्या पवित्र पायां । चित्तशुद्धि जाहली ॥३॥ थोर ऋषिमुनी संतजन । बुधगण आणि सज्जन । करुनी तयांसी नमन । ग्रंथरचना आरंभिली ॥४॥ एकदां घडली ऐसी घटना । नारद भेटले सनकमुनींना । वंदन भावें करुनि तयांना । म्हणाले विनंती माझी ऐकावी ॥५॥ जपासाठीं असती मंत्र हजार । त्यांत अत्यंत प्रभावी थोर । ज्याचें सामर्थ्य अपरंपार । ऐसा मंत्र कोणता ॥६॥ तेव्हा म्हणाले सनकमुनी । नारदा तुझा प्रश्र्न ऐकोनी। समाधान झालें माझ्या मनीं । लोकोपयोगी प्रश्र्न हा ॥७॥ आतां ऐक लक्ष देऊन । त्वरित फलदायी मंत्रज्ञान । सफल होतील हेतु पूर्ण । ऐसा एकच मंत्र गायत्री ॥८॥ गायत्री ही मंत्रदेवता । सर्वश्रेष्ठा तिची योग्यता । तिंचे एकेक अक्षर जपतां । आत्मतेज प्रगटतें ॥९॥ गायत्रीमंत्राचें प्रत्येक अक्षर । प्रभाव पाडी सर्व गात्रांवार । देहाच्या एकेका अवयवावर । प्रत्यक्ष परिणाम घडतसे ॥१०॥ गायत्रीची नांवें अनेक असती । त्यांत असते दिव्य शक्ति । एकेका नामोच्चारानें ती । शरिरीं प्रगट होतसे ॥११॥ करीत असतां नामोच्चार । मनीं आणावा तिचा आकार । भक्तिपुर्वक करुनी नमस्कार । नामजप करावा तो ॥१२॥ ॐ काररुपा ब्रह्मविद्या ब्रह्मादेवता । सवित्री सरस्वती वेदमाता । अमृतेश्र्वरी रुद्राणी विक्रमदेवता । ॐ गायत्रीं नमो नमः ॥१३॥ वैष्णवी वेदगर्भा विद्यादायिका । शारदा विश्र्वभोक्त्री संध्यात्मिका । सुर्या , चंद्रा, ब्रह्माशीर्षका । ॐ गायत्रीं नमो नमः ॥१४॥ नारसिंही अघनाशिनी इंद्राणी । अंबिका पद्माक्षी रुद्ररुपिणी । सांख्यायनी सुरप्रिया ब्रह्माणी । ॐ गायत्रीं नमो नमः ॥१५॥ गायत्री तूं ब्रह्मांडधारिणी । गायत्री तूं ब्रह्मावादिनी । गायत्री तूं विश्र्वव्यापिनी । ॐ गायत्रीं नमो नमः ॥१६॥ ॐ भू: ऋग्वेदपुरुषं । ॐ भुव: यजुर्वेदपुरुषं । ॐ स्व: सामवेदपुरुषं । ॐ मह: अथर्वणवेदपुरुषं तपर्यामि ॥१७॥ ॐ जन: इतिहासपुराणपुरुषं । ॐ तप: सर्वांगपुरुषं । ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं । त्वं ब्रह्माशापाद्विमुक्ता भव ॥१८॥ ॐ भू: भुर्लोकपुरुषं । ॐ भुव: भुवलोकपुरुषं । ॐ स्व: स्वर्लोकपुरुषं । त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ॥१९॥ ॐ भू एकपदा गायत्रीं । ॐ भुव: द्विपदां गायत्रीं । ॐ स्व: त्रिपदां गायित्रीं । ॐ भूभुर्व स्व: चतुष्पदां गायित्रीं ॥२०॥ ॐ उषसीं तर्पयामि । ॐ गायत्रीं तर्पयामि । ॐ सावित्रीं तर्पयामि । तर्पयामि ॐ सरस्वतीं ॥२१॥ ॐ वेदमातरं तर्पयामि । ॐ पृथ्वीं तर्पयामि । ॐ अजां तर्पयामिअ । तर्पयामि ॐ कौशिकीं ॥२२॥ ॐ सांकृतिं तर्पयामि । ॐ सर्वजिनां तर्पयामि । ॐ गायत्रीत्रय तर्पयामि । त्व विश्र्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥२३॥ गायत्रीदेवी प्रात:काळीं । ऋग्वेदरुपा बालिका झाली ब्रह्मादेवाची शक्ति एकवटली । अपूर्व तेजें प्रकाशे ॥२४॥ हातीं कलश अक्षमाला । स्त्रकूस्त्रुवा धारण केला । मुखतेज लाजवी रविचंद्राला । हंसारुढ असते ती ॥२५॥ कंठी रन्तालंकार झगमगती । माणिबिंबांची शोभा अपूर्व ती । जी देतसे धनसंपत्ती । ध्यान तिचें करावें ॥२६॥ सावित्री नांव मध्यान्हकाळीं । तीच रुद्राणी शक्ति बनली । त्रिनेत्रा नवयौवना दिसली । व्याघ्रांबर धारिणी ॥२७॥ हातीं खट्वांग, त्रिशुळ,रुद्राक्षमाला । अभय मुद्रा मुगुटी चंद्रा शोभला । वृषभवाहन गौरवर्ण भला । यजुर्वेदस्वरुपा जी ॥२८॥ आयुष्य आणि ऐश्र्वर्यवृद्धी । देतसे सकल महासिद्धी । वाढवी सद्भावना सद्बुद्धी । साह्य करी ती

सर्वांसी ॥२९॥ सायंकाळी तीच विष्णुशक्ति । पीतांबरधारी भगवती सरस्वती । श्यामलवर्णी गरुडारुढ ती । रत्नहार कंठीं शोभती ॥३०॥ बाजुबंद, रत्नखचित नुपुर । सुवर्णकंकणें सौभाग्यलंकार । शंख , चक्र, गदा पद्ममय कर । श्रीवृद्धीकारक ती सर्वदा ॥३१॥ ब्राह्मामुहूर्ती उठावें । बाह्माभ्यंतर शुचिर्भुत व्हावें । श्रीगायत्रीचें ध्यान करावें । स्वस्थ एकाग्र चिंत्तानें ॥३२॥ प्रथम करावा करन्यास । नंतर करावा अंगन्यास । मग पुर्ण प्राणायामास । प्रारंभ नीट करावा ॥३३॥ पूरकीं करणें विष्णुस्मरण । कुंभकीं करावें ब्रह्मास्मरण । रेचकीं करावें शिवध्यान । प्राणायन या नांव असे ॥३४॥ गायत्री जप करावा हजारदां । किंवा करावा शंभरदां । कमीतकमी तरी दहादां । महामंत्रजप करावा ॥३५॥ गायत्रीमंत्राचा जे जप करिती । तया चारी पुरुषार्थ साध्य होती । सर्वैश्र्वर्य कीर्ती संपत्ती । आणि सिद्धि लाभती ॥३६॥ ज्योतिर्मय दिव्य रूपिणी । मंदमतीसी करिते महाज्ञानी । बल,यश,आयुरारोग्य देऊनी । पराक्रम जगीं गाजवी ॥३७॥ गायत्री मंत्रातील महाशक्ती । व्यक्त होते अव्यक्तीं । अपूर्व लाभते मन:शांति । पुर्ण समाधानी होतेसे ॥३८॥ म्हणुन हें देवर्षी नारदा । गायत्री उपासना करावी सदा । मिळेल आत्मज्ञानसंपदा । सत्य सत्य वाचा ही ॥३९॥ गायत्रीहृदय गायत्रीतर्पण । गायत्रीकवच गायत्रीध्यान । सर्व पूजाविधी विसर्जन । नारदासी उपदेशिलें ॥४०॥ मग नारद संतुष्ट होऊन । सनकमुनींना करुनी वंदन । आपुल्या कार्यासी गेले निघून । जयजयकार करीत गायत्रीचा ॥४१॥ राजकारणी, समाजकारणी । साहित्यिकांनी विद्यार्थ्यांनी । सर्व स्थरातील गृहस्थानीं । गायत्रीमंत्र जपावा ॥४२॥ स्तोत्र-माहात्म्य गायत्रीचें । रुप पालटील आयुष्याचें । महत्व पटेल माझ्या शब्दांचे । अनुभवानेंच सर्वांना ॥४३॥ गायत्रीची यथार्थ स्तुति । तशीच तिची अपूर्व महती । ऐका आतां यापुढतीं । विनती मिलिंदमाधव ॥४४॥ गायत्री असे परम पुनिता । तींता वसतीए शास्त्रें , श्रुति, गीता । सत्वगुणी, चितरुपा,शाश्र्वता । सनातन, नित्य, सत्सुधा ॥४५॥ मंगलकरक जगज्जननी । सुखघाम, स्वघा, गायत्रीभवानी । सावित्री,स्वाहा,अपूर्वकरणी । मंत्र चौवीस अक्षरी ॥४६॥ ह्रीं , श्रीं, क्लीं, मेघा उदंड । जीवनज्योती महाप्रचंड । शांति, क्रांति , जागृति, अखंड । प्रगति, कल्पनाशक्ति ती ॥४७॥ हंसारुढ दिव्य वस्त्रघारी । सूवर्णकांती गगनाविहारी । कमल,कमंडलु,माला करीं । गौर तनु शोभते ॥४८॥ स्मरणें मन प्रसन्न होतें । दु:ख सरतें सुख उपजतें । कल्पतरुसम इच्छित देते । निराकार निर्गुणा ॥४९॥ गायत्री तुझी अद्भुत माया । सुरतरुसम शीतल छाया । भक्तांचे संकट हराया । सदा सिद्ध अससी तूं ॥५०॥ तूं काली लक्ष्मी सरस्वती । वेदमाता ब्रह्माणी पार्वती । तुजसम अन्य नसे त्रिजगतीं । कल्याणकारी देवता ॥५१॥ जयजय त्रिपदा भवभयहारी । ब्रह्मा विष्णु शिव तुझे पुजारी । अपार शक्तिची तुं त्रिरुपधारी । तेजोमय माता तूं ॥५२॥ ब्रह्मांडा , चंद्रसुर्यांना । नक्षत्रासीं , सकल ग्रहांना । तुच देसी गति प्रेरणा । उप्तादक ,पालक , नाशक तूं ॥५३॥ होते तव कृपा जयांवरी । तो जरी असला पापी भारी । तयाच्या पापाराशी दुरी । करिसी तूं क्षणांत ॥५४॥ निर्बुद्ध होई बुद्धिवंत । शक्तिहीन होई बलवंत । रोगी होतो व्याधीमुक्त । दरिद्र दु:ख न राही ॥५५॥ जप करितां गायत्रीचा । लेश न राही गृहक्लेशाचा । चित्तातील चिंताग्नीचा । ऱ्हास होई झडकरी ॥५६॥ अपत्यहीनासी अपत्यप्रात्पी । सुखच्छुसी विपुल संपत्ती । सघवा अखंड सौभाग्यवती । होती गायत्रीकृपेनें ॥५७॥ सत्य व्रतस्थ पतिरहिता । तिजला लाभे विरक्तता । जन्माची होते सार्थकता । मोक्षलाभ होतसे ॥५८॥ विवाहेच्छू कुमारिकानीं । पिठाच्या पांच पणत्या पेटवुनी । बसावें पूर्वेकडे पुढा करुनी । चौवीस दिवस प्रभातीं ॥५९॥ मनकामना पूर्ण होऊनी । मना. सारखें येईल घडुनी । गायत्रीवरी श्रद्धा ठेवुनी । रोज ही पोथी वाचावी ॥६०॥ गायत्रीस्तोत्र हें गोड । माहात्म्यही अतीव गाढ । वाचतां ऐकतां प्रचंड । प्रभाव दिसुनी येतसे ॥६१॥ चौवीस वेळीं करावें वाचन श्रवण । चौवीस वेळां करावें मंत्रपठण । चौवीस जन्मींचें होतें पापक्षालन । महत्व ऐ या पोथीचें ॥६२॥ चौवीस वेळां करितां पारायण । गायत्रीदेवी होईल सुप्रसन्न । बोलवुनी सुवासिनी तीन । एक एक पोथी द्यावी ही ॥६३॥ प्रत्येक चौवीस दिवसांनी । अशाच पुजाव्या तीन सुवासिनी । प्रत्येकीस एक एक पोथी देऊनी । नमस्कार करावा ॥६४॥ देव आहे तसें दैवही

असतें । पूर्वजन्मींचें त्यांत रहस्य असतें । हें न जाणतां मोठे जाणते । निरा शेनें देवभक्ती सोडिती ॥६५॥ काळ तेयां थोडा कठीण । देव न येई लगेच धावून । म्हणुनी देवासी दोष देऊन । श्रद्धा सोडूं नये कधीं ॥६६॥ गायत्रीची अदृश्य शक्ती । प्रारब्धाची अनिष्ट गती । फिरवी तत्काळ सत्य ती । विश्र्वास ऐसा धरावा ॥६७॥ योग्य काळ आल्यावीण । कोणतेंच कार्य न घडे जाण । म्हणुनी हातपाय गाळुन । स्वस्थ कधीम न बैसावें ॥६८॥ स्तोत्र-माहात्म्य हें वाचावें । साधुसंतांचें वचन ध्यानीं घ्यावें । स्वत:च स्वत:ला पारखावें । शुद्ध ज्ञानप्रकाशीं ॥६९॥ आत्माज्ञान नव्हे पोरखेळ । स्वत:ला पारखावें । यावी लागते योग्य वेळ । उगीच होऊनी उतावीळ । देवासी नच निंदावें ॥७०॥ मी तर एक मानव सामान्य । गुरुकृपेनें झालों धन्य धन्य । त्याच्याच प्रेरणेनें सुचलें ज्ञान । पोथीरूपें प्रगटलें तें ॥७१॥ कांहीं दोष गेला असेल राहून । तरी सज्जनांनी करावें थोर मन । क्षमा करावी कृपा करुनी । म्हणे मिलिंदमाधव ॥७२॥ शके अठराशे अठ्याण्णव वर्षीं पौष कृष्णप्रतिपदा दिवशीं । गुरुपुष्यामृत योगासी । पोथी पूर्ण झाली ही ॥७३॥ ॥ ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥शुभं भवतु ॥ ॐ शांति: शांति: शांतिः॥ ॥ ॐ भूर्भूव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भंगो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् ॥

॥ मिलिंद माधवकृत 'गायत्री स्तोत्र-महात्म्य संपूर्ण ॥

विभिन्न देवी के गायत्री मंत्र

दुर्गा गायत्री मन्त्र दुर्गा

ॐ गिरिजाये विद्महे शिवप्रियाय धीमहि ।
तन्नो दुर्गा: प्रचोदयात् ॥

ॐ त्वरिता देव्यै च विद्महे महानित्यायै
धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

महिष मर्द्दिनी गायत्री मन्त्र

ॐ महिषमर्द्दियै च दुर्गायै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

मातंगी गायत्री मन्त्र

ॐ मातंगये मतंग्यै च उच्छिष्ट चाण्डाल्यै
च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

बागला मुखी गायत्री मन्त्र

ॐ बागला मुख्यं च विद्महे स्तंभिन्यै
च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

धूमावती गायत्री मन्त्र

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिन्यै च धीमहि ।
तन्नो धूमा प्रचोदयात् ॥

छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र

ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भैरवी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र

ॐ नारायन्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

त्रिपुर सुंदरी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुरा दैव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै
धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

तारा गायत्री मन्त्र

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि ।
सौस्तन्न: क्लिन्नै प्रचोदयात् ॥

काली गायत्री मन्त्र

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि ।
तन्नो अगोरा प्रचोदयात् ॥

अन्नपूर्णा गायत्र मन्त्र

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि । तन्नो
अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

गौरी गायत्री मन्त्र

ॐ सुभगार्यै च विद्महे काम मालायै धीमहि । तन्नो
गौरी प्रचोदयात् ॥

अघनाशकगायत्रीस्तोत्र

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि । सर्वत्र व्यापिकेऽनन्ते श्रीसंध्ये ते नमोऽस्तु ते ॥
त्वमेव संध्या गायत्री सावित्रि च सरस्वती । ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ता श्वेता सितेतरा ॥
प्रातर्बाला च मध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः । वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सदा ॥
हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी । ऋग्वेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः ॥
यजुर्वेदं पठन्ती च अन्तरिक्षे विराजते । सा सामगापि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि ॥
रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी । त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी ॥
सप्तर्षिप्रीतिजननी माया बहुवरप्रदा । शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेदसमुद्भवा ॥
आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते । वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी ॥
गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी । नीलगंगा तथा संध्या सर्वदा भोगमोक्षदा ॥
भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि ॥ त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी ॥
भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री शोकधारिणी । भुवो लोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः ॥
महर्लोके महासिद्धिर्जनलोके जनेत्यपि । तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक् ॥
कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा । रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धांगीनिवासिनी ॥
अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे । साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपिणी ॥
ततः परापरा शक्तिः परमा त्वं हि गीयसे । इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा ॥
गंगा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती । सरयूर्देविका सिन्धुर्नर्मदेरावती तथा ॥
गोदावरी शतद्रुश्च कावेरी देवलोकगा । कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ॥
गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि । इडा च पिंगला चैव सुषुम्णा च तृतीयका ॥
गांधारी हस्तिजिह्वा च पूषापूषा तथैव च । अलम्बुषा कुहूश्चैव शंखिनी प्राणवाहिनी ॥
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः । हृतपद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका ॥
तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी । मूले तु कुण्डली शक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा ॥
शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी । किमन्यद् बहुनोक्तेन यत्किंचिज्जगतीत्रये ॥
तत्सर्वं त्वं महादेवि श्रिये संध्ये नमोऽस्तु ते । इतीदं कीर्तितं स्तोत्रं संध्यायां बहुपुण्यदम् ॥
महापापप्रशमनं महासिद्धिविधायकम् । य इदं कीर्तयेत् स्तोत्रं संध्याकाले समाहितः ॥
अपुत्रः प्राप्नुयात् पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात् । सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलं लभेत् ॥
भोगान् भुक्त्वा चिरं कालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात् । तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत् ॥
यत्र कुत्र जले मग्नः संध्यामज्जनजं फलम् । लभते नात्र संदेहः सत्यं च नारद ॥
श्रृणुयाद्योऽपि तद्भक्त्या स तु पापात् प्रमुच्यते । पीयूषसदृशं वाक्यं संध्योक्तं नारदेरितम् ॥

॥ इति श्रीअघनाशक गायत्री स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

***

॥गायत्री स्तोत्र॥

सुकल्याणीं वाणीं सुरमुनिवरैः पूजितपदाम
शिवाम आद्यां वंद्याम त्रिभुवन मयीं वेदजननीं
परां शक्तिं स्रष्टुं विविध विध रूपां गुण मयीं
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

विशुद्धां सत्त्वस्थाम अखिल दुरवस्थादिहरणीम्
निराकारां सारां सुविमल तपो मुर्तिं अतुलां
जगत् ज्येष्ठां श्रेष्ठां सुर असुर पूज्यां श्रुतिनुतां
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

तपो निष्ठां अभिष्टां स्वजनमन संताप शमनीम
दयामूर्तिं स्फूर्तिं यतितति प्रसादैक सुलभां
वरेण्यां पुण्यां तां निखिल भवबन्धाप हरणीं
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

सदा आराध्यां साध्यां सुमति मति विस्तारकरणीं
विशोकां आलोकां हृदयगत मोहान्धहरणीं
परां दिव्यां भव्यां अगम भव सिन्ध्वेक तरणीं
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

अजां द्वैतां त्रेतां विविध गुणरूपां सुविमलां
तमो हन्त्रीं तन्त्रीं श्रुति मधुरनादां रसमयीं
महामान्यां धन्यां सततकरूणाशील विभवां
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

जगत् धात्रीं पात्रीं सकल भव संहारकरणीं
सुवीरां धीरां तां सुविमलतपो राशि सरणीं
अनैकां ऐकां वै त्रयजगत् अधिष्ठान् पदवीं
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

प्रबुद्धां बुद्धां तां स्वजनयति जाड्यापहरणीं
हिरण्यां गुण्यां तां सुकविजन गीतां सुनिपुणीं
सुविद्यां निरवद्याममल गुणगाथां भगवतीं
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम

अनन्तां शान्तां यां भजति वुध वृन्दः श्रुतिमयीम
सुगेयां ध्येयां यां स्मरति हृदि नित्यं सुरपतिः
सदा भक्त्या शक्त्या प्रणतमतिभिः प्रितिवशगां
भजे अम्बां गायत्रीं परम सुभगा नंदजननीम
शुद्ध चितः पठेद्यस्तु गायत्र्या अष्टकं शुभम्
अहो भाग्यो भवेल्लोके तस्मिन् माता प्रसीदति

गायत्रीस्तोत्रम्

नमस्ते देवि गायत्री सावित्री त्रिपदेऽक्षरी ।
अजरे अमरे माता त्राहि मां भवसागरात् ॥१॥

नमस्ते सूर्यसंकाशे सूर्यवावित्रिकेऽमले ।
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये वेदमातर्नमोऽस्तु ते ॥२॥

अनन्तकोटिब्रह्माण्डव्यापिनी ब्रह्मचारिणी ।
नित्यानन्दे महामये परेशानी नमोऽस्तु ते ॥३॥

त्वम् ब्रह्मा त्वम् हरिः साक्षाद् रुद्रस्त्वमिन्द्रदेवता ।
मित्रस्त्वम् वरुणस्त्वम् च त्वमग्निरश्विनौ भगः ॥४॥

पूषाऽर्यमा मरुत्वांश्च ऋषयोऽपि मुनीश्वराः ।
पितरो नागयक्षांश्च गन्धर्वाऽप्सरसां गणाः ॥५॥

रक्षोभूतपिशाचाच्च त्वमेव परमेश्वरी ।
ऋग्यजुस्सामविद्याश्च अथर्वाङ्गिरसानि च ॥६॥

त्वमेव सर्वशास्त्राणि त्वमेव सर्वसंहिताः ।
पुराणानि च तन्त्राणि महागममतानि च ॥७॥

त्वमेव पञ्चभूतानि तत्त्वानि जगदीश्वरी ।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ॥८॥

तत्सद्ब्रह्मस्वरूपा त्वं किञ्चित् सदसदात्मिका ।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ॥९॥

चन्द्रकलात्मिके नित्ये कालरात्रि स्वधे स्वरे ।
स्वाहाकारेऽग्निवक्त्रे त्वां नमामि जगदीश्वरी ॥१०॥

नमो नमस्ते गायत्री सावित्री त्वं नमाम्यहम् ।
सरस्वती नमस्तुभ्यं तुरीये ब्रह्मरूपिणी ॥११॥

अपराध सहस्राणि त्वसत्कर्मशतानि च ।
मत्तो जातानि देवेशी त्वं क्षमस्व दिने दिने ॥१२॥

॥ इति शीवसिष्ठसंहितोक्तं गायत्रीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥गायत्री चालीसा॥

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड॥ शान्ति कान्ति जागृत प्रगति रचना शक्ति अखण्ड॥
जगत जननी मङ्गल करनि गायत्री सुखधाम। प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी।
गायत्री नित कलिमल दहनी॥१॥
अक्षर चौविस परम पुनीता।
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥२॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा।
सत्य सनातन सुधा अनूपा॥३॥
हंसारूढ श्वेताम्बर धारी।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन-बिहारी॥४॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥५॥

ध्यान धरत पुलकित हित होई।
सुख उपजत दुःख दुर्मति खोई॥६॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया॥७॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई॥८॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥९॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं।
जो शारद शत मुख गुन गावैं॥१०॥

चार वेद की मात पुनीता।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥११॥
महामन्त्र जितने जग माहीं।
कोउ गायत्री सम नाहीं॥१२॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै।
आलस पाप अविद्या नासै॥१३॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी।
कालरात्रि वरदा कल्याणी॥१४॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥१५॥

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥१६॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी।
जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥१७॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना।
तुम सम अधिक न जगमे आना॥१८॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेसा॥१९॥
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥२०॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई।
माता तुम सब ठौर समाई॥२१॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥२२॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक पोषक नाशक त्राता॥२३॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी।
तुम सन तरे पातकी भारी॥२४॥
जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा करें सब कोई॥२५॥

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें।
रोगी रोग रहित हो जावें॥२६॥
दरिद्र मिटै कटै सब पीरा।
नाशै दुःख हरै भव भीरा॥२७॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी।
नासै गायत्री भय हारी॥२८॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावें।
सुख संपति युत मोद मनावें॥२९॥
भूत पिशाच सबै भय खावें।
यम के दूत निकट नहिं आवें॥३०॥

जो सधवा सुमिरें चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥३१॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥३२॥
जयति जयति जगदंब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥३३॥
जो सतगुरु सो दीक्षा पावे।
सो साधन को सफल बनावे॥३४॥
सुमिरन करे सुरूचि बड़भागी।
लहै मनोरथ गृही विरागी॥३५॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥३६॥
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी।
आरत अर्थी चिन्तित भोगी॥३७॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें।
सो सो मन वांछित फल पावें॥३८॥
बल बुधि विद्या शील स्वभाउ।
धन वैभव यश तेज उछाउ॥३९॥
सकल बढें उपजें सुख नाना।
जे यह पाठ करै धरि ध्याना॥४०॥

॥दोहा॥

यह चालीसा भक्तियुत पाठ करै जो कोई।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय॥

॥श्री गायत्री शाप विमोचनम्॥

शाप मुक्ता हि गायत्री चतुर्वर्ग फल प्रदा । अशाप मुक्ता गायत्री चतुर्वर्ग फलान्तका ॥
ॐ अस्य श्री गायत्री । ब्रह्मशाप विमोचन मन्त्रस्य । ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः ।
भुक्ति मुक्तिप्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिः देवता । ब्रह्म शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥
ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीराः सुमनसां वाचग्रतः ।
ॐ वेदान्त नाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमही । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।
ॐ गायत्री त्वं ब्रह्म शापत् विमुक्ता भव ॥
ॐ अस्य श्री वसिष्ट शाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रह अनुग्रह कर्ता वसिष्ट ऋषि । विश्वोद्भव गायत्री छन्दः । वसिष्ट अनुग्रहिता गायत्री शक्तिः देवता । वसिष्ट शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ सोहं अर्कमयं ज्योतिरहं शिव आत्म ज्योतिरहं शुक्रः सर्व ज्योतिरसः अस्म्यहं ।(इति युक्त्व योनि मुद्रां प्रदर्श्य गायत्री त्रयं पदित्व)
ॐ देवी गायत्री त्वं वसिष्ट शापत् विमुक्तो भव ॥
ॐ अस्य श्री विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टि कर्ता विश्वामित्र ऋषि । वाग्देहा गायत्री छन्दः । विश्वामित्र अनुग्रहिता गायत्री शक्तिः देवता । विश्वामित्र शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥
ॐ गायत्री भजांयग्नि मुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीं इष्टकरीं प्रपद्ये । यन्मुखान्निसृतो अखिलवेद गर्भः । शाप युक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन ।
शापत् उत्तरीत सा तु मुक्ति भुक्ति फल प्रदा ॥ प्रार्थना ॥ ब्रह्मरूपिणी गायत्री दिव्ये सन्ध्ये सरस्वती । अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते। ब्रह्म शापत् विमुक्ता भव। वसिष्ट शापत् विमुक्ता भव। विश्वामित्र शापत् विमुक्ता भव॥

श्री गायत्री जी की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालक कर्त्री।
दु:ख शोक, भय, क्लेश कलश दारिद्र दैन्य हत्री॥ जयति ..
ब्रह्म रूपिणी, प्रणात पालिन जगत धातृ अम्बे।
भव भयहारी, जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥ जयति ..
भय हारिणी, भवतारिणी, अनघेअज आनन्द राशि।
अविकारी, अखहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥ जयति ..
कामधेनु सतचित आनन्द जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता॥ जयति ..
ऋग, यजु साम, अथर्व प्रणयनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्र सुषुमन शोभा गुण गरिमे॥ जयति ..
स्वाहा, स्वधा, शची ब्रह्माणी राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला कल्याणी॥ जयति ..
जननी हम हैं दीन-हीन, दु:ख-दरिद्र के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे॥ जयति ..
स्नेहसनी करुणामय माता चरण शरण दीजै।
विलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजै॥ जयति ..
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये॥ जयति ..
तुम समर्थ सब भांति तारिणी तुष्टि-पुष्टि द्वाता।
सत मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता॥

श्री गायत्री कवच

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विनियोग:-

ॐ अस्य श्रीगायत्री कवचस्य ब्रह्मा-विष्णु-रुद्राः ऋषयः। ऋग् यजुः सामाथर्वाणि छन्दांसि। परब्रह्म स्वरुपिणी गायत्री देवता। भूः बीजं। भुवः शक्तिः। स्वाहा कीलकम्। चतुर्विंशत्यक्षरा श्रीगायत्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानः-

वस्त्राभाम् कुण्डिकां हस्तां, शुद्ध निर्मल ज्योतिषीम्।
सर्व तत्त्व मयीं वन्दे, गायत्रीं वेद मातरम्॥
मुक्ता विद्रुम हेम नील धवलैश्छायैः मुखेस्त्रीक्षणैः।
युक्तामिन्दु निबद्ध रत्न मुकुटां तत्त्वार्थ वर्णात्मिकाम्॥
गायत्रीं वरदाभयांकुश कशां शूलं कपालं गुणैः।
शंखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

कवच पाठ:-

"ॐ ॐ ॐ ॐ 'भूः' ॐ ॐ 'भुवः' ॐ ॐ 'स्वः' ॐ ॐ 'त' ॐ ॐ 'त्स' ॐ ॐ 'वि' ॐ ॐ 'तु' ॐ ॐ 'र्व' ॐ ॐ 'रे' ॐ ॐ 'ण्यं' ॐ ॐ 'भ' ॐ ॐ 'र्गो' ॐ ॐ 'दे' ॐ ॐ 'व' ॐ ॐ ' स्य' ॐ ॐ 'धी' ॐ ॐ 'म' ॐ ॐ 'हि' ॐ ॐ 'धि' ॐ ॐ 'यो' ॐ ॐ 'नः' ॐ ॐ 'प्र' ॐ ॐ 'चो' ॐ ॐ 'द' ॐ ॐ 'या' ॐ ॐ 'त्' ॐ ॐ।

ॐ ॐ ॐ ॐ 'भूः' ॐ पातु मे मूलम् चतुर्दल समन्वितम्।
ॐ 'भुवः' ॐ पातु मे लिन्गम् सज्जलम् षट् दलात्मकम्।
ॐ 'स्व' ॐ पातु मे कण्ठम् साकाशम् दल षोडशम्।
ॐ 'त' ॐ पातु मे रुपम् ब्राह्मणम् कारणम् परम्।
ॐ 'त्स' ॐ ब्रह्म रसम् पातु मे सदा मम।
ॐ 'वि' ॐ पातु मे गन्धम् सदा शिशिर संयुतम्।
ॐ 'तु' ॐ पातु मे स्पर्शं शरीरस्य कारणम् परम्।
ॐ 'र्व' ॐ पातु मे शब्दम् शब्द विग्रह कारणम्।
ॐ 'रे' ॐ पातु मे नित्यम् सदा तत्त्व शरीरकम्।
ॐ 'ण्यं' ॐ पातु मे अक्षम् सर्व तत्त्वैक कारणम्।
ॐ 'भ' ॐ पातु मे श्रोत्रम् शब्द श्रवणैक कारणम्।
ॐ 'र्गो' ॐ पातु मे घ्राणम् गन्धोत्पादान कारणम्।
ॐ 'दे' ॐ पातु मे चास्यम् सभायाम् शब्द रुपिणीम्।
ॐ 'व' ॐ पातु मे बाहु युगलम् च कर्म कारणम्।
ॐ 'स्य' पातु मे लिन्गम् षट् दल युतम्।
ॐ 'धी' ॐ पातु मे नित्यम् प्रकृति शब्द कारणम्।
ॐ 'म' ॐ पातु मे नित्यम् नमो ब्रह्म स्वरुपिणीम्।
ॐ 'हि' ॐ पातु मे बुद्धिम् पर-ब्रह्म-मयम् सदा।
ॐ 'धि' ॐ पातु मे नित्यमहन्कारम् यथा तथा।
ॐ 'यो' ॐ पातु मे नित्यम् जलम् सर्वत्र सर्वदा।
ॐ 'नः' ॐ पातु मे नित्यं तेज पुन्जो यथा तथा।
ॐ 'प्र' ॐ पातु मे नित्यमनिलम् काय कारणम्।
ॐ 'चो' ॐ पातु मे नित्यमाकाशम् शिव सन्निभम्।
ॐ 'द' ॐ पातु मे जिह्वां जप यज्ञस्य कारणम्।
ॐ 'यात्' ॐ पातु मे नित्यम् शिवम् ज्ञान मयम् सदा।
ॐ तत्त्वानि पातु मे नित्यम्, गायत्री पर दैवतम्।
कृष्णं मे सततम् पातु, ब्रह्माणि भूर्भुवः स्वरोम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ जात-वेदसे सुनवाम सोममाराती यतो निदहाति वेदाः।
षनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवम् सिन्धुं दुरितात्यग्निः।
ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्।
ऊर्वारिकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ नमस्ते तुरीयाय सर्शिताय पदाय परो रजसेसावदोम् मा प्रापत॥ कवच सहिता चतुष्पाद गायत्री सम्पूर्णा॥

विश्वामित्र संहितोक्त गायत्री कवच

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ब्रह्मोवाच:-

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचं श्रृणु।
यस्य विज्ञान मात्रेण त्रैलोक्यं वश्येत् क्षणात्॥

अर्थात: ब्रह्मा जी बोले- हे महाप्राज्ञ अर्थात महान बिद्धिमान, बुद्धि सागर विश्वामित्र !, तुम श्री गायत्री कवच को श्रवण करो! जिसके जानने मात्र से मनुष्य तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता हैं।

सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी
ललाटं ब्रह्म दैवत्यां भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥
कर्णौं में पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ॥

अर्थात: सावित्री मेरे सिर की रक्षा करें। अमृतेश्वरी मेरी शिखा की रक्षा करें। ब्रह्म देवता मेरे भाल अर्थात मस्तक की रक्षा करें। वैष्णवी मेरी भौहों की रक्षा करें। रुद्राणी मेरे दोनों कानों की रक्षा करें। समस्त प्राणियों की सृजन हार मां भगवती मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा करें तथा गायत्री मेरे मुख की रक्षा करें तथा शारदा मेरे मसूढ़ों की रक्षा करें।

द्विजान यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती।
सांख्यायनी नासिका में कपोलौ चंद्रहासिनी॥
चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी।
स्तनौ में पातु इन्द्राणी हृदय ब्रह्मवादिनी॥
उदरं विश्व भोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया।
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी॥
पार्श्वौ में पातु पद्माक्षी गुह्यंगो पोप्त्रिकाऽवतु।
ऊर्वोड् काररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु॥

अर्थात: पज्ञप्रिया मेरे दांतों की रक्षा करें। सरस्वती मेरी जिह्वा की रक्षा करें। सांख्यायनी मेरी नासिका की रक्षा करें। चन्द्रहासिनी मेरे कपोलों की रक्षा करें। वेदगर्भा मेरी ठोढ़ी की रक्षा करें। अघनाशिनी मेरे कण्ठ की रक्षा करें। इन्द्राणी मेरे स्तनों की रक्षा करें तथा ब्रह्मावादिनी मेरे हृदय की रक्षा करें। विश्वभोक्त्री मेरे पेट की रक्षा करें। सुरप्रिया मेरी नाभि की रक्षा करें। नारसिंही मेरी जांघों की रक्षा करें तथा ब्रह्माण्डधारिणी मेरी पीठ की रक्षा करें। पद्माक्षी मेरे दोनों पार्श्वों एवं मेरे गुह्यांगों की रक्षा करें। ॐ कार रुपा मेरे दोनों ऊरु की रक्षा करें। सन्ध्यात्मिका मेरे जानु अर्थात घुटनों की रक्षा करें।

जंघयोः पातु चाक्षोभ्यां गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादंगुलीषु च॥
सर्वांड्ग वेद माता च पातु में सर्वदाऽनघा।
इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्व पावनम् ।

अर्थात: आंखों से जंघाओं तक, सिर से एड़ी तक सूर्य मेरी रक्षा करें। चन्द्र मेरे पैरों की अंगुलियों की रक्षा करें। सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली वेद माता सर्वदा हमारे सम्पूर्ण अंगों की रक्षा करें। इस तरह यह गायत्री कवच सदैव सब प्रकार से पवित्र करने वाला हैं।

पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोग निवारणम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् विद्वान् सर्वान् कामानाप्नुयात्॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स भवेद् वेदवित्तमः।
सर्व यज्ञ फलं पुण्यं ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात॥

अर्थात: यह गायत्री कवच पुण्य, पवित्र, पापनाशक तथा रोगों का निवारण करने वाला हैं। जो विद्वान तीनों (त्रिसंध्या) समय अर्थात प्रातः, दोपहर एवं संध्या काल में इस का पाठ करता हैं, उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। वह सब शास्त्रों का तत्त्वज्ञ, जानकार, ज्ञाता तथा वेदवेत्ता हो जाता हैं तथा समस्त यज्ञों का फल प्राप्त करके अन्त में ब्रह्मपद को प्राप्त हो जाता हैं।

जानकारो का कथन हैं की गायत्री कवच का पाठ करने से पहले विनियोग तथा ध्यान करना अति आवश्यक हैं। विनियोग के लिए दाहिने हाथ में जल,

रोली(कुमकुम), इत्र, अक्षत, सिक्का, पुष्प लेकर पढे फिर जल को भूमि पर छोड़ दें।

विनियोग:

ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य ब्रह्मा ऋषि र्गायत्री छन्दौ गायत्री देवता ॐ भू: बीजम् भुव: शक्ति: स्व: कीलकम् गायत्री प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

अब इस श्लोक से गायत्री माताका ध्यान करे।

ध्यान:

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्य कोटि समप्रभम्।
सावित्री ब्रह्मवरदां चन्द्र कोटि-सुशीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहार विराजिताम्।
वराऽभयांकुशकशां हेम पात्राक्षमालिकाम्॥
शंख-चक्राऽब्ज-युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्।
सित पंकज संस्था च हंसारुढां सुखास्मिताम् ।।

अर्थात: जो गायत्री देवी पंचमुख वाली एवं दश भुजा युक्त हैं, जिनकी कांति करोड़ों सूर्य के समान हैं तथा जो सावित्री व ब्रह्मा को भी देने में समर्थ हैं। जो करोड़ो चन्द्रमाओं के समान शीतल हैं। जिनके तीन नेत्र हैं तथा मुख-मण्डल स्वच्छ हैं। जो मुक्ताहार से विभूषित हैं। जिनके दोनों हाथों में वर, अभय, अंकुश, कशा, सवर्ण पात्र, अक्षमाला, शंख, चक्र, ध्वज शोभायमान हैं, जो परब्रह्म स्वरुपिणी हैं जो श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। शुभ्रवर्ण हंस जिसका वाहन हैं और जिसके मुख-मण्डल पर सदैव प्रसन्नता युक्त मुस्कान रहती हैं।

ध्यात्वैवं मनसाम्भोजे गायत्री कवचम् जपेत्॥

अर्थात: मस्तिष्क-पटल पर माता गायत्री के स्वरुप का ध्यान धारण कर कवच का पाठ करें।

दत्तात्रेय गायत्री

ॐ दत्तात्रेयाय विद्महे अवधूताय धीमहि । तन्नो दत्त: प्रचोदयात्॥

ॐ दत्तात्रेयाय विद्महे योगीश्वराय धीमहि । तन्नो दत्त: प्रचोदयात्॥

ॐ दिगम्बराय विद्महे योगीश्वराय धीमहि । तन्नो दत्त: प्रचोदयात्॥

ॐ दत्तात्रेयाय विद्महे दिगम्बराय धीमहि । तन्नो दत्त: प्रचोदयात्॥

ॐ दत्तात्रेयाय विद्महे अत्रीपुत्राय धीमहि । तन्नो दत्त: प्रचोदयात्॥

सूर्य गायत्री

ॐ अदित्याय विद्महे भास्कराए धीमहि । तन्नो भानु: प्रचोदयात ॥

ॐ आदित्याय च विद्महे प्रभाकराय धीमहि । तन्नो सूर्य: प्रचोदयात ॥

ॐ आदित्याय विद्मद्दे दिवाकराय धीमही । तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ॥

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि । तन्नो सूर्य: प्रचोदयात ॥

ॐ अश्वध्वजाय विद्महे पासहस्थाया धीमहि । तन्नो सूर्य: प्रचोदयात ॥

श्रीगायत्रीपुरश्चरणविधिः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गायत्रीपुरश्चरणविधिरुच्यते ॥ तत्र पुरश्चरणं नाम मंत्रफलसिद्ध्यर्थमुपोद्घातत्वेन पूर्वसेवनम् ॥ अन्यच्च ॥ पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च ॥ होमं ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥१॥ इति ॥ कुलार्णवे ॥ पंचांगानि महादेवि जपो होमश्च तर्पणम् ॥ अभिषेकश्च विप्राणामाराधनमपीश्वरि ॥२॥ पूर्वपूर्वदशांशेन पुरश्चरणमुच्यते ॥३॥ इति ॥ पुरश्चरणस्थानानि विश्वामित्रकल्पे ॥ पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले जलाशये ॥ गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसीवने ॥४॥ पुण्यक्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्तैकाग्र्यस्थलेऽपि च ॥ पुरश्चरणकृन्मंत्री सिध्यत्येव न संशयः ॥५॥ इति ॥ पुरशरणं कर्त्तुं योग्यतासिद्ध्यर्थं दिहशुद्धिप्रकारमाह विश्वामित्रः ॥ आत्मनः शोधनार्थाय लक्षत्रयं जपेद् बुधः ॥ अथवाऽप्यष्टलक्षं तु गायत्रीं श्रुतिचोदिताम् ॥६॥ चतुर्विंशतिलक्षं वा याज्ञवल्क्यमतं यथा ॥७॥ इति ॥ (अथवा नद्यादितीर्थे सर्वप्रायश्चित्तविधिना षडब्दं त्र्यब्दं सार्धाब्दं वा यथाशक्ति कृच्छ्रचांद्रायणादि सर्वप्रायश्चित्तं कृत्वा पुरश्चरणं कुर्यादिति॥) अथान्नशुद्धिप्रकारः विश्वामित्रकल्पे ॥ अयाचितोञ्छशुक्लश्च भिक्षावृत्तिचतुष्टयम् ॥ तांत्रिकैर्वैदिकैश्चैव अन्नशुद्धिः प्रकीर्तिता ॥८॥ अन्नानुसारिकर्माणि बुद्धिः कर्मानुसारतः ॥ (तत्र तपोयुक्तेन तापसेन क्षत्रियवैश्यशूद्रादीनामन्नं न ग्राह्यम्॥) पललस्पर्शमात्रेण तपो दहति निश्चितम् ॥९॥ इत्युक्तेः ॥ भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वाभागचतुष्टयम् ॥ एकभागो द्विजार्थाय गोग्रासाय द्वितीयकः ॥ आतिथ्याय तृतीयश्च तुरीयस्तु स्वकीयकः ॥१०॥ इति ॥ ग्रासप्रमाणं तत्संख्या च तत्रैव ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥ द्व्यष्टौ ग्रासा गृहस्थस्य वानप्रस्थास्तदर्धकम् ॥११॥ ब्रह्मचारी यथेष्टं च गोमूत्रं विधिपूर्वकम् ॥ प्रोक्षणं नववारं स्यात्षड्वारं च त्रिवारकम् ॥१२॥ अच्छिद्रं च करं कृत्वा सावित्रीं च तदित्यृचम् ॥ मंत्रमुच्चार्य मनसा उक्तमार्गेण प्रोक्षयेत् ॥१३॥ इति ॥ आहारनियमस्तत्रैव ॥ अशक्तो वापि शक्तो वा आहारे नियते कृते ॥ षण्मासे तस्य सिद्धिः स्याद् गुरुभक्तिरतः सदा ॥१४॥ एकाहं पंचगव्याशी ह्येकाहं मारुताशनः ॥ एकाहं ब्राह्मणान्नाशी गायत्रीजपकर्मणि ॥१५॥ इति ॥ मतांतरे तु ॥ स्नात्वा तु शतगायत्र्याः शतमंतर्जले जपेत् ॥ शतेनापस्ततः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ चांद्रायणादिकृच्छ्रस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ॥१६॥ इति ॥ (यदा लोकेषणा त्यक्तुं न शक्यते तदर्थोऽयं विधिरुच्यते ॥) क्षीराहारी फलाशी वा शाकाशी वा हविष्यभुक् ॥ भिक्षाशी वा जपेद्यत्तत्कृच्छ्रचांद्रसमं भवेत् ॥१७॥ इति ॥ वर्ज्याहारस्तत्रैव ॥ लवणं क्षारमाम्लं च गृंजनादिनिषेधितम् ॥ तांबूलं च द्विभुक्तिश्च दुष्टवासः प्रमत्तताम् ॥१८॥ श्रुतिस्मृतिविरोधं च जपं रात्रौ विवर्जयेत् ॥ श्राद्धादेरनुरोधेन जपं यदि त्यजेन्नरः ॥१९॥ स भवेद्देवताद्रोहे पितॄन्सप्त नयेदधः ॥२०॥ इति ॥ अथ नित्यानुष्ठेयधर्मास्तत्रैव ॥ भूशय्या ब्रह्मचारित्वं मौनचर्यास्तथैव च ॥ नित्यं त्रिषवणं स्ननं क्षुद्रकर्मविवर्जनम् ॥२१॥ नित्यपूजा नित्यदान-मानंदस्तुतिकीर्तनम् ॥ नैमित्तिकार्चनं चैव विश्वासो गुरुदेवयोः ॥२२॥ जपनिष्ठा द्वादशैते धर्माः स्युर्मंत्रसिद्धिदाः ॥ नित्यसूर्यमुपस्थाय तस्य चाभिमुखो जपेत् ॥२३॥ देवताप्रतिमादौ वा वह्नौ वाऽभ्यर्च्य तन्मुखः ॥ स्नानपूजाजपध्यानहोम तर्पणतत्परः ॥२४॥ निष्कामो देवतायां च सर्वकर्मनिवेदकः ॥ एवमादींष्च नियमान्पुरश्चरणकृच्चरेद् ॥२५॥ इति ॥ पुरश्चरणारंभे वर्ज्यमासादि तत्रैव ॥ ज्येष्ठाषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मळमासकम् ॥ अंगारशनिवारौ तु व्यतिपातं च वैधृतिम् ॥२६॥ अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम् ॥ चतुर्दशीममावास्यां प्रदोषं च तथा निशाम् ॥२७॥ यमाग्निरुद्रसार्पेन्द्रवसुश्रवणजन्मभम् ॥ मेषकर्कतुला कुंभमकरालिकलग्नकम् ॥२८॥ सर्वाण्येतानि वर्ज्यानि पुरश्चरणकर्मणि ॥ संध्यागर्जितनिर्घोषभूकंपोल्कानिपातने

॥२९॥ एतानन्यांश्च दिवसान्स्मृत्युक्तांश्च परित्यजेत् ॥३०॥ इति ॥ पुरश्चरणकालः रुद्रयामले ॥ वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्त्तिके तथा ॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे वा मंत्री कुर्यात्पुरस्क्रियाम् ॥३१॥ तिथ्यादिनिर्णयः चंद्रिकायाम् ॥ पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्वकर्मसु ॥३२॥ इति ॥ रुद्रयामले ॥ गुरुशुक्रोदये शुद्धे लग्ने सद्वारशोधिते ॥ चंद्रतारानुकूल्ये च शुक्लपक्षे विशेषतः ॥ पुरश्चरणक कुर्यान्मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥३३॥ इति ॥ जपस्थानानि नारदीये ॥ शिवस्य संनिधाने च सूर्याग्न्योर्वा गुरोरपि ॥ दीपस्य ज्वलितस्यापि जपकर्म प्रशस्यते ॥३४॥ गृहे जपं समं विद्याद्गोष्ठे शतगुणं भवेत् ॥ नद्यां शतसहस्रं स्यादनंतं शिवसन्निधौ ॥३५॥ समुद्रतीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च ॥ पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥३६॥ इत्युक्तस्थानानामन्यतमं स्थानमाश्रित्य दीपस्थानं विचिंतयेत् ॥ तद्यथा ॥ कूर्मस्यैव मुखं विद्धि दीपस्थानं सुसिद्धिदम् ॥ चतुरस्रं भुवं भित्त्वा कोष्ठानां नवकं लिखेत् ॥३७॥ पूर्वकोष्ठादि विलिखेत्सप्तवर्गान्यनुक्रमात् ॥ लक्षावीशे मध्यकोष्ठे स्वरान्युग्मक्रमाल्लिखेत् ॥३८॥ दिक्षु पूर्वोदितो यत्र नामस्याद्याक्षरं भवेत् । मुखं तदाऽस्य जानीयाद्धस्तावु-भयतः स्थितौ ॥३९॥ पृष्ठं कुक्षी उभे पादौ द्वौ शीर्ष्णि पुच्छमीरितम् ॥ कूर्मचक्रामिदं प्रोक्तं मंत्राणां सिद्धि-साधनम् ॥४०॥ इति ॥ कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गंगासागर-संगमे ॥ महाकाले च काश्यां च कूर्मस्थानं न चिन्तयेत् ॥४१॥ इति ॥ अथासनानि शारदायाम् ॥ कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि ॥ स्यात्पौष्टिकं च कौशेयं शांतिकं वेत्रविष्टरम् ॥४२॥ वंशासने व्याधिनाशः कंबले दुःखमोचनम् ॥ सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते ॥४३॥ इति ॥ जपमाला तत्रैव ॥ रुद्राक्षश्वएतपद्माक्षमाले तु अखिले जपेत् ॥ अतिस्थूलोऽतिसूक्ष्मश्च स्फुटितो भंगुरिर्लघुः ॥४४॥ भिन्नः पुरा धृतो जीर्णो रुद्राक्षो वरदः स्मृतः ॥ अष्टोत्तरशतैर्माला प्रशस्ता सर्वकर्मसु ॥४५॥ गुरुं प्रकाशयेद्धीमान्मंत्रं नैव प्रकाशयेत् ॥ अथ मालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥४६॥ इति ॥ मालासंस्कारस्तत्रैव ॥ क्षालयेत्पंचगव्येन सद्योजातेन तज्जलैः ॥ चंदनागरुगंधाद्यैर्वामदेवेन घर्षयेत् ॥४७॥ धूपयेत्तामघोरेण लेपयेत्पुरुषेण तु ॥ मंत्रयेत्पंचमेनैव प्रत्येकं तु शतं शतम् ॥४८॥ मेरुं च पंचमेनैव तथा मंत्रेण मंत्रयेत् ॥ येन प्रतिष्ठिता माला तमेव तु मनुं जपेत् ॥४९॥ इति ॥ जपप्रकारः विश्वामित्रकल्पे ॥ ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च ॥ गायत्रीं प्रणवांतां च मध्ये त्रिप्रणवां तथा ॥५०॥ एवं नित्यं जपं कुर्याद्ब्राह्मणो विप्रपुंगवः ॥ भिन्नापादा तु गायत्री ब्रह्महत्याप्रणाशिनी ॥५१॥ अभिन्नपादा गायत्रीब्रह्महत्यां प्रयच्छति ॥ अच्छिन्नपादगायत्रीजपं कुर्वंति ये द्विजाः ॥५२॥ अधोमुखाश्च तिष्ठंति कल्पकोटिशतानि च ॥ धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत ॥५३॥ पंचप्रणव-संयुक्तां जपेदित्यनुशासनम् ॥ जपसंख्याष्टभागान्ते पादो जाप्यस्तुरीयकः ॥५४॥ स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात् ॥ अन्यथा प्रजपेद्यस्तु स जपो विफलो भवेत् ॥५५॥ प्रारंभदिन मारभ्य समाप्ति-दिवसावधि ॥ न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्याद् दिनेदिने ॥५६॥ नैरंतर्येण कुर्वीत स्वस्ववृत्तिं न लिंपयेत् ॥ प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि ॥५७॥ मनःसंहरणं शौचं यानं मंत्रार्थचिंतनम् ॥५८॥ इति ॥ जपसंख्या तत्रैव ॥ गायत्रीछन्दोमंत्रस्य यथासंख्याक्षराणि च ॥ तावल्लक्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥५९॥ इति ॥ प्रपंचसारेऽपि ॥ एवं कृत्वा तु सिद्ध्यर्थं गायत्रीं दीक्षितो जपेत् ॥ तत्तलक्षं विधानेन भिक्षाशी विजितेंद्रियः ॥६०॥ इति ॥ होमद्रव्याणि तत्संख्या च शारदायाम् ॥ क्षीरोदनं तिला दूर्वाः क्षीरद्रुमसमिद्वरान् ॥ पृथक्सहस्रत्रितयं जुहुयान्मंत्रसिद्ध्ये ॥६१॥ इति ॥ विश्वामित्रोऽपि ॥ तिलैः पत्रैः प्रसूनैश्च यवैश्च मधुना प्लुतैः ॥ कुर्याद्दशांशतो होमं ततः सिद्धो भवेन्मनुः ॥६२॥ इति ॥ अत्र दशांशतस्तर्पणं दशांशहोम इत्यर्थः ॥ होमात्पूर्वं तर्पणस्योक्तत्वात् ॥ होमार्थं मंडप कुंडादिनिर्णयस्तद्रचना प्रकारश्च तत्तदग्रंथेभ्योऽवगंतव्यः ॥ विस्तरभयान्नेह लिखितः ॥

॥ इति श्रीगायत्रेपुरशरणविधिः समाप्तः ॥

श्रीगायत्र्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

जगन्मातर्मातः सुकृतसुचयैः पूर्वजनितै, र्द्विजातौ मे भाग्यान्निवसतिरभून्मातुरुदरे ॥ न किंचिज्जातं ते स्मरणमपि भे तत्र जननि, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥१॥

जनौ जात्यां बाल्ये विविधपरिपीडाकुलतया, कृतं नो मूढत्वाद् भगवति तवाराधनमपि ॥ द्विजत्वे ते भक्तिर्न च विहितकर्मण्यपि कृता, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥२॥

युवाऽहं सौख्यानामतिमदभराकुण्ठितधिया, न चाकार्षङ्किंचिद् भजनमपि मातर्यमभिया ॥ कथं वार्धक्ये त्वच्चरणयुगधीर्मे हि भविता, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥३॥

न जाने ते ध्यानं न च जननि चावाहनमथो, प्रतिष्ठां नो जाने न च मृदु समर्घ्यासनमहो ॥ न पाद्यं ते दत्तं न च फलयुतं चार्घ्यमपरं, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥४॥

न वाऽऽचामार्थं तेऽर्पितमपि क्वचिद् वारि मधुरं, न च स्नानं दुग्धैर्दधिघृतसिताभिः समधुभिः ॥ न गन्धैर्वा तैलै रचितमपि संशुद्धसलिलैः, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥५॥

न वस्त्रालंकारा न च मलयगन्धाक्षतयुताः, प्रदत्ता नो मातस्तव शिरसि मे पुष्पनिचयाः ॥ न कण्ठे माला ते न सविधि तवाङ्गार्चनमहो, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥६॥

न चोक्ता ते पूजाऽऽवरणविधिना देवि सुकृता, न दत्तं सौभाग्यं न च सुरभिधूपश्च परमः ॥ न दीपो नैवेद्यं विधिधमथवा नापि सलिलं, क्षमस्वेमं मातः परमषराधं भगवति ॥७॥

मुखे ते ताम्बूलं मृगमदयुतैलादिसहितं, न दत्तं सौवर्णं प्रचुरतरदाक्षिण्यमतुलम् ॥ न चारार्तिक्यं ते कृतमपि च कर्पूरसहितं, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥८॥

न मातस्ते पुष्पाञ्जलिरपि धृतो पादयुगले, कृतं प्रादक्षिण्यं विहितमपि ते नोऽम्ब हि मया ॥ विशेषार्घो दत्तो न च कृतमपि स्तोत्रमथवा, क्षमस्वेमं मातः परमममपराधं भगवति ॥९॥

नमस्कारैरम्ब क्वचिदपि नतिर्नैव विहिता, कृतो मातश्चैवं समयविहितो नार्चनविधिः ॥ प्रमादो वा मादो किमपि ह ममैवास्तु जडता, क्षमस्वेमं मातः परममपराधं भगवति ॥१०॥

त्वमेवासि ब्रह्मा त्वमसि हरिरुद्रौ च जननि !, त्वमिन्द्रस्त्वं चाग्नि स्त्वमसि यमरक्षःपवरुणाः ॥ मरुत्त्वं श्रीदेशौ त्वमसि सकलं सूक्ष्मसहितं, कथं ते माहात्म्यं कथयुतुमु शक्नोमि सुभगे ॥११॥

न सौख्यं चाकाङ्क्षे क्वचिदपि च कस्यापि सुतरां, परे वा लोकेऽस्मिन् विषयजमहो मृत्युजनिदम् ॥ सदाऽऽकाङ्क्षे देवि ! द्विजकुलजनेर्मे सफलतां, परं सा तेऽधीना कुरु रुचिकरं वच्मि किमहम् ॥१२॥

वरेण्यं त्वं तेजः सवितुरथ देवस्य सुमहद्, धियो यो नो नित्यं प्रणुदति च सत्कर्मसु सदा ॥ यदेव ध्यायन्तः परमगतिमोक्षं जनिभृतो विशन्ति त्वद्रूपं वद किमिदमाश्चर्यमनघे ॥१३॥

द्विजानां गायत्री परमसमुपास्या भगवति, यदेवं ब्रह्मापि त्वमसि परमं प्राप्यमनिशम् ॥ शरण्यां त्वां त्यक्त्वा जगति महतीं मातरमहो, अये ! गच्छामि त्वं कथय किमिहान्यच्छरणदम् ॥१४॥

पूजा क्वचिन्न विहिता विधिना मया ते, सोत्रं कृतं न च तथा मधुरैर्वचोभिः ॥ मातस्तथापि मयि संकुरुषे कृपां त्व, मेष प्रकृष्टमहिमा जगदम्बिके ते ॥१५॥

संसारदुःखपरमब्धिनिमज्जितोऽहं, त्वं तारिणी भगवती सकलद्विजानाम् ॥ गायत्रि देवि दयया शरणार्थिनं मां, पुत्रं समुद्धर मुहुः प्रणमामि चाम्ब ॥१६॥

श्रीगायत्र्यम्बिका देवी स्तोत्रेणानेन सर्वशः । क्षान्वा दोषान् प्रसन्ना स्तात् कुर्याच्छ्रेयो निरंतरम् ॥१७॥

॥ इतिश्रीगायत्र्यपराधक्षमापरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीगायत्रीकल्प

अथ विश्वामित्रकृत श्रीगायत्रीकल्पः

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ विश्वामित्रकृतगायत्रीकल्पप्रारंभः ॥ स्वगुरुं पूजयेन्नित्य मुपचारैस्त पंचकैः ॥ भक्तिश्रद्धानुसारेण विश्वामित्रं प्रकल्पयेत् ॥१॥ अस्य कृत्स्नस्य मंत्रस्य प्राणायामं निरुंधयेत् ॥ प्राणायामं नियम्याशु गुरुपूजापुरःसरम् ॥२॥ प्रातरुत्थाय यो विप्रं शयने पर्यवस्थितः ॥ एकाग्रमानसो भूत्वा ध्यायेन्मूलेऽथ कुंडलीम् ॥३॥ नाभिसंनिहिता ज्ञेया द्वात्रिंशद्वर्णसंख्यया । एवं ज्ञात्वा प्रभातायां षडाधारं तथा न्यसेत् ॥४॥ षडाधारं तथा वक्ष्ये विन्यसेच्चतुरक्षरम् ॥ आद्यंतप्रण वैर्युक्तं षट्कुक्षिस्तु ततो न्यसेत् ॥५॥ सहस्रदलमध्यस्थां सबालां सतुरीयके ॥ हंसहंसेति विज्ञानात् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥६॥ अथोत्थाय बहिर्गम्य मलमूत्रविसर्जनम् ॥७॥ दुर्गंधत्यागपर्यन्तं कृत्वा शौचं समाहितः ॥ ततो नदीं समागत्य गंगाध्यानपुरःसरम् ॥८॥ आचमनत्रयं कृत्वा त्रिवारं स्नानमाचरेत् ॥ अग्निमंडलमालिख्य जलमध्ये सबिंदुकम् ॥ मायाबीजेन मध्यस्थमुभयोर्व्याहृतित्रयम् ॥९॥ ततः शुद्धांबुनाऽऽचम्य प्राणायामत्रयं कुरु ॥ देशकालार्थमुच्चार्य्य गायत्रीध्यानपूर्वकम् ॥१०॥ सूक्ताग्निमार्जनं कुर्याद्यथाशाखोक्तमार्गतः ॥ अघमर्षणमंत्रं च स्नानं पंचांगपूर्वकम् ॥११॥ श्रोत्रे नासाक्षि रुद्ध्वा च सहस्रांतं जले वपुः ॥ मग्नं कुर्य्याज्जपेन्मंत्रं कुर्याद्वायुनिरोधनम् ॥१२॥ ततः स्नानत्रयं कुर्याच्छिरोव्याहृतिपूर्वकम् ॥ त्रिवारं त्रिविधं स्नानं पायुमेढ्रं शिरः स्तनम् ॥१३॥ प्रोक्षयेच्छंखमुद्राभिर्व्याहृत्यादिशिरोन्तकम् ॥ ततस्तीरं समागत्य गायत्रीकवचं पठेत् ॥१४॥ शुचिवस्त्रांगमाश्रित्य ललाटं तिलकं तथा ॥ ओमापो ज्योतिमंत्रेण शिखाबंधनमाचरेत् ॥१५॥ त्रिकोणमध्ये ह्रींकारं कोणान्ते प्रपदं तथा ॥ दंडेषु व्याहृतिं चैवमुल्लिखेदुदकं तथा ॥१६॥ प्रणवेन बहिर्जप्त्वा जलं पीत्वा च मार्जनम् ॥ न तत्र विन्यसेत्संध्यामन्यथा शूद्रवद्भवेत् ॥१७॥ इति श्रीविश्वामित्रकल्पे आह्निकलक्षणयोगो नाम प्रथमः परिच्छेदः॥१॥ चतुर्विंशतिनामानि तत्तत्स्थानेषु विन्यसेत् ॥ केशवादीनि विन्यस्य पौराणाचमनं जपेत् ॥१॥ चतुर्विंशतिवर्णानां केशवादिरनुक्रमात् ॥ देव्याः पादैस्त्रिभिः पीत्वा चांगुलैर्नवभिः स्पृशेत् ॥२॥ सप्तव्याहृतिगायत्री शिरस्तुर्यद्वयं न्यसेत् ॥ श्रुतिस्मृतिविधानेन द्विविधं परिकल्पयेत् ॥३॥ तृतीयं मूलमंत्रेण क्रमाद्वर्णानि विन्यसेत् ॥ आचमनविधीः प्रोक्तः प्रौराणः स्मार्त आगमः ॥४॥ श्रौतं मानसमाचम्य पञ्चभिः श्रुतिचोदितैः ॥ संध्याप्रारंभकाले त्वाचमनं त्रियतं न्यसेत् ॥५॥ कुरुते सर्वसिद्धिः स्यान्नास्ति चेन्निष्फलं भवेत् ॥ संहतांगुलिना तोयं ब्रह्मतीर्थे पिबेज्जलम् ॥ मुक्तांगुष्ठं कनिष्ठायां शेषेणाचमनं भवेत् ॥६॥ गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत् ॥ न्यूनातिरिक्तमात्रेण तज्जलं सुरया समम् ॥७॥ आदौ चांते तथा मध्ये न्यसेच्चाचमनं क्रमात् ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणानि पर्यायेण विलोमतः ॥८॥ केशवादित्रिभिर्नाम अपः पीत्वा यथाविधि ॥ गोविंदमग्रतो न्यस्य विष्णुं सुषुम्नि विन्यसेत् ॥९॥ मधुसूदनमादित्यं शुद्धांशुञ्च त्रिविक्रमम् ॥ अग्रतो वामनञ्चैव हस्तयोः श्रीधरं तथा ॥१०॥ हृषीकेश पद्मनाभमुभयोः पादयोर्न्यसेत् ॥ दामोदरं ब्रह्मरंध्रे नासा संकर्षणस्य च ॥११॥ नासामध्ये तु विन्यस्य नासांते वा विनिर्द्दिशेत् ॥ दक्षनास्तु विन्यस्य वासुदेवं तथैव च ॥१२॥ प्रद्युम्नं च तथा वामे अनिरुद्धं च दक्षिणे ॥ पुरुषोत्तमं वामनेत्रे दक्षिणे च अधोक्षजम् ॥१३॥

नारसिंहं वामनेत्रे नाभौ चाप्ययुतं न्यसेत् ॥ जनार्दनं हृदि न्यस्य भुजे दक्षिणबाहुके ॥१४॥
इति विश्वामित्रकल्पे आचमनयोगो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥२॥ प्राणायामत्रयेणैव प्रातःसंध्यां समाचरेत् ॥ प्राणायामसमायुक्तं प्राणायाममिति स्मृतम् ॥१॥
उत्तमं नवधा चैव मध्यमं ऋतुसंख्यया ॥ अधमं त्रयमित्याहुः प्राणायामो विधीयते ॥२॥
सप्तव्याहृतिभिश्चैव प्राणायामं पुटीकृतम् ॥ व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणायामत्रयत्रिकम् ॥३॥
सव्याहृतिंसप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह ॥ त्रिः पठेदायतः प्राणान्प्राणायामः स उच्यते ॥४॥
बिंदुतः प्राणमार्गं च गायत्रीं बिंदुसंयुताम् ॥ व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणायामत्रयत्रिकम् ॥५॥
आदौ कुंभकमाश्रित्य रेचपूरकवर्जितम् ॥ व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणायामं तु कुंभकम् ॥६॥
प्राणायामसमानबिंदुसहितं बिदुत्रयं संयुतं सप्तव्याहृतिबिंदुसंपुटपरं वेदादिपादत्रयम् ॥ गायत्रीं शिरसा त्रिनाडिसहितामीड्यद्वये द्वे परे शुद्धं केवलकुंभकं प्रतिदिनं ध्यायामि तत्त्वंपदम् ॥७॥
अधमे द्वादशी मात्रा मध्यमे द्विगुणा मता ॥ उत्तमा त्रिगुणा प्रोक्ता प्राणायामं निरुंधयेत् ॥८॥
रेचकं कुंभकं चैव पूरकं वायुरोधनम् ॥ एवं क्रमेण युंजीत प्राणायामस्य लक्षणम् ॥९॥
निषिद्धं रेचकं ज्ञेयं पूरकं च तथैव च ॥ अमोघं कुंभकं प्रोक्तं प्राणायामं प्रकीर्तितम् ॥१०॥
अघोषनिर्घोषगमागमस्थं नाडीद्वयं रेचकपूरकं च ॥ कुंभोपमं पूर्णघटप्रकारं ह्येवंविधं स्याच्छ्वसनस्य साध्यम् ॥११॥
शब्दपूर्वकमभ्यासं शब्दव्यंजनसंयुतम् ॥ भिन्नभांडोदकं यद्वच्छ्वसनस्य व्यतिक्रमात् ॥१२॥
इडापिंगलासुषुम्नाच्छद्बपूर्वव्यतिक्रमात् ॥ तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तमिति शंकरभाषितम् ॥१३॥
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा ॥ ततो धर्मं समाश्रित्य प्राणायामविदो विदुः ॥१४॥
नासापुटं त्वंगुलीभिः पंचभिर्वायुरोधनम् ॥ शनैः शनैस्तु निःशब्दं प्राणायामं निरोधयेत् ॥१५॥
नासिकापुटमंगुल्या निधायैकेन मारुतम् ॥ आकृष्य धारयेदग्निं प्राणायामं विचिंतयेत् ॥१६॥
प्राणायामेन ज्ञात्वा च स्नापयेच्चिन्मयं शिवाम् ॥ तदादौ मानसं कुर्यात्तदा केवलकुंभकम् ॥१७॥
पंच प्रजालकं चैव प्राणायामं समाचरेत् ॥ पूजामानससंयुक्तं प्राणायामफलं भवेत् ॥१८॥
पंचपूजां विना येन प्राणायामं करोति यः ॥ तस्य निष्फलितं कर्म विश्वामित्रेण भाषितम् ॥१९॥
लकारं च हकारं च यंकारं च रकारयोः ॥ चकारमितिविख्यातं पंचपूजात्मकं जपेत् ॥२०॥
सिद्धासनसमो नास्ति न कुंभेनैव लोपमम् ॥ मंददृष्टिसमो नास्ति प्राणायामं समभ्यसेत् ॥२१॥
अंतश्चेतो बहिश्चक्षुरधः स्थपय सुखासनम् ॥ समत्वं च शरीरस्य प्राणायामं समभ्यसेत् ॥२२॥
अस्त्रप्रयोगकाले तु प्राणायामं च लंबकः ॥ प्राणायामबलोपेत उपसंहारकारकः ॥२३॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्राणायामं समाचरेत् ॥ सर्वधर्मपरित्यागी स महापातकी भवेत् ॥२४॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे प्राणायामयोगो नाम तृतीयः परच्छेदः ॥३॥ पादंपादं क्षिपेन्मूर्ध्नि प्रतिप्रणवसंपुटम् ॥ निक्षिपेदष्टपादं तु अधो यस्य क्षयाय च ॥१॥
अष्टाक्षरं नवपदं पदादौ ब्रह्महा भवेत् ॥ ऋचादौ मार्जनं कुर्य्यात्सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥२॥
यस्य क्षयाय पादं तु आपः सिंधुत्वमेव च ॥ भूमौ पादौ विनिःक्षिप्य इतरन्मूर्ध्नि विन्यसेत् ॥३॥
प्रातः सूर्यश्चमंत्रेण सायमग्निः पिबेज्जलम् ॥३॥
आफ पुनंतु मध्याह्ने क्रमेणाचमनं न्यसेत् ॥४॥
आपोहिष्ठेति मंत्रेण नवपादं द्विवारकम् ॥ हिरण्यवर्णाश्चत्वारो दधिमंत्रं द्विवारकम् ॥५॥
पदादौ क्लीं पदं मध्ये पदांते मार्जनं भवेत् ॥ ऋचादौ प्रणवं चोक्त्वा ऋचोंऽते मार्जनं भवेत् ॥६॥

सत्वं रजस्तमो जातं मनोवाक्कायिकादिषु ॥
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिनवैतान्नवभिर्दहेत् ॥७॥
दधिद्विमार्ज्जनं चैव हिरण्यादिचतुष्टयम् ॥
कामक्रोधदिषड्वर्गं मार्ज्जयेत्सर्वमार्ज्जनम् ॥८॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे मार्ज्जनयोगो नाम चतुर्थः
परिच्छदः ॥४॥ संध्यावंदनवेलायामर्घ्यं दद्यात्त्रयं बुधः ॥
सायं प्रातः समानं स्यान्मध्याह्ने च पृथग्विधिः ॥१॥
एकं मध्याह्नकाले तु सायं प्रातस्त्रयस्त्रयः ॥ एवं ज्ञात्वा
सृजेदर्घ्यं सूर्यं नक्षत्रपूर्वकम् ॥२॥
एकं शस्त्रास्त्रनाशाय एकं हनननाशने ॥ असुराणां
वधायार्घ्यं प्रायश्चित्तार्थसंयुतम् ॥३॥
दद्यात्केवलगायत्र्या मूढो ह्यर्घ्यं तु यो द्विजः ॥ स
बिन्दुब्राह्मणो नाम सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥४॥
ब्रह्मास्त्रं नाभिजानाति स विप्रः शूद्र एव हि ॥ तस्य
कर्मादिकं जातं धर्माद्यं निष्फलं भवेत् ॥५॥
बीजमंत्रेण गायत्र्याः प्रणवेत्यभिधीयते ॥६॥
देहस्तु दंड इत्युक्तः संज्ञाकवचमेव हि ॥ सर्वांगानि पदो
मंत्रं सर्वमंत्रे त्वयं विधिः ॥७॥
अस्त्राष्टवारतः प्रोक्ता गायत्री व्याप्य उच्यते ॥
एतत्षण्मन्त्रकं ज्ञात्वा अर्घ्यं दद्याद्धि नामतः ॥८॥
एकं मध्याह्नकाले च प्रायश्चित्तं द्वितीयकम् ॥ अर्घ्यद्व
यं तु मध्याह्ने तथा चोक्तं महामुने ॥९॥
अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थं प्रायश्चित्तं चतुर्थकम् ॥ सायं
प्रातर्द्विजादीनामेवमेव विधिः क्रमात् ॥१०॥
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं च ब्रह्मशीर्षं च संयुतम् ॥
अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थमेवमेवमुदाहृतम् ॥११॥
शस्त्रमादौ ततो दंडं शिखात्रीणि समुच्चरेत् ॥ पर्यायेण
त्रिरुच्चार्य्यमंजलिं च त्रिधाहरेत् ॥१२॥
अर्घ्यत्रयं प्रयोक्तव्यमभिमंत्रितमंजलिम् ॥ त्रियुक्तं
विसृजेतर्घ्यमसुराणां वधाय च ॥१३॥
अस्त्रदंडशिरोयुक्तमर्घ्यमेकं समुच्चरेत् ॥ अस्त्रं
वाहनरक्षोघ्नमेकांजलिजलं क्षिपेत् ॥१४॥
प्रायश्चित्तं द्वितीयार्घ्यमसुराणां वधाय च ॥ प्रदक्षिणं
पृथिव्यां च सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१५॥
असावादित्यमंत्रेण ब्रह्मेत्यादि प्रदक्षिणम् ॥ आपोभिरयुतं
कार्यं सर्वाघौघनिकृंतनम् ॥१६॥
हंसहंसेतिमंत्रस्य बृहत्यंतं समुच्चरन् ॥ शिरसा दंडमस्त्रं
च सम्मुख इव निक्षिपेत् ॥१७॥
उपमंत्रं समुच्चार्य्य शिरस्तत्र समुद्धरेत् ॥ अर्घ्यमेकं तु
मध्याह्ने तथा मुक्तं महामुने ॥१८॥
तर्ज्जन्यंगुष्ठयोगेन राजसी मुद्रिका भवेत् ॥
राक्षसीमुद्रिकादत्तं तत्तोयं रुधिरं भवेत् ॥१९॥
निक्षिपेद्यदिमूढात्मा रौरवं नरकं व्रजेत् ॥
अंगुष्ठच्छायापतितं देवतामुद्रिका भवेत् ॥२०॥
देवतामुद्रिकादत्ते सर्वैः पापैः प्रमुच्यते ॥ एवं
विज्ञानमात्रेण सद्यः सिद्धिर्भविष्यति ॥२१॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पेऽर्घ्यदानयोगो नाम पंचमः
परिच्छेदः ॥५॥ ओमित्येकाक्शह्नं चोक्तं न्यासध्यानपुरः
सरम् ॥ यथाशक्ति जपं कुर्य्यान्नित्यकर्म समाचरेत्
॥१॥ शुचिर्भूमौ लिखेद्यंत्रं बीजं बिंदुसमन्वितम् ॥
बीजराजं लिखेन्मध्ये वह्निमंडलमध्यगे ॥२॥
चतुरस्त्रं ततो हस्तं सुदृढं मृदु निर्मलम् ॥
तत्रोपरिसमासीनो गायत्रीजपमाचरेत् ॥३॥
खशुद्धिं भूतशुद्धिं च कृत्वा शोषणदाहनम् ॥ प्लवने च
ततः कुर्यात्प्रणवादित्रयं क्षरैः ॥४॥
प्राणायामसमायुक्तश्चांतर्बाह्यं समातृकात् ॥ देहे न्यासं
ततः कुर्यात्करागन्यासमाचरेत् ॥५॥
ऋषिं न्यसेत्पूर्वमुखे तथा छन्द उदीरितम् ॥ देवता हृदि
विन्यस्य गुह्ये बीजमिति स्मृतम् ॥६॥
शक्तिं विन्यस्य चाधारे पादयोः कीलकं न्यसेत् ॥ एवं
न्यासविधिं कृत्वा ऋष्यादिन्यासपूर्वकम् ॥७॥
आवाहनादिभेदं च दश मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ आयातु वरदा
देवी अंगप्रत्यंगसंगमे ॥८॥
प्रातर्गायत्री सावित्री मध्याह्ने च सरस्वती ॥ एवमावाहनं
ज्ञात्वा संध्यायां जपमाचरेत् ॥९॥
हस्ताभ्यामनुलोमेन आवाहनमनाहुते ॥ नामत्रयमृषिश्छंदः

क्रमेणावाहनं भवेत् ॥१०॥
मूलाधारेण गायत्री सावित्री मणिपूरके ॥ द्वादशारे
सरस्वती छंदो नाडीत्रयं तथा ॥११॥
ऋषिर्मूर्घ्नि सुविज्ञेय आवाहनमनुक्रमात् ॥ आवाहनं
यथोक्तं च यथोक्तं तु विसर्ज्जनम् ॥१२॥
एवं जानीहि विप्रेन्द्र जपध्यानं समाचरेत् ॥ आवाहनं
ततो न्यासं विना जाप्यं तु निष्फलम् ॥१३॥
चतुर्विंशतिगायत्रीं प्रातः स्नात्वा जपेन्मनुम् ॥ प्राणायामं
ततः कुर्यान्न्यासध्यानं समाचरेत् ॥१४॥
करन्यासं ततः कुर्यादंगन्यासं तथैव च ॥
चतुश्चतुश्चतुष्कं च चतुश्चतुश्चतुश्चतुः ॥१५॥
षडंगं विन्यसेद्देवीं गायत्रीं वेदमातरम् ॥
व्याहृतित्रयमुच्चार्य अनुलोमं च बिभ्रतः ॥१६॥
करांगन्यासमारभ्य गायत्री पूर्ववद्भवेत् ॥ अकारं च उकारं
च मकारं बिंदुसंयुतम् ॥१७॥
अनुलोमं न्यसेत्तत्र त्रिरक्षरसमन्वितम् ॥
चतुर्विंशतिवर्णानां पल्लवोऽयमुदाहृतः ॥१८॥
चतुरक्षरसंयुक्तं करांगन्यासमाचरेत् ॥ तूर्यपादं विना
न्यासमाद्यंतं प्रणवैः सह ॥१९॥
व्याहइत्त्रयमुच्चार्य चतुरक्षरसंयुतम् ॥ पुनर्व्याहृत्मुच्चार्य
करांगन्यासमाचरेत् ॥२०॥
पादंपादं द्विपादं च प्रतिप्रणवसंपुटम् ॥
करांगन्याससंयोगात्षड्भागैस्त्रिपदा भवेत् ॥२१॥
अंगुष्ठादिचतुर्वर्णा अनुलोमक्रमेण तु ॥ हृदयादिचतुर्वर्णाः
क्रमेणैव विलोमतः ॥२२॥
चतुर्वर्णान् विना यस्तान्विपर्णं संन्यसेद्द्विजः ॥ तस्य
वैफल्यमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२३॥
अंगन्यासं करन्यासं देहन्यासं विना जपेत् ॥ अंधत्वं
बैरत्वं च मूकत्वं प्राप्नुयान्मनुः ॥२४॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे आवाहनादियोगो नाम षष्ठः
परिच्छेदः ॥६॥ ध्यानं मुद्रां नमस्कारं गुरुमंत्रं तथैव च
॥ संयोगमात्मसिद्धिञ्च पञ्चधैवं विभावयेत् ॥१॥
प्रातः केवलगायत्री मध्याह्ने व्याहृतीयुता ॥ सायाह्ने
तूर्यया युक्ता नित्यजाप्यं समाचरेत् ॥२॥
पादादौ रेफसंयुक्ता गायत्रीजपलक्षणम् ॥३॥
पादत्रयं समुच्चार्य प्रतिलोमं ततश्चरेत् ॥ रेफबिंदू
तदाद्यन्तौ गायत्रीजपमाचरेत् ॥४॥
गायत्रीं पूर्वमुच्चार्य्य तुर्य्यांत्यादिविलोमतः ॥ सायंसंध्यां
जपेदेवं साधकः सर्वसिद्धये ॥५॥
तकारादियकारांतमनुलोमं विलोमतः ॥ तुर्यपादं विना मंत्रं
प्रातःसंश्यामथाचरेत् ॥६॥
भकारादिहिकारांतं मध्यपादमिति स्मृतम् ॥ तार्तीयं तु
प्रयोक्तव्यं तदर्घ्ये प्रथमं भवेत् ॥७॥
धकारादियकारांतं तृतीयं पादमुच्चरेत् ॥ प्रथमं च द्वितीयं
च त्रिविधं जपलक्षणम् ॥८॥
कालत्रयं त्रिधा जाप्यं त्रिकालं त्रिविधं स्मृतम् ॥
अनुलोमविलोमाभ्यां चिरं सिद्धिमवाप्नुयात् ॥९॥
चतुर्विंशतिवर्णानामनुलोमं जपेदपि ॥ पूर्णजपयफलं
नास्ति अर्द्धजाप्यफलं लभेत् ॥१०॥
चतुष्पादं तु गायत्री अनुलोमविलोमतः ॥ नित्यं जाप्यं
प्रकुर्वीत भुक्तिं मुक्तिं लभेन्नरः ॥११॥
नित्यनैमित्तकाम्यादिव्यस्ताव्यस्तं जपेन्मनुम् ॥
प्रातर्मध्याहनसायाहनं जपेदेवं क्रमेण तु ॥१२॥
जपपारायणं कुर्य्यात्त्रिपदासंपुटं नव ॥ एवं ज्ञात्वा
जपेन्नित्यमेकः कोटिगुणं भवेत् ॥१३॥
कालत्रयं यथोक्तं च जाप्यपारायणं परम् ॥
अनंतफलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥१४॥
अष्टोत्तरसहस्रं वा अष्टोत्तरशतं तु वा ॥
अष्टाविंशतिमेवाथ गायत्रीदशकं जपेत् ॥१५॥
ॐकारः पुरुषश्चैव गायत्री सुंदरी तथा ॥ तयोः
संयोगकाले तु वस्त्रमाच्छाद्य गण्यते ॥१६॥
वरेण्यं विरलं चोक्त्वा जपकाले विशेषतः ॥ पारायणेषु
युक्तं स्यादन्यथा विफला भवेत् ॥१७॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे त्रिकालजपयोगो
नाम सप्तमः परिच्छेदः ॥७॥
॥ इति विश्वामित्रकृतश्रीगायत्रीकल्पः सम्पूर्णः ॥

अथ श्रीगायत्रीपद्धतिः

ब्रह्मविष्णुशिवाराध्यां गायत्रीं लोकपावनीम् ॥ नमस्कृत्यानुरोधेन लिखेयं पद्धतिं क्रमात् ॥१॥ साधको ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय यथोक्तं शौचं कृत्वा नद्यादौ स्नानं कृत्वा प्राणायामत्रयं कृत्वा अर्घ्यांतां संध्यां कुर्यात् । प्राणायामो यथा ॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छंदः परमात्मा देवता शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोघ ॥ ब्रह्मणे नमः शिरसि ॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ परमात्मदेवतायै नमः हृदये ॥ करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरितक्षयार्थं न्यासं करिष्ये ॥ व्याहृतीनां जमदग्निभरद्वाजात्रिगौतमकश्यपविश्वामित्रवसिष्ठादिभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ सप्तर्चितनिलसवितृप्रजापति वरुणेंद्रविश्वेदेवदेवताभ्यो नमः मुखे ॥ गात्र्युष्णिग नुष्ठुब्बृहती पंक्ति त्रिष्टुब्जगतीछंदोभ्यो नमः हृदि ॥ एवं करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरितक्षयार्थे गायत्रीन्यासः ॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि ॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ परमात्मदेवतायै नमः हृदये ॥ ॐ भूः नमः हृदये ॥ ॐभुवः नमः मुखे ॥ ॐस्वः नमः दक्षांसे ॥ ॐमहः नमः वामांसे ॥ ॐजनः नमः दक्षिणोरौ ॥ ॐ तपः नमः वामोरौ ॥ ॐ सत्यं नमः जठरे ॥ इति व्याहृतिन्यासः ॥ अथाक्षरन्यासः ॥ ॐतत् नमः गुल्फयोः ॥ ॐसं नमः पदपार्श्वयोः ॥ ॐविं नमः जान्वोः ॥ ॐतुं नमः पादमुखयोः ॥ ॐर्वं नमः जंघयोः ॥ ॐरें नमः नाभौ ॥ ॐणिं नमः हृदये ॥ ॐ यं नमः कंठे ॥ ॐभं नमः हस्तयोः ॥ ॐ र्गों नमः मणिबंधयोः ॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः ॥ ॐ वं नमः बाहुमूलयोः ॥ ॐस्यं नमः आस्ये ॥ ॐधीं नमः नासापुटयोः ॥ ॐमं नमः कपोलयोः ॥ ॐहिं नमो नेत्रयोः ॥ ॐधिं नमः कर्णयोः ॥ ॐयों नमः भ्रूमध्ये ॥ ॐयों नमः मस्तके ॥ ॐनः नमः पश्चिमवक्त्रे ॥ ॐप्रं नमः उत्तरवक्त्रे ॥ इत्यक्षरन्यासः ॥ अथ पदन्यासः ॥ ॐतत् नमः शिरसि ॥ ॐसवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ ॐवरेण्यं नमः नेत्रयोः ॥ ॐभर्गः नमः मुखे ॥ ॐदेवस्य नमः जठरे ॥ ॐधीमहि नमः हृदये ॥ ॐधियः नमः नाभौ ॥ ॐयः नमः गुह्ये ॥ ॐनः नमः जान्वोः ॥ ॐप्रचोदयात् नमः पादयोः ॥ ॐआपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि ॥ इति पदन्यासः ॥ अथ पादन्यासः ॥ ॐतत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादपर्यंतम् ॥ ॐभर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यन्तम् ॥ ॐधियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्धादिहृदयांतम् ॥ ॐपरोरजसे सावदोम् इति मूर्ध्नि विन्यसेत् ॥ अथ षडंगन्यासः । ॐब्रह्मणे हृदयाय नमः ॥ ॐविष्णवे शिरसे स्वाहा ॥ ॐरुद्राय शिखायै वषट् ॥ ॐईश्वराय कवचाय हुम् ॥ ॐसदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐसर्वात्मने अस्त्राय फट् ॥ इति मंत्रेणोर्ध्वाधस्तालत्रयं कृत्वा छोटिकमुद्रया दिग्बंधनं विधाय मूलेन व्यापकं कुर्य्यात् ॥ इति षडंगम् ॥ अथ लयांगन्यासः ॥ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं त्यादचोप्रनः योयोधिहिमधीस्यवदेर्गोभण्यंरेर्वतुवित्सतस्वःवःर्भुभू ॐ इति हृदयादिमुखांतम् ॥ एवमेव हृदयादिकेशांतम् तथैव व्यापयेत् ॥ इति लयांगन्यासः ॥ इति विन्यस्य पीठन्यासं कुर्यात् ॥ ॐमं मंडूकाय नमः मूलाधारे ॥

ॐकं कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने ॥ ॐमं मूलप्रकृत्यै नमः नाभौ ॥ ॐआं आधारशक्तये नमः हृदये ॥ पुनस्तत्रैव ॥ कं कूर्माय नमः ॥ अं अनन्ताय नमः ॥ वं वराहाय नमः ॥ धं धरिण्यै नमः ॥ सं सुधासिन्धवे नमः ॥ रं रत्नद्वीपाय नमः ॥ मं मणिमंडपाय नमः ॥ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः ॥ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ धं धर्माय नमः दक्षांसे ॥ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांशे ॥ वं वैराग्याय नमः वामोरौ ॥ ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ अं अधर्माय नमः मुखे ॥ अं अज्ञानाय नम वामपार्श्वे ॥ अं अवैराग्याय नमः नाभौ ॥ अं अनैस्व्हर्याय नमः दक्षपार्श्वे ॥ पुनर्हृदि । अं अनंताय नमः ॥ अं अंबुजाय नमः ॥ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ सं संविन्नालाय नमः ॥ सं सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः ॥ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ पं पंचाशद्वर्णकर्णिकायै नमः ॥ ॐ मं दशकलात्मने वह्निमंडलाय नमः ॥ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमंडलाय नमः ॥ उं षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय नमः ॥ सं सत्त्वाय नमः ॥ रं रजसे नमः ॥ तं तमसे नमः ॥ आं आत्मने नमः ॥ अं अंतरात्मने नमः ॥ पं परमात्मने नमः ॥ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ मां मायातत्त्वाय नमः ॥ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ततोऽष्टदले रां दीप्तायै नमः ॥ रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ रूं जयायै नमः ॥ रें भद्रायै नमः ॥ रैं विभूत्यै नमः ॥ रों विमलायै नमः ॥ रौं अमोधायै नमः ॥ रं विद्युतायै नमः ॥ पीठमध्ये । रः सर्वतोमुख्यै नमः ॥ तदुपरि नित्यपूजाचक्रं विधाय ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रांबिकात्मकाय सौरपीठात्मने नमः ॥ इति पीठन्यासः ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत् ॥ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छाअयैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं भजे ॥ इति ध्यात्वा बहिः पूजोक्तरीत्या देवीं सौवर्णी च संपूज्य गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलाद्युपचारान्प्रकल्प्य किंचिज्जपेत् ॥ स्वाग्तं देवदेवेशि सन्निधौ मे महेश्वरि ॥ गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाविताम् ॥१॥ दशधा मूलं जपित्वा जपं देव्याः करे समर्प्य मनसा पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षणं तदात्मकं विभाव्य वरदाभयांकुशकशाकपालगुणशंखचक्राब्जयोन्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ इति मानसी पूजा ॥ अथ बहिःपूजार्थमनुज्ञाप्य बहिःपूजां कुर्यात् । स्ववामे अस्त्रक्षालितत्रिपदिकां निधाय तदुपरि अस्त्रक्षालितं कलशं निधाय शुद्धतोयं मूलेनापूर्य्य मूलेनाष्टकृत्वोऽभिमंत्र्य जातवेदसे इत्यृचा त्र्यंबकमितिऋचा गायत्र्या च सकृतभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत् ॥ इति कलशसंस्थापनम् ॥ अथ सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः ॥ अस्त्रक्षालितां त्रिपदिकां निधाय तत्रास्त्रक्षालितं ताम्रपात्रं निधाय मूलेन शुद्धजलमापूर्य्य मूलेनाष्टवारं संमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत् ॥ इति सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः ॥ अथ विशेषार्घ्यस्थापनविधिः ॥ पीठात्मनोर्मध्ये चंदनेन कनिष्ठिकया त्रिकोणं षट्कोणं च कृत्वा । अग्नये हृदयाय नमः ॥ ईशानाय शिरसे स्वाहा ॥ निरृतये शिखायै वषट्॥ वायवे कवचाय हुम् ॥ पुरः नेत्रत्रयाय बौषट्॥ पूर्वे अस्त्राय फट् ॥ सामान्यार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य चंदनेन पूजयेत् ॥ त्रिकोणे आधारं स्थापयामि ॥ आं आधारशक्तिं स्थापयामि ॥ पृथिवीद्वीपं स्थापयामि ॥ तत्र पूजा ॥ मं अग्निमंडलाय दशकलात्मने नमः ॥

धूं	धूम्रायै	नमः	॥१॥
उं	उष्मायै	नमः	॥२॥
ज्वं	ज्वलिन्यै	नमः	॥३॥
ज्वां	ज्वालिन्यै	नमः	॥४॥
विं	विस्फुलिंगिन्यै	नमः	॥५॥
सु	सुश्रियै	नमः	॥६॥

सुं सुरूपायै नमः ॥७॥
कं कपिलायै नमः ॥८॥
हं हव्यवाहनायै नमः ॥९॥
कं कव्यवाहनायै नमः ॥१०॥
इति आधारपूजा ॥ आधारोपरि अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य पात्रोपरि पूजा ॥ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ तं तपिन्यै नमः ॥१॥
तां तापिन्यै नमः ॥२॥
धूं धूम्रायै नमः ॥३॥
मं मरीच्यै नमः ॥४॥
ज्वां ज्वालिन्यै नमः ॥५॥
रुं रुच्यै नमः ॥६॥
सुं सुषुम्णायै नमः ॥७॥
भों भोगदायै नमः ॥८॥
विं विश्वायै नमः ॥९॥
बों बोधिन्यै नमः ॥१०॥
धां धारिण्यै नमः ॥११॥
क्षं क्षमायै नमः ॥१२॥
इत्यर्घ्यपात्रपूजा ॥ विलोममातृकामुच्चरन् शुद्धजलमापूरयेत् ॥ ॐक्षं नमः ॥ प्रणवः सर्वत्र ॥ ळं नमः ॥ हं नमः ॥ सं नमः ॥ षं नमः ॥ शं नमः ॥ वं नमः ॥ लं नमः ॥ रं नमः ॥ यं नमः ॥ मं नमः ॥ भं नमः ॥ बं नमः ॥ फं नमः ॥ पं नमः ॥ नं नमः ॥ धं नमः ॥ दं नमः ॥ थं नमः ॥ तं नमः ॥ णं नमः ॥ ढं नमः ॥ डं नमः ॥ ठं नमः ॥ टं नमः ॥ ञं नमः ॥ झं नमः ॥ जं नमः ॥ छं नमः ॥ चं नमः ॥ ङं नमः ॥ घं नमः ॥ गं नमः ॥ खं नमः ॥ कं नमः ॥ अः नमः ॥ अं नमः ॥ औं नमः ॥ ओं नमः ॥ ऐं नमः ॥ एं नमः ॥ ॡं नमः ॥ ऌं नमः ॥ ॠं नमः ॥ ऋं नमः ॥ ऊं नमः ॥ उं नमः ॥ ईं नमः ॥ इं नमः ॥ आं नमः ॥ अं नमः ॥ तत्र पूजा ॥ उं सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ अं अमृतायै नमः ॥१॥
मां मानदायै नमः ॥२॥
पूं पूषायै नमः ॥३॥
तुं तुष्ट्यै नमः ॥४॥
पुं पुष्ट्यै नमः ॥५॥
रं रत्यै नमः ॥६॥
धृं धृत्यै नमः ॥७॥
शं शशिन्यै नमः ॥८॥
चं चन्द्रिकायै नमः ॥९॥
कां कान्त्यै नमः ॥१०॥
ज्यों ज्योत्स्नायै नमः ॥११॥
श्रीं श्रियै नमः ॥१२॥
प्रीं प्रीत्यै नमः ॥१३॥
अं अङ्गदायै नमः ॥१४॥
पूं पूर्णायै नमः ॥१५॥
पूं पूर्णामृतायै नमः ॥१६॥
अंकुशमुद्रया तीर्थमावाह्य ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य शंखमुद्रां प्रदर्श्य गंधादिभिः संपूज्य मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य सामान्यार्घ्यजलेन सिंचेत् ॥ ॐ आत्मतत्त्वाय नमः ॥ ॐ विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ॐ शिवतत्त्वाय नमः ॥ परो रजसे सावदोमिति सप्तकृत्वोऽभिमंत्र्य तज्जलदेवतात्मैक्यं विभाव्य किंचित्पाअत्रांतरे गृहीत्वा पूजोपकरणसामग्रीमात्मानं च त्रिः प्रोक्षयेत् ॥ इति विशेषार्घ्यस्थापनविधिः ॥ अर्घ्यस्योत्तरे पात्रचतुष्टयं पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कार्थं संस्थाप्य सकृत्यभिमंत्र्य तोयेनापूर्य्य मूलेन त्रिवारमभिमंत्र्य न्यासक्रमेण धर्माईन्प्रोक्षणीरूपेण संपूज्य तस्मिन्पीठोपरि देवतां विभाव्य सर्वांगेषु पंचपुष्पांजलिं दत्वा मूलाधारात्कुंडलीमुत्थाप्य द्वारे स्थित्वा तत्र परमात्मना संयोज्य तद्दृष्ट्याऽमृतधारया देवीं प्रीणयित्वा देवीं प्रसन्नां विभाव्य स्वस्मिन्देव्यात्मैक्य

विभाव्यासनादिदीपान्तानुपचारान्प्रकल्पयेत् ॥ (बाह्य नैवेद्यं न देयमिति संप्रदायः शिवो भूत्वा शिवं यजेदिति वचनात् ॥) अथ पीठपूजा ॥ मं मंडूकाय नमः ॥ कां कालाग्निरुद्राय नमः ॥ मूं मूलप्रकृत्यै नमः ॥ आं आधारशक्त्यै नमः ॥ कूं कूर्माय नमः ॥ अं अनंताय नमः ॥ वं वराहाय नमः ॥ धं धरित्र्यै नमः ॥ सुं सुधासिंधवे नमः ॥ रं रत्नद्वीपाय नमः ॥ मं मणिमंडपाय नमः ॥ कं कल्पतरवे नमः ॥ स्वं स्बर्णवेदिकायै नमः ॥ तदुपरि रत्नसिंहासनाय नमः ॥ आग्नेयादिकोणेषु ॥ धं धर्माय नमः ॥ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ व वैराग्याय नमः ॥ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ पूर्वादिदिक्षु ॥ अं अधर्माय नमः ॥ अं अज्ञानाय नमः ॥ अं अवैराग्याय नमः ॥ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ मध्ये ॥ अं अनंताय नमः ॥ अं अंबुजाय नमः ॥ आं आनंदकन्दाय नमः ॥ सं सविन्नालाय नमः ॥ सं सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः ॥ पं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ विं विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॥ पं पंछाशद्वर्णकर्णिकायै नमः ॥ मं दशकलात्मने वह्निमंडलाय नमः ॥ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमंडलाय नमः ॥ उं षोडशकलात्मने सोममंडलाय नमः ॥ सं सत्त्वाय नमः ॥ रं रजते नमः ॥ तं तमसे नमः ॥ आं आत्मने नमः ॥ अं अंतरात्मने नमः ॥ पं परमात्मने नमः ॥ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः ॥ मां मायातत्त्वाय नमः ॥ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ पं परतत्त्वाय नमः ॥ एतान्युपर्युपरि ॥ पीठस्य पूर्वादिभागे । रां दीप्तायै नमः ॥ रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ रूं जयायै नमः ॥ रें भद्रायै नमः ॥ रैं विभूत्यै नमः ॥ रों विमलायै नमः ॥ रौं अमोघायै नमः ॥ रं विद्युतायै नमः ॥ रः सर्वतोमुख्यै नमः ॥ पीठमध्ये ॥ परदेवतायै नमः ॥ तदुपरि बिंदुत्रिकोण वृत्तदलाष्टकरेखात्मकं चतुरस्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यंत्र संस्थाप्य ब्रह्मविष्णुरुद्रबिंबात्मकसौरपीठाय नमः ॥ इति पीठ पूजयेत् ॥ इति पूजा समाप्ता ॥

अथ पूर्वोक्तऋष्यादिन्यासं कृत्वा प्राणानायम्य मूलेन व्यापकं गायत्र्युच्चारपूर्वकं हस्ता भ्यां पुष्पांजलि गृहीत्वा नासारंध्रेण पुष्पसंचयकल्पितयंत्रमये कल्पितमूर्तिं निक्षिप्य तत्तत्स्थानगतानि आवरणानि ध्यात्वा आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽवाहनं सन्निधापनं इहावाहिता भव ॥ पुष्पेण देव्या हृदि करं निधाय " आं ह्रीं क्रौं " इति द्वादशवारं जपेत् ॥ ततो भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां विधाय पूजयेत् ॥ " नमः " इतिमंट्रेण देव्याः पादांबुजे पाद्यं दद्यात् ॥ " स्वाहे " तिमंत्रेण मूर्ध्न्यर्घ्यं " वमि " ति मंत्रेण मुखे आचमनम् ॥ ततः स्नानशालायां सुगंधिसलिलैः स्नापयित्वा मूलेन शतसंख्येन वा राजोपचारैः सम्पूज्य देवतां प्रसन्नां नमः ॥ नैरृत्यकोणे सावित्र्यै नमः ॥ वायव्यकोणे सरस्वत्यै नमः ॥ त्रिकोणांतरालेषु ब्रह्मणे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ वायव्यकोणे सरस्वत्यै नमः ॥ त्रिकोणांतरालेषु ब्रह्मणे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ मूलेन पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरनार्चनम् ॥ " अनेन पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ ततो द्वितीयावरणम् ॥ अष्टदलेषु पूर्वादिदिक्षु ॥ ॐ आदित्याय नमः ॥ भानवे नमः ॥ भास्कराय नमः ॥ रवये नमः ॥ आग्नेयादिकेशरेषु ॥ उषायै नमः ॥ प्रज्ञायै नमः ॥ प्रभायै नमः ॥ संध्यायै नमः ॥ मूलमुच्चरन् " अभीष्टसिद्धिं मे देहि० " इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ अथ तृतीयम् ॥ हृदि ब्रह्मणे नमः । हृदयाय नमः ॥ शिरसि विष्णवे नमः । शिरसे स्वाहा ॥ ईशाने रुद्राय नमः । शिखायै वषट् ॥ नैरृत्ये ईश्वराय नमः । कवचाय हुम् ॥ वायव्ये सदाशिवाय नमः । नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ आग्नेये सर्वात्मने नमः । अस्त्राय फट् ॥ तत्तद्देवताभ्यो नमः ॥ मूलेन । " अभीष्ट० " ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ अथ चतुर्थम् ॥ तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदलेषु ॥ ॐ अमृतायै नमः ॥ नित्यायै नमः ॥

विश्वंभरायै नमः ॥ ईशान्यै नमः ॥ प्रभायै नमः ॥ जयायै नमः ॥ विजयायै नमः ॥ शांत्यै नमः ॥ मूलेन पुष्पांजलिम् " अभीष्टसिद्धिं० " ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ अथ पंचमम् ॥ तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐकांत्यै नमः ॥ दुर्गायै नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ विश्वरूपायै नग्नः ॥ विशालायै नमः ॥ ईशानायै नमः ॥ व्यापिन्यै नमः ॥ विमलायै नमः ॥ मूलमुच्चरन् " अभीष्टसिद्धिं० " इति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ अथ षष्ठम् ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐ तमोपहारिण्यै नमः ॥ सूक्ष्मायै नमः ॥ विश्वयोन्यै नमः ॥ जयावहायै नमः ॥ पद्मालयायै नमः ॥ परायै नमः ॥ शोभायै नमः ॥ पद्मरूपायै नमः । मूलेन पुष्पांजलिम् " अभीष्टसिद्धिं० " इति षष्ठावरणम् ॥ अथ सप्तमम् ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐआं ब्राह्म्यै नमः ॥ ॐ ईं माहेश्वर्यिअ नमः ॥ ॐ ऊं कौमार्यै नमः ॥ ॐॠं वैष्णव्यै नमः ॥ ॐलृं वाराहयै नमः ॥ ओं इन्द्राण्यै नमः ॥ ॐऔं चामुंडायै नमः ॥ ॐअः अरुणायै नमः ॥ मूलमुच्चार्य " अभीष्ट० " पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ अथाष्टमावरणम् ॥ मध्ये तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ सूं सूर्याय नमः ॥ ॐसों सोमाय नमः ॥ ॐभौं भौमाय नमः ॥ ॐबुं बुधाय नमः ॥ ॐगुं गुरवे नमः ॥ ॐशुं शुक्राय नमः ॥ ॐशं शनैश्चराय नमः ॥ ॐरां राहवे नमः ॥ ॐकें केतवे नमः ॥ मूलेन " अभीष्ट० " पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ अथ नवमम् ॥ पूर्वादिदशदिक्षु ॥ ॐलं इंद्राय नमः ॥ ॐरं अग्नये नमः ॥ ॐयं यमाय नमः ॥ ॐक्षं निरृतये नमः ॥ ॐवं वरुणाय नमः ॥ ॐयं वायवे नमः ॥ ॐसं सोमाय नमः ॥ ॐईं ईशानाय नमः ॥ ॐब्रं ब्रह्मणे नमः ॥ ॐअं अनंताय नमः ॥ मूलेन " अभीष्ट० " पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमारणम् ॥ अथ दशमम् ॥ ॐवं वज्राय नमः ॥ शं शक्तये नमः ॥ ॐदं दंडाय नमः ॥ ॐखं खड्गाय नमः ॥ ॐपां पाशाय नमः ॥ अं अंकुशाय नमः ॥ ॐगं गदायै नमः ॥ ॐत्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ॐचं चक्राय नमः ॥ ॐअं अंबुजाय नमः ॥ मूलेन " अभीष्ट० " पुष्पांजलि दद्यात् ॥ इति दशमावरणम् ॥ पुनः पंचोपचारैः संपूज्य नीराजनं पुष्पांजलिं दत्त्वा यस्य स्मृत्येति पूजां समर्प्य जपफलं देव्याः करे समर्प्य पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षमाप्य स्वहृदि उद्वास्य पुनरृष्यादि न्यासं कृत्वा निर्माल्यं विसृजेत् ॥ इति नित्यपूजापद्धतिः समाप्ता ॥ अथनैमित्तिकमाह ॥ गुरुजन्मदिवसे स्वजन्मदिवसे जन्मनक्षत्रे विद्याप्राप्तिदिवसे पूर्णायां व्यतीपाते वा विशेष्यं पूजयेत् ॥ इति नैमित्तिकम् ॥ अथ पुरश्चरणविधिः ॥ कर्ता स्वशक्त्या गुरुं संपूज्य तदनुज्ञया देहशुद्ध्यर्थं चांद्रायणं प्राजापत्यं वा समाचरेत् ॥ पुरश्चरणदिवसे सुगंधसलिलैः स्नात्वा पूजाप्रदेशे चतुरस्रं चतुर्द्वारं मंडपं विधाय हृष्टधीर्वाङ्नियमितो मिताहारो जितेंद्रियः प्रातरारभ्यामध्याह्नं जपेत् ॥ एं च चतुर्विंशतिलक्षं जपेत् ॥ तदुक्तम् ॥ उक्तलक्षविधानेन कृत्वा विप्रो जितेन्द्रियः ॥ क्षीरौदनं तिलं दूर्वाक्षीरद्रुमसमिद्द्रुमान् ॥ अष्टद्रव्येण च पृथक्सहस्रत्रितयं हुनेत् ॥ मंत्रफलसिद्ध्यै जपदशांशहोमः ॥ तद्दशांशेन तर्पणम् ॥ तद्दशांशेन मार्जनम् ॥ तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति पुरश्चरणविधिः ॥ अथ काम्यमुच्यते ॥ विद्यार्थी वाग्भवाद्यां लक्ष्मीकामः श्रीबीजं वश्यार्थे कामबीजं सर्वकामार्थे मायाबीजम् आयुःकामार्थे मृत्युंजयं चतुरक्षरीसहितं जपेत ॥ इति काम्यविधिः ॥ तत्त्वसंख्यासहस्राणि समंत्रं जुहुयात्तिलैः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुश्च विंदति ॥ आयुष्यं साज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा ॥ पर्वांकितैस्तिलैर्मंत्री जुहुयात्त्रिसहस्रकम् ॥ अरुणाक्षैस्त्रिमध्वाज्यैः प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः ॥ बहुना किमिहोक्तेन यथावत्साधु साधिता ॥ द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धकामदुहा स्मृता ॥ इति श्रीगायत्रीपद्धतिः संपूर्णा ॥

श्रीगायत्र्युपनिषत् (हृदयम्)

नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति । त्वं ब्रूहि भगवन् गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्तंते । तमसस्तु परं ज्योतिष्कः पुरुषः स्वयम् ॥ भूर्विष्णुरिति ह ताः स्वांगुल्या मथेत् । मथ्यमानात्फेनो भवति । फेनाद् बुद्वुदो भवति । बुद्बुदादंडं भवति । अंडवानात्मा भवति । आत्मनः आकाशो बह्वति । आकाशाद्वयुर्भवति । वायोरग्निर्भवति । अग्नेरोंकारो बह्वति । ॐकारद्व्याहृतिर्भवति । व्याहृत्या गायत्री भवति । गायत्र्याः सावित्री भवति । सावित्र्याः सरस्वती भवति । सरस्वत्या वेदा भवंति । वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति । ब्रह्मणो लोका भवंति । तस्माल्लोकाः प्रवर्त्तंते । चत्वारो भवंति । वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति । ब्रह्मणो लोका भवंति । तस्माल्लोकाः प्रवर्त्तंते । चत्वारो वेदाः सांगाः सोपनिषदः सेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्त्तंते ॥ यथाग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्यानां मेरुः शिखरिणां गंगा नदीनां वसंत ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौ मंत्राणां मुख्यः ॥ गायत्र्या गायत्री छंदो भवति ॥ किं भूः किं भुवः किं स्वः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं किं तत् किं सवितुः किं बरेण्यं किं भर्गः किं देवस्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचोदयात् । भूरीति भूर्लोकः । भुव इत्यंतरिक्षलोकः । स्वरिति स्वर्लोकः । मह इति महर्लोकः । जन इति जनो लोकः । तप इति तपि लोकः । सत्यमिति सत्यलोकः ॥ भूर्भुवः स्वरोमिति त्रैलोक्यम् ॥ तदसौ तेजः यत्तेजसोऽग्निर्देवता सवितुरित्यादित्यस्य वरेण्यमित्यन्नम् ॥ अन्नमेव प्रजापतिः ॥ भर्ग इत्यापः । आपो वै भर्गः । एतावत्सर्वा देवताः देवस्येंद्रो वै दैवयीद्देवं तदिंद्रस्तस्मात्सर्वकृत् पुरुषो नाम विष्णुः । धीमहीत्यंतरात्मा यदन्तरात्मा स प्रणवः । धिय हत्यध्यात्मम् । किमध्यात्मं तत्परमं पदमित्यध्यात्मम् । यो न इति पृथिवी वै यो नः प्रचोदयात् काम इमांल्लोकान् प्रच्यवयन् यो नृशंस्योस्तोष्यस्तत्परमो धर्मः इत्येषा गायत्री ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ किंगोत्रा कत्यक्षरा कतिपदा कतिकुक्षिः कतिशीर्णा ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सांख्ह्यायनसगोत्रा गायत्री । चतुर्विंशत्यक्षरा । त्रिपदा । षट्कुक्षिः । सावित्रीकेशास्त्रयः पादा भवंति ॥ कास्याः कुक्षिः । कानि पंच शीर्षाणि । ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति । यजुर्वेदो द्वितीयः । सामवेदस्तृतीयः । पूर्वा दिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति । दक्षिणा द्वितीया । पश्चिमा तृतीया । उदीची चतुर्थी । ऊर्ध्वा पंचमी । अधरा षष्ठी कुक्षिः ॥ व्याकरणमश्याः प्रथमं शीर्ष भवति । शिक्षा द्वितीयम् । कल्पस्तृतीयम् । निरुक्तं चतुर्थम् । ज्योतिषामयनं पंचमम् ॥ किं लक्षणम् । किमु चेष्टितम् । किमुदाहृतम् । किमक्षरं दैवत्यम् ॥ लक्षणं मीमांसा। अथर्ववेदो विचेष्टितम् । छंदोविधिरित्युदाहृतम् ॥ को बर्णः । कः स्वरः । श्वेतो वर्णः । षट् स्वराणि इमान्यक्षराणि दैवतानि भवंति । पूर्वा भवति गायत्री । मध्यमा सावित्री । पश्चिमा संध्या सरस्वती ॥ प्रातःसंध्या रक्ता रत्कापक्षासनस्था रक्तांबरधरा । रक्तवर्णा रक्तगंधानुलेपना चतुर्मुखा अष्टभुजा द्रिनेत्रा दंडाक्षमालाकमंडलुस्रुक्स्त्रुवधारिणी सर्वाभरणभूषिता गायत्री कौमारी ब्राह्मी हंसवाहिनी ऋग्वेदसंहिता ब्रह्मदेवत्या त्रिपदा गायत्री षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा ब्रह्महृदया ब्रह्मकवचा सांख्यायनसगोत्रा भूर्लोकव्यापिनी अग्निस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमकारः रक्तवर्णः आत्मज्ञाने विनियोगः ॥ इत्येषा गायत्री ॥ मध्याह्नसंध्या श्वेता श्वेतपद्मासनस्था श्वेतांबरधरा श्वेतवर्णा श्वेतगंधानुलेपना पंचमुखी दशभुजा त्रिनेत्रा शूलाक्षमालाकमंडलुकपालधारिणी सर्वाभरणभूषिता सावित्री युवती माहेश्वरी वृषभवाहिनी यजुर्वेदसंहिता रुद्रदेवत्या त्रिपदा सावित्री षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा रुद्रहृदया ब्रह्मकवचा भारद्वाजसगोत्रा ब हुवर्लोकव्यापिनी वायुस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमुकारः श्वेतवर्णः आत्मज्ञाने विनियोगः ॥ इत्येषा सावित्री ॥ सायंसंध्या कृष्णा कृष्णपद्मासनस्था कृष्णांबरधरा कृष्णवर्णा कृष्णगंधानुलेपना एकमुखी चतुर्भुजा द्रिनेत्रा शंखचक्रगदापद्मधारिणी सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसंहिता विष्णुदेवत्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा त्तस्वरितमकारः कृष्णवर्णो मोक्षज्ञाने विनियोगः । इत्येषा सरस्वती ॥ रक्ता गायत्री श्वेता सावित्री कृष्णवर्णा सरस्वती ॥ प्रणवो नित्ययुक्तश्च व्याहृतीषु च सप्तसु ॥ सर्वेषा मेव

पापानां संकरे समुपस्थिते ॥१॥
दश शतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत्॥
प्रहलादोऽत्रिर्वशिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशरः ॥२॥
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान् ॥
याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः ॥३॥
गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः ॥ अगस्त्यः
कौशिको वत्सः पुलस्त्यो मांडुकस्तथा ॥४॥
दुर्वासाप्तपसा श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा ॥ उत्कात्युक्ता
तथा मध्या प्रतिष्ठान्या सुपूर्विका ॥५॥
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेवच ॥ त्रिष्टुप् च
जगती चैव तथातिजगती मता ॥६॥
शक्करी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी तथैवच ॥
घृतिश्चातिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः ॥७॥
इत्येताश्छंदसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि सांप्रतम् ॥८॥
भूरिति च्छंदः भुव इतिच्छंदः स्वरिति च्छंदो भूर्भुवः
स्वरोमिति देवी गायत्री इत्येतानि च्छंदासि ॥
प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं तृतीयं सौम्य
चतुर्थमैशानं पंचममादित्यं षष्ठं बार्हस्पत्यं सप्तमं
पितृदेवत्यमष्टमं भगदेवत्यं नवममार्यमं दशमं
सावित्रमेकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पौष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्न्यं
चतुर्दशं वायव्यं पंचदशं वामदेवत्यं षोडशं मैत्रावरुणं
सप्तदशमांगिरसमष्टादशं वैश्वदेव्यमेकोनविंशं वैष्णवं
विंशं वासवमेकविंशं रौद्रं द्वाविंशमाश्विनं त्रयोविंशं ब्राह्मं
चतुर्विंशं सावित्रम् ॥ दीर्घान्स्वरेण
संयुक्तान्बिन्दुनादसमन्वितान् ॥
व्यापकान्विन्यसेत्पश्चाद्दशपंक्त्यक्षराणि च ॥९॥
ढुबुंपुस इति प्रत्यक्षबीजानि ॥ प्रल्हादिनी प्रभा सत्या
विश्वा भद्रा विलासिनी ॥ प्रभावती जया कांता शांता
पद्मा सरस्वती ॥१०॥
विद्रुमस्फटिकाकारं पद्मरागसमप्रभम् ॥ अञ्जनाभं च
गांगेयं वैदूर्यं चंद्रसन्निभम् ॥११॥
हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकांतिसमं भवम् ॥
शुकपिच्छसमाकारं क्रमेण परिकल्पयेत् ॥१२॥
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एवच ॥ गंधो रसश्च
रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैवच ॥१३॥
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक्छ्रोत्रं च तथापरम् ॥
उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात् ॥१४॥
मनो बुद्धिरहंकारमव्यक्तं च यथाक्रमम् ॥ सुमुखं संपुटं
चैव विततं विस्तृतं तथा ॥ (एकमुखं च) द्विमुखं
त्रिमुखं च चतुर्मुखम् ॥१५॥
पंचमुखं षण्मुखं चाधोमुखं चैव व्यापकम् ॥ अंजलीकं
ततः (प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम् ॥) ॥१६॥
शकटं यमपाशं च ग्रथितं संमुखोन्मुखम् ॥ प्रलंबं
मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मोवराहकम् ॥१७॥
सिहाक्रांतं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ एता
मुद्राश्चतुर्विंशद्गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः ॥१८॥
ॐमूर्ध्नि संघाते ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये
चक्षुषोश्चंद्रादित्यौ कर्णयोः शुक्रबृहस्पती नासिके
वायुदैवत्यं प्रभातं दोषा उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा
कर्णयोः शुक्रब्रह्मस्पती नासिके वायुदैवत्यः प्रभातं दोषा
उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ग्रीवा स्वाध्याया
स्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः हृदयं पर्जन्यमाकाशमपरं
नाभिरं तरिक्षं कटिरिंद्रियाणि जघनं प्राजापत्यं
कैलासमलयौ ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकौ
जंघयोरयनद्वयम् खुरः पितरः पादौ पृथिवी वनस्पतिः
गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः
संध्याकालत्रयमाच्छादनं संवत्सरो निमिषः
अहोरात्रादित्यश्चंद्रमाः । सहस्रपरमां देवीं शतमध्यां
दशापराम् ॥ सहस्रनेत्री देवी गायत्री शरणमहं प्रपद्ये ॥
तत्सवितुर्वरदाय नमः तत्प्रातरादित्याय नमः ॥
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रारधीयानो
रात्रिकृतं पापं नाशयति । तत्सायं प्रातः प्रयुंजानो अपापो
भवति । य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्
चत्वारो वेदा अधीता भवंति । सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो
भवति । सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । सर्वप्रतिप्रत्युहजात्पूतो
भवति । अपेयपात्पूतो भवति । अभक्ष्यभक्षणात्पूतो
भवति । अलेह्यलेहात्पूतो अचोष्यचोषणात्पूतो भवति ॥
सुरापानात्पूतो भ० ॥ सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति ॥
पंत्किभेदनात्पूतो भ० ॥ पतितसंभाषणात्पूतो भ० ॥
अनृतवचनात्पूतो भ० ॥ गुरुतल्पगमनात्पूतो भ० ॥
अगम्यागमनात्पूतो भ० ॥ वृषलीगमनात्पूतो भ० ॥
ब्रह्महत्यायाः पूतो० ॥ भ्रूणहत्यायाः पूतो० ॥ वेरहत्यायाः
पूतो भ० ॥ अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति । अनेन
हृदयेनाधीतेन क्रतुशतेनेष्टं भवति । षष्टिसहस्रगायत्री
जप्यानि भव्म्ति ॥ अष्टौ ब्राह्मणान्ग्राहयेत्
अर्थसिद्धिर्भवति । य इदं गायत्रीहृदयं बाह्मणः प्रयतः
पठेत् ॥ सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते ब्राह्मलोके
महीयत इति ॥ इति श्रीगायत्र्युपनिषत्संपूर्णा ॥

श्रीगायत्रीकवचम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम ॥ चतुष्पष्टिकलानां च पातकानां च तद्वद ॥१॥ मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत् ॥ देहश्च देवतारूपं मंत्ररूपं विशेषतः ॥२॥ क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ गायत्र्याः कवचस्यास्य ब्रह्मा विष्णुः शिवो ऋषिः ॥३॥

ऋग्यजुःसामाथर्वाणि च्छंदांसि परिकीर्त्तिताः ॥ परब्रह्मस्वरूपा सा गायत्री देवता स्मृता ॥४॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेन विना कृतम् ॥ सर्वं सर्वत्र संरक्षेत्सर्वांगं भुवनेश्वरी ॥५॥ बीजं भर्गश्च युक्तिश्च धियः कीलकमेव च ॥ पुरुषार्थविनियोगो यो नश्च परिकीर्तितः ॥६॥ ऋषिं मूर्ध्नि न्यसेत्पूर्वं मुखे छंद उदीरितम् ॥ देवता हृदि विन्यस्य गुह्ये बीजं नियोजयेत् ॥७॥ शक्तिं पदोस्तु विन्यस्य नाभौ तु कीलकं न्यसेत् ॥ द्वात्रिंशत्तु महाविद्याः सांख्यायनसगोत्रजाः ॥८॥ द्वादशलक्षसंयुक्ता विनियोगः पृथवपृथक् ॥ एवं न्यासविधिंकृत्वा करांगं विधिपूर्वकम् ॥९॥ व्याहृतित्रयमुच्चार्य अनुलोमविलोमतः ॥ चतुरक्षरसंयुक्तं करांगन्यासमाचरेत् ॥१०॥ आवाहनादिभेदं च दश मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ सा पातु वरदा देवी अंगप्रत्यंगसंगमे ॥११॥ ध्यानं मुद्रां नमस्कारं गुरुमंत्रं तथैव च ॥ संयोगमात्मसिद्धिञ्च षड्विधं किं विचारयेत् ॥१२॥ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छंदांसि परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता भूः बीजं भुवः शक्तिः स्वाहा कीलकं श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थं जप विनियोघ ॥ वर्णास्त्रां कुंडिकाहस्तां शुद्धनिर्मलज्योतिषीम् ॥ सर्वतत्त्वमयीं वन्दे गायत्रीं वेदमातरम् ॥१३॥

अथ ध्यानम् ॥

क्मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छाअयैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदु निबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवराण्त्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं भजे ॥१॥

ॐगायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे ॥ ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती ॥१॥ पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वलशालिनी ॥ यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधानगणार्दिनी ॥२॥ पावमानीं दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी ॥ दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥३॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणि म रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥४॥ ब्रह्मास्त्रस्मरणादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते ॥ ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्रास्त्रभक्षकः ॥५॥ ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः ॥ सप्त व्याहृतयः पांतु सर्वदा बिंदुसंयुताः ॥६॥ वेदमाता च मां पातु सरहस्या सदैवता ॥ देवीसूक्तं सदा पातु सहस्राक्षरदेवता ॥७॥ चतुष्पष्टिकलाविद्या दिव्याद्या पातु देवता ॥ बीजशक्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता ॥८॥ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ॥ वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥९॥ देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा ॥ धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥१०॥ ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात् ॥ तद्वर्णः पातु मूर्धानं सकारः पातु भालकम् ॥११॥ चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेतुकारकः ॥ नासापुटेर्वकारो मे रेकारस्तु कपोलयोः ॥१२॥ णिकारस्त्वधरोष्टे च यकारस्तूर्ध्व ओष्ठके ॥ आस्यमध्ये भकारस्तु गोकारस्तु कपोलयोः ॥१३॥ देकारः कंठदेशे च वकारः स्कंधदेशयोः ॥ स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तकम् ॥१४॥ मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा ॥ धिकारो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटीद्वयम् ॥१५॥ गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः पदाक्षरम् ॥ प्रकारो

जानुनी रक्षेच्चोकारो जंघदेशयोः ॥१६॥
दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम् ॥ जातवेदिति
गायत्री त्र्यंबकेति दशाक्षरा ॥१७॥
सर्वतः सर्वदा पातु आपो ज्योतीति षोडशी ॥ इदं तु
कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशकम् ॥१८॥
चतुष्पष्टिकलाविद्यासकलैश्वर्य्यसिद्धिदम् ॥ जपारंभे च
हृदयं जपांते कवचं पठेत् ॥१९॥
स्त्रीगोब्राह्मणमिस्त्रादिरोहाद्यखिलपातकैः ॥ मुच्यते
सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माध्गच्छति ॥२०॥
पुष्पांजलिं च गायत्र्या मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥
शतसाहस्रवर्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥२१॥
भूर्जपत्रे लिखित्वैतत्स्वकंठे धारयेद्यदि ॥ शिखायां दक्षिणे
बाहौ कंठे वा धारयेद् बुधः ॥२२॥
त्रैलोक्यं क्षोभयेत्सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात् ॥
पुत्रवान्धनवाञ्छ्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥२३॥
ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदंगस्पर्शनात्ततः ॥ भवंति तस्य
तुच्छानि किमन्यत्कथयामि ते ॥२४॥
अभिमंत्रितगायत्रीकवचं मानसं पठेत् ॥ तज्जलं पिबतो
नित्यं पुरश्चर्य्याफलं भवेत् ॥२५॥
लघुसामान्यकं मंत्रं महामंत्रं तथैव च ॥ यो वेत्ति धारणां
युञ्जञ्जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥२६॥
सप्तव्याहृति विप्रेन्द्र सप्तावस्थाः प्रकीर्तिताः ॥
सप्तजीवशता नित्यं व्याहृती अग्निरूपिणी ॥२७॥
प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृतीषु च सप्तसु ॥ सर्वेषामेव
पापानां संकरे समुपस्थिते ॥२८॥
शतं सहस्रमभ्यर्च्य गायत्री पावनं महत् ॥
दशशतमष्टोत्तरशतं गायत्री पावनं महत् ॥२९॥
भक्तिभाजो भवेद्विप्रः संध्याकर्म समाचरेत् ॥ काले काले
प्रकर्त्तव्यं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३०॥
प्रणवं पूर्वमृद्धृत्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च ॥ तुर्येण सह
गायत्रीजप एवमुदाहृतम् ॥३१॥
तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं च जपेद् द्विजः ॥ स मूढो
नरकं याति कालसूत्रमधोगतिः ॥३२॥
मंत्रादौ जननं प्रोक्तं मंत्रान्ते मृतसूतकम् ॥
उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफला भवेत् ॥३३॥
मंत्रादौ पाशबीजं च मंत्रांते कुशबीजकम् ॥ मंत्रमध्ये तु
या माया गायत्री सफला भवेत् ॥३४॥
वाचिकस्त्वहमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते ॥ सहस्रं मानसं
प्रोक्तं त्रिविधं जपलक्षणम् ॥३५॥
अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥ जपं
चाक्षररूपेणानामिकामध्यपर्वणि ॥३६॥
अनामा मध्यया हीना कनिष्ठादिक्रमेण तु ॥
तर्ज्जनीमूलपर्य्यंतं गायत्रीजपलक्षणम् ॥३७॥
पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमः स्मृतः ॥
गायत्रीवेदमूलत्वाद्वेदः पर्वसु गीयते ॥३८॥
दशभिर्जन्मजनितं शतेनैव पुरा कृतम् ॥ त्रियुगं तु
सहस्राणि गायत्री हन्ति किल्बिषम् ॥३९॥
प्रातःकालेषु कर्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छति ॥ नादालये
समाधिश्च संध्यायां समुपासते ॥४०॥
अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघने ॥ असंख्यया च
यज्जप्तं तज्जप्तं निष्फलं भवेत् ॥४१॥
विना वस्त्रं प्रकुर्वीत गायत्री निष्फला भवेत् ॥ वस्त्रपुच्छं
न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः ॥४२॥
गायत्रीं तु परित्यज्य अन्यमंत्रमुपासते ॥ सिद्धान्नं च
परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मतिः ॥४३॥
ऋषिश्छंदो देवताख्या बीजं शक्तिश्च कीलकम् ॥ नियोगं
न च जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४४॥
वर्णमुद्राध्यानपदमावाहनविसर्ज्जनम् ॥ दीपं चक्रं न
जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४५॥
शक्तिन्यासस्तथा स्थानं मंत्रसंबोधनं परम् ॥ त्रिविधं यो
न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४६॥
पंचोपचारकांश्चैव होमद्रव्यं तथैव च ॥ पंचांगं च विना
नित्यं गायत्री निष्फला भवेत् ॥४७॥
मंत्रसिद्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण भाषितम् ॥ व्यासो
वाचस्पतिर्जीवस्तुता देवी तपःस्मृतौ ॥४८॥
सहस्रजप्ता सा देवी ह्युपपातकनाशिनी ॥ लक्षजाप्ये
तथा तच्च महापातकनाशिनी ॥ कोटिजाप्येन राजेन्द्र
यदिच्छति तदाप्नुयात् ॥४९॥
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ॥ शिष्येभ्यो
भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥५०॥
इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां श्रीगायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीगायत्रीपटलम्

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता प्रजापतिरृषिः कामदुघा गायत्री छंदः ॥ ॐ ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ सवितुः ब्रह्मो मेत्युपासनात्तद्ब्रह्मविदो विदुस्तां प्रयतंति धीराः ॥ सुमनसा वाचा ममाग्रतः ॥ गायत्री त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ विश्वामित्रशापविमोचनमंत्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः ॥ वाग्देहा गायत्री छंदः ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदा विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिः ॥ सविता देवता ॥ विश्वामित्रशपविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ तत्त्वानि चांगेष्वग्निचितो धियांसः त्रिगर्भा युदुद्भवां देवाश्चोचिरे विश्वसृष्टिम् ॥ तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखान्निःसृतो वेदगर्भः ॥ ॐ गायत्री त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ वसिष्ठशापविमोचनमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः ॥ विश्वोद्भवा गायत्री छंदः ॥ वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता ॥ वसिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ तत्वानि चांगेष्वग्निचितौ धियांसः ध्यायंति विष्णोरायुधानि बिभ्रत् ॥ जनानता सा परमं च शश्वत् गायत्री मासाच्छुरनुत्तमं च धाम ॥ ॐ गायत्री त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ॥ सोऽहमर्कमहंज्योतिरर्कः ज्योतिरहं शिवः ॥ आत्मज्योतिरहं शुक्लं शुक्लं ज्योतिरसोहमोम् ॥ अहो विष्णुमहेशेशे दिव्ये सिद्धि सरस्वति ॥ अजरे अमरे चैव दिव्ययोनि नमोऽस्तु ते ॥ शुद्धं गायत्रीध्यानम् ॥ यद्वेवैः सुरपूजितं परतरं सामर्थ्यतारात्मकं पुन्नागाम्बुजपुष्पनागबकुलैः केशै शुकैरर्चितम् ॥ नित्यं ध्यानसमस्तदीप्तिकरणं कालाग्निरुद्दीपनं तत्संहारकरं नमामि सततं पातालसंस्थं मुखम् ॥ न्यास । ॐ तत्पादांगुलिपर्वभ्यां नमः ॥ ॐ स पादांगुलिभ्यो नमः ॥ ॐ वि जंघाभ्यां न० ॥ ॐ तुर्जानुभ्यां नमः ॥ ॐ व ऊरुभ्यां नमः ॥ ॐ रे शिश्नाय नमः ॥ ॐ णि वृषणाभ्यां नमः ॥ ॐ यं कट्यै नमः ॥ ॐ भर्नाभ्यै नमः ॥ ॐ गो उदराय नमः ॥ ॐ दे स्तनाभ्यां नमः ॥ ॐ व उरसे नमः ॥ ॐ स्य कण्ठाय नमः ॥ ॐ धी दंतेभ्यो नमः ॥ ॐ म तालुने नमः ॥ ॐ हि नासिकायै नमः ॥ ॐ धि नेत्राभ्यां नमः ॥ ॐ यो भ्रूभ्यां यो ललाटाय नमः ॥ ॐ नः पूर्वमुखाय नमः ॥ ॐ प्र दक्षिणमुखाय नमः ॥ ॐ चो पश्चिममुखाय नमः ॥ ॐ द उत्तरमुखाय नमः ॥ ॐ यात् मूर्ध्ने नमः ॥ इति वर्णन्यासः ॥ ॐ तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ वरेण्यं तर्ज्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गोदेवस्य मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ देहन्यासः ॥ ॐ भूः पादयोः ॥ ॐ भुवः जान्वोः ॥ ॐ स्वः नाभौ ॥ ॐ महः हृदये ॥ ॐ जनः कण्ठे ॥ ॐ तपः ललाटे ॥ ॐ सत्यं मूर्ध्नि ॥ ॐ तत्पादयोः ॥ ॐ सवितुर्जान्वोः ॥ ॐ वरेण्यं स्कंधयोः ॥ ॐ भर्गो हृदये ॥ ॐ देवस्य कण्ठे ॥ ॐ धीमहि वक्त्रे ॥ ॐ धियो यो नेत्रे ॥ ॐ नः मुखे ॥ ॐ प्रचोदयात् ॥ अस्त्राय फट् ॥ ॐ आपः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ज्योतिस्तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ रसो मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ अमृतम् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ब्रह्म कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ अग्नये हृदयाय नमः ॥ ॐ वायवे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय शिखायै वषट् ॥ ॐ ब्रह्मणे कवचाय हुम् ॥ ॐ विष्णवे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ रुद्राय अस्त्राय फट् ॥ इति न्यासः ॥ अथ वेदादिगीतायाः प्रसादजननं विधिम् ॥ गायत्र्याः संप्रवक्ष्यामि धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥१॥
नित्यनैमित्तिके काम्ये तृतीये तपवर्द्धने ॥ गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥२॥
मध्याह्ने मितभुङ्मौनी त्रिस्थानार्चनतत्परः ॥ जपेल्लक्षत्रयं धीमान्नान्यमानसकस्तु यः ॥३॥
कर्मभिर्यो जपेत्पश्चात्क्रमशः स्वेच्छयापि वा ॥ यावत्कार्यं न कुर्वीत न लोपेत्तावता व्रतम् ॥४॥
आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम् ॥५॥

त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्रशः ॥ सहस्रं लाभमाप्नोति हुत्वाग्नौ खदिरेंधनम् ॥६॥
पालाशैः समिधैश्चैव घृताक्तानां हुताशने ॥ सहस्रं लाभमाप्नोति राहुसूर्यसमागमे ॥७॥
हुत्वा तु खदिरं वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम् ॥ सहस्रहेममाप्नोति राहुचन्द्रसमागमे ॥८॥
रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने ॥ हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं गोमयं द्विजः ॥९॥
जातीचंपकराजार्ककुसुमानां सहस्रशः ॥ हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने ॥१०॥
सोर्यमंडलबिम्बे च हुत्वा तोयं सहस्रशः ॥ सहस्रं प्राप्नुयाद्धैमं रौप्यमिंदुमये हुते ॥११॥
अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मलव्याधिविनाशके ॥ मुच्येत्सहस्रजाप्येन स्नायाद्यस्तु जलेन वै ॥१२॥
गोघृतेन सहस्रेण लोध्रेण जुहुयुआद्यदि ॥ चौराग्निमारुतोत्थानि भयानि न भवंति वै ॥१३॥
क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति ॥ घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञानसंचयात् ॥१४॥
हुत्वा वेतसपत्राणि घृताक्तानि हुताशने ॥ लक्षाधिपस्यपदवीं सार्वभौमं न संशयः ॥१५॥
लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युत्तिष्ठते जलात् ॥ आदित्याभिमुखं स्थित्वा नाभिमात्रजले शुचौ ॥१६॥
गर्भपातादिप्रदराश्चान्ये स्त्रीणां महारुजः ॥ नाशमेष्यंति ते सर्वे मृतवत्सादिदुःखदाः ॥१७॥
तिलानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात् ॥१८॥
यवानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ॥१९॥
घृतस्याहुतिलक्षेण सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ पंचगव्याशनो लक्षं जपेज्जातिस्मृतिर्भवेत् ॥२०॥
तदैव ह्यनले हुत्वा प्रपनोति वहुसाधनम् ॥ अन्नादिहवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत्सदा ॥२१॥
जुहुयात्सर्वसाध्यानामाहुत्यायुतसंख्यया ॥ रक्तसिद्धार्थकान्हुत्वा सर्वान्साधयते रिपून् ॥२२॥
लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा सर्ववशी भवेत् ॥ हुत्वा तु करवीराणि रक्तानि ज्वालयेज्ज्वरम् ॥२३॥
हुत्वा भाल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत् ॥ हुत्वा तु निंबपत्राणि विद्वेषशांतये नृणाम् ॥२४॥
रक्तानां तंदुलानां च घृताक्तानां हुताशने । हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते ॥२५॥
प्रत्यानयनसिद्ध्यर्थं मधुसर्पिःसमन्वितम् ॥ गवां क्षीरं प्रदीप्तेऽग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥२६॥
ब्रह्मचारी जिताहारो यः सहस्रत्रयं जपेत् ॥ संवत्सरेण लभत धनैश्वर्यं न संशयः ॥२७॥
शमीबिल्वपलाशानामर्कस्य तु विशेषतः ॥ पुष्पाणां समिधश्चैव हुत्वा हेममवाप्नुयात् ॥२८॥
आब्रह्मत्र्यंबकादीनां यस्यायतनमाश्रितः ॥ जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत् ॥२९॥
बिल्वानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ परां श्रियमवाप्नोति यदि न भ्रूणहा भवेत् ॥३०॥
पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ॥ प्राप्नोति राज्यमखिलं सुसंपन्नमकंटकम् ॥३१॥
पंचविंशतिलक्षेण दधिक्षीरं हुताशने ॥ स्वदेहे सिद्ध्यते जंतुः कौशिकस्य मतं तथा ॥३२॥
एकाहं पंचगव्याशी एकाहं मारुताशनः ॥ एकाहं च द्विजोऽन्नाशी गायत्रीजप उच्यते ॥३३॥
महारोगा विनश्यंति लक्षजप्यानुभावतः ॥ स्नात्वा शतेन गायत्र्याः शतमंतर्जले जपेत् ॥३४॥
शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ गोघ्नः पितृघ्नमातृघनु ब्रह्महा गुरुतल्पगः ॥३५॥
स्वर्णहारी तैलहारी यस्तु विप्रः सुरां पिबेत् ॥ चंदनद्वयसंयुक्तं कर्पूरं तंडुलं यवम् ॥३६॥
लवंगं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः ॥ अयं न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रीतिकारकः ॥३७॥
एवंकृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको ध्रुवम् अन्नाज्यभोजनं हुत्वा कृत्वा वा कर्मगर्हितम् ॥३८॥
न सीदेत्प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम् ॥ येचास्य उत्थिता लोके गृहाः सूर्यादयो भुवि ॥ ते यांति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः ॥३९॥
इति श्रीगायत्रीपटलं समाप्तम् ॥
॥ इति श्रीपरिशिष्ठप्रकरणं समाप्तम् ॥

गायत्री मन्त्र नित्य जप विधि

आचार्यः

पूर्वोक्तरीत्यासर्वान्ब्राह्मणान्भूतशुद्ध्यादिमहान्यासान्कारयित्वा भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्याश्च पूजनमपि यजमानद्वारा निर्वर्त्य पूर्वं वा पङ्क्याकारेण कुशकम्बलाद्यन्यतमास्तृते काष्ठपट्टे जपार्थं वृत्तान्ब्राह्मणानुपवेश्य जपसङ्कल्पं भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्याः शापमोचनं चतुर्विंशतिमुद्राणां प्रदर्शनादिकञ्च कर्तुं सर्वान् ब्राह्मणान् मूलमंत्रेण आचमनं प्राणायामञ्च कारयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स० ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥१॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स० ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स० ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥३॥

इति त्रिराचमनं कारयित्वा सशिरस्कसप्तव्याहृतिसहितेन मूलमंत्रेण प्राणायामं कारयेत् । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवि० ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ एवं यथाशक्ति नव त्रीन् वा प्राणायामं विधाय ब्राह्मणा हस्ते जलं गृहीत्वा जपसंख्यासङ्कल्पं कुर्युः । तद्यथा । देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्मद्यजमानस्य मनःकामनापरिपूर्णार्थं स्वात्मनः श्रेयोऽर्थञ्च तेन प्रारब्धस्य श्रीगायत्रीपुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं कृतसङ्कल्पमध्यात् पृथक् अमुकसहस्रसंख्याकं जपं करिष्यामहे । इति सङ्कल्पं विधाय गायत्रीशापविमोचनं कुर्यात् ॥ अस्य (१) श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता प्रजापतिरृषिः । भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता । गायत्रीच्छन्दः । ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः । ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापविमुक्ता भव ॥ पुनर्हस्ते जलं गृहीत्वा । अस्य (२) श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता विश्वामित्र ऋषिः । विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता । बाग्देहा गायत्रीच्छन्दः । विश्वामित्रशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिम् । तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः । ॐ देवि गायत्रि त्वं विश्वामित्रशापविमुक्ता भव ॥ अस्य (३) श्रीवसिष्ठपविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता श्रीवसिष्ठऋषिः । शक्तिर्देवता । गायत्रीछन्दः । श्रीवसिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः । सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः । आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्रीमन्त्रं पठित्वा । ॐ देवि गायत्रि त्वं वसिष्ठशापविमुक्ता भव ॥ एवं शापविमोचनं कृत्वा चतुर्विंशतिमुद्राः प्रदर्शयेत् (प्रृ. २२८-९) ॥ सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपञ्चमुखं तथा ॥१॥

षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकञ्जलिकं तथा । शकटं यमपाशञ्च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥२॥

प्रलम्बं मुष्टिकञ्चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् । सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥३॥

एताश्चतुर्विंशतिमुद्राः प्रदर्श्य रुद्राक्षमालां मूलमन्त्रेण संप्रोक्ष्य । ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव । इति सम्प्रार्थ्य । " ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः " इति मालां सम्पूज्य भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्या ध्यानं कुर्यात् ॥ ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥१॥

अथ प्रातर्मध्याह्नसायंकालिकादिध्यानम् ॥ ब्रह्माणी

चतुराननाऽक्षवलया कुम्भस्तनी स्रुक्स्रुवौ बिभ्राणाऽरुणकान्तिरिन्दुवदना ऋग्रुपिणी बालिका । हंसारोहणकेलिरम्बरमणोर्बिम्बाश्रिता भूतिदा गायत्री हृदि भाविता भवतु नः सम्पत्समृद्ध्यै सदा ॥१॥ रुद्राणी नवयौवना त्रिनयना वैयाघ्रचर्माम्बरा खट्वाङ्गत्रिशिखाक्षसूत्रवलया ध्येया यजूरूपिणी ॥ विद्युद्दामजटाकलापविलसब्दालेन्दुमौलिर्मुदासावित्री वृषवाहना शिततनूर्भूत्यै श्रियै चास्तु नः ॥२॥ ध्येया सा च सरस्वती भगवती पीताम्बरालङ्कृता श्यामातन्विजयादिभिः परिलसद्गात्राञ्चिता वैष्णवी ॥ ताक्ष्र्यस्था मणिनूपुरङ्गदशतग्रैवेयभूषोज्ज्वला हस्तालम्बितशङ्खचक्रसुगदा भूत्यै श्रियै चास्तु नः ॥३॥ इति ध्वात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ॥ तद्यथा । " भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः । " लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परि० । हं आकाशात्मकं पुष्पं परि० । यं वाय्वात्मकं धूपं परि० । रं वह्न्यात्मकं दीपं परि० । वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परि० । सं सोमात्मकं ताम्बूलं परि० । छत्रचामरमुकुरमुकुटपादुकाः परि० ॥ एवं मानसोपचारैः संपूज्य । ततः सर्वे ब्राह्मणा मूलमंत्रस्यार्थं यजमानस्य कल्याणञ्च चिन्तयन्तः श्रीगायत्रीजपं कुर्युः ॥ ततो जपान्ते मालाः शिरसि निधाय भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्या मूलमन्त्रस्य न्यासान् कर्युः । तद्यथा ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा । ॐ तत्सवितुरित्यस्या गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्रीच्छन्दः । अग्निर्मुखम् । ब्रह्मा शिरः । विष्णुर्हृदयम् । रुद्रो ललाटम् । पृथ्वि योनिः । त्रैलोक्यं चरणौ । वरेणीति बीजम् । यम् इति शक्तिः । यात् इति कीलकम् । सकलपापक्षयार्थे न्यासे विनियोगः । श्रीविश्वामित्रर्षये नमः शिरसि । गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे । सवित्रुदेवतायै नमः हृदये ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ अथ करादिन्यासाः । ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ वरेणियं विष्णवात्मने तर्जनीभ्यां नमः । ॐ भर्गो देवस्य रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां नमः । ॐ धीमहि ईश्वरात्मनेऽनामिकाभ्यां नमः । ॐ धियो यो नः सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः । प्रचोदयात्सत्यात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादि ॥ ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मात्मने हृदयाय नमः । ॐ वरेणीयं विष्णवात्मने शिरसे स्वाहा । ॐ भर्गो देवस्य रुद्रात्मने शिखायै वषट् । ॐ धीमहि ईश्वरात्मने कवचाय हुम् । ॐ धियो यो नः सदाशिवत्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ प्रचोदयात् सत्यात्मने अस्त्राय फट् ॥ ततः सव्याहृतिगायत्रीन्यासान् कुर्यात् । ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ततो हृदयादि ॥ ॐ भूः हृदयाय नमः । ॐ भुवः शिरसे स्वाहा । ॐ स्वः शिखायै वषट् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुम् । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् । ततः करसम्पुटौ कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ ॐ मुक्ताविद्गुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ एवं सम्प्रार्थ्य अष्टौ मुद्राः (पृ. २३०) प्रदर्शयेत् । सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः कूर्मोऽथ पङ्कजम् । लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥१॥ इत्यष्टौ मुद्राः प्रदर्श्य । सर्वे ब्राह्मणाः हस्ते जलं गृहीत्वा । अस्माभिः यथाशक्ति सङ्कल्पानुसारं कृतेन जपकर्मणा भगवती श्रीगायत्रीदेवी प्रीयतां न मम । इत्युक्त्वा तज्जलं " गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ " इति देव्यै निवेद्य प्रार्थयेत् ॥ हीनो विभक्तिवर्णैश्च व्यञ्जनैश्च स्वरैरपि । जपो मे क्षम्यतां देवि प्रसादं कुरु किङ्करे ॥ इति प्रार्थयेयुः ॥

॥ इति श्रीगायत्रीमन्त्रनित्यजपविधिः ॥

अथ श्रीगायत्रीस्तवराजः

ॐ अस्य श्रीगायत्रीस्तवराजस्तोत्रमंत्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विस्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः नाना छंदांसि सकलजननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवता सर्वोत्कृष्टपरं धाम प्रथमपादो बीजं द्रितीयः शक्तिः तृतीयः कीलकं दशप्रणवसंयुक्ता सव्याहृतिका तूर्यपादसहिता व्यापकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ तद्यथा ॥ गायत्रीं वेदधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैकवेद्यां चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति ॥ सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनुपदांते वरेण्यं शरण्यं भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधति धियो यो न (प्रचोदयात्) इत्यौर्वतेजः ॥१॥ साम्राज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्यापसव्यं प्रजपेत्सहस्रम् ॥ संपूर्णकामं प्रणवं विभूतिं तथा भवेद्वाक्यविचित्रवाणी ॥२॥ शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यम् ॥ प्रकाशविद्यात्रयशास्त्रसर्वं भजेन्महामन्त्रफलं प्रिये वै ॥३॥ ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं शिरसि शिखिमहद्ब्रह्मशीर्षं नमोंतं सूक्तं पारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्यसिद्धांतमूलम् ॥ तुर्य्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनुमहावेदवेदांतसूक्तं नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचरितं मूलमंत्रं नमोन्तम् ॥४॥ अस्त्रं शस्त्रहतं त्वघोरसहितं दंडेन वाजीहतं चादित्यादिहतं शिरोंतसहितं पापक्षयार्थं परम् ॥ तुर्य्यांत्यादिविलोममंत्रपठनं बीजं शिखांतोर्ध्वकं नित्यं कालनियम्यविप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरान् ॥५॥ नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयं सम्यग्ज्ञानगुरूपदेशविधिवद्देवीं शिखान्तामपि ॥ अष्टैकोत्तरसंख्ययानुगतसौषुम्नादिमार्गत्रयीं ध्यायेन्नित्यसमस्तवेदजननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ॥६॥ गायत्रीं सकलागमार्थफलदां सौरस्य बीजेश्वरीं सर्वान्मायसमस्तमंत्रजननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम् ॥ ब्रह्मादित्रयसंपुटार्थकरणीं संसारपारायणीं संध्यां सर्वसमानतंत्रपरया ब्रह्मानुसंधायिनीम् ॥७॥ एकद्वित्रिचतुःसमानगणनावर्णाष्टकं पादयोः पादादौ प्रणवादिमंत्रपठने मंत्रत्रयीसंपुटाम् ॥ संध्यायां द्विपदं पठेत्परतरं सायं तुरीयायुतं नित्यानित्यमनंतकोटिफलदं प्राप्तुं नमस्कुर्महे ॥८॥ ओजोऽसीति सहोऽस्यथो बलमसि भ्राजोऽसि तेजस्विनी वर्जस्वी सविताग्निसोमममृतं रूपं परं धीमहि ॥ देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्त्यर्थितां शांतितामोमित्येकमृचं पठंति यमिनो यं यं स्मरेत्प्राप्नुयात् ॥९॥ ओमित्येकमजस्वरूपममलं तत्सप्तधा भाजितं तारं तंत्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम् ॥ आपोज्योतिरसोमृतं जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुवर्भूयोभूय नमामि भूर्भुवः स्वरोमेतैर्महामंत्रकम् ॥१०॥ आदौ बिंदुमनुस्मरन्परतरे बालात्रिवर्णोच्चरन्व्याहृत्यादिसबिंदुयुक्तत्रिपदातारत्रयं तुर्यकम् ॥ आरोहादवरोहतः क्रमगता श्रीकुंडलीत्थं स्थिता देवी मानसपंकजे त्रिनयना पंचानना पातु माम् ॥११॥ सर्वे सर्ववशे समस्तसमये सत्यात्मिके सात्त्विके सावित्रीसवितात्मके शशियुते सांख्यायनीगोत्रजे ॥ संध्यात्रीण्युपकल्प्य संग्रहविधौ संध्याभिधानात्मके गायत्रीं प्रणवादिमंत्रगुरुणा संप्राप्य तस्मै नमः ॥१२॥ क्षेमं दिव्यमनोरथं परतरे चेतः समाधीयतां ज्ञानं नित्यवरेण्यमे तदमलं देवस्य भर्गो धियः ॥ मोक्षश्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुर्यच्छ्रेष्ठधीस्तत्पदं प्रज्ञामेधप्रचोदयात्प्रतिदिनं यो नः पदं पातु माम् ॥१३॥ सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यविरलं विश्वादिमायात्मकं सर्वाद्यं प्रतिपादपादरमया तारं तथा मन्प्रथम् ॥ तुर्यान्तं त्रितयं द्वितीयमपरं संयोगसव्याहृतिं सर्वाम्नायमनोन्मयीं मनसिजां ध्यायामि देवीं पराम् ॥१४॥ आदौ गायत्रिमंत्रे गुरुकृतनियमं धर्मकर्मानुकूलं सर्वाद्यं सारभूतं सकलमनुमयं देवतानामगम्यम् ॥ देवानां पूर्वदेवं द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्याधराद्यैः को वा वक्तुं समर्थस्तवमनुमहिमाबीजराजादिमृलम् ॥१५॥ गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां त्रिव्याहृतिं त्रैपदां त्रिब्रह्मां त्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं तां पराम् ॥ सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मात्रात्रयीं तत्परां त्रैलोक्यत्रिदशत्रिकोटिसहितां संध्यां त्रयीं तां नुमः ॥१६॥ ओमित्येतत्त्रिमात्रां त्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं वह्निरूपं त्रीणि त्रीणि त्रिपादं त्रिगुण गुणमयं त्रैपुरांत त्रिसूक्तम् ॥

तत्त्वानां पूर्वशक्तिं त्रितयगुरुपदं पीठयंत्रात्मकं तं तस्मादेतत् त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नमस्ते ॥१७॥ स्वस्तिश्रद्धातिमेधा मधुमतिमधुरः संशयः प्रज्ञकांतिर्विद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधनपतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः ॥ मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुमधुरगिरा पूर्णविद्याप्रपूर्णं प्राप्तं प्रत्यूषचिंत्यं प्रणवपरवशात्प्राणिनां नित्यकर्म ॥१८॥ पंचाशद्वर्णमध्ये प्रनवपरयुते मंत्रमाद्यं नमोंतं सर्वं सव्यापसव्यं शतगुणमभितो वर्गमष्टोत्तरं ते ॥ एवं नित्यं प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तूर्य्ययुक्तं त्रिपादं ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः स मुक्तः ॥१९॥ आदिक्षांतसबिंदुयुक्तसहितं मेरुं क्षकारात्मकं व्यस्ताव्यस्तसमस्तवर्गसहितं पूर्णं शताष्टोत्तरम् ॥ गायत्रीं जपतां त्रिकालसहितां नित्यं सनौमित्तिकं चैवं जाप्यफलं शिवेन कथितं सद्भोग्यमोक्षप्रदम् ॥२०॥ सप्तव्याहृतिसप्ततारविकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महादेवस्य भर्गं भजे ॥ धाम्नोधाम च भादिधारणमहाधीमत्पदं ध्यायते ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्णदशकं पादत्रयं केवलम् ॥२१॥ विज्ञाने विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसंधारिणीं श्रद्धामेध्ययशःशिरःसुमनसःस्वस्तिश्रियं त्वां सदा ॥ आयुष्यं धनधान्यलक्ष्मीमतुलां देवीं कटाक्षं परं तत्काले सकलार्थसाधनमदान्मुक्तिं महत्त्वं पदम् ॥२२॥

पृथ्वीगंधोऽर्च्चनायां नभसि कुसुमता वायुधूपप्रकर्षो वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृतमयं नित्यसंकल्पपूजा ॥ एतत्सर्वं निवेद्यं सुखवति हृदये सर्वदा दंपतीनां त्वं सर्वज्ञे शिवं मे कुरु तव ममता भक्तवृन्दे प्रसिद्धा ॥२३॥ सौम्यं सौभाग्यहेतुं सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुदरं श्रीसमस्तम् ॥ सौमंगल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं समस्तं संवेद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्राप्तुमाद्यं समस्तम् ॥२४॥ गायत्रीपदपंचपंचप्रणवद्वंद्वं त्रिधा संपुटं सृष्ट्यादिक्रममंत्रजाप्यदशकं देवीपदं भूत्रयम् ॥ मंत्रादिस्थितिकेषु संपुटमिदं श्रीमातृकावेष्टनं वर्ष्णंत्यादिविलोममंत्रजपनं संहारसंमोहनम् ॥२५॥ भूराद्यं भूर्भुवः स्वस्त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यंतयोज्यं सृष्टिस्थित्यंतकार्य्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमंत्रं प्रशस्तम् ॥ सर्वांगं मातृकाणां मनुमयवपुषं मंत्रयोगं प्रयुक्तं संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मंत्रराजं नमामि ॥२६॥ विश्वामित्रकृतं परं हितकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदं स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारायणं नित्यशः ॥ वेदानां विधिवादमंत्रसफलं सिद्धिप्रदं संपदां स प्राप्नोत्यपरत्र सर्वसुखदं चायुष्यमारोग्यताम् ॥२७॥ ॥ इति विश्वामित्रकृतश्रीगायत्रीस्तवराजः संपूर्णः ॥

अथ श्रीगायत्रीतत्त्वम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगायत्र्यै नमः ॥ श्रीगायत्रीतत्त्वमालामंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ परमात्मा देवता । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः ॥ अव्यक्तं कीलकम् ॥ मम समस्तपापक्षयार्थे गायत्रीतत्त्वपाठे विनियोगः ॥ चतुर्विंशति तत्त्वानां यदेकं तत्त्वमुत्तमम् ॥ अनुपाधि परं ब्रह्म तत्परं ज्योतिरोमिति ॥१॥ यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदांते च प्रतिष्ठितः ॥ तस्य प्रकृतिलीनस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥२॥ तत्सदादिपदैर्वाच्यं परमं पदमव्ययम् । अभेदत्वं पदार्थस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥३॥ यस्य मायांशभानेन जगदुत्पद्यतेऽखिलम् । तस्य सर्वोत्तमं रूपमरूपस्याभिधीमहि ॥४॥ यं न पश्यन्ति परमं पश्यंतोऽपि दिवौकसः ॥ तं भूतानिलदेवं तु सुपर्णमुपधावताम् ॥५॥ यदंशः प्रेरितो जंतुः कर्मपाशनियंत्रितः ॥ आजन्मकृतपापानामपहंतुं समर्थकः ॥६॥ इदं महामुनिप्रोक्तं गायत्रीतत्त्वमुत्तमम् ॥ यः पठेत्परया भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥७॥ सर्ववेदपुराणेषु सांगोपांगेषु यत्फलम् ॥ सकृदस्य जपादेव तत्फलं प्राप्नुयान्नरः ॥८॥ अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति ॥ अगम्यागमनात्पूतो भवति ॥ सर्वपापेभ्यः पूतो भवति ॥ प्रारधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥ मध्यंदिनमुपयुंजानोऽसत्प्रतिग्रहादिना मुक्तो भवति ॥ अनुप्लवं पुरुषा पुरुषमभिवदंति यं यं काममभिद्य्हयायति तं तमेवाप्नोति पुत्रपौत्रान्कीर्तिसौभाग्यांश्चोपलभवते ॥ सर्वभूतात्ममित्रो देहांते तिद्विशिष्टो गायत्रीपरमं पदमवाप्नोति ॥ इति श्रीवेदसारे श्रीगायत्रीतत्त्वं संपूर्णम् ॥

गायत्री कवचम्

श्रीगणेशाय नमः।

याज्ञवल्क्य उवाच!

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम।
चतुःषष्ठिकलानां च पातकानां च तद्वद॥
मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत्।
देहश्च देवतारूपो मन्त्ररूपो विशेषतः॥

ब्रह्मोवाच!

क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम्।
ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः।
ऋग्यजुःसामाऽथर्वाणि छन्दांसि।
परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता।
भूः बीजम्। भुवः शक्तिः। स्वः कीलकम्।
श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरिति हृदयाय नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गो देवस्येति शिखायै वषट्।
ॐ भूर्भुवः स्वः धीमहीति कवचाय हुम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः इति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयादिति अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्।

मुक्ताविद्रुमहेमनील धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशां शुभ्रं कपालं गुणं
शंख, चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
ॐ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे।
ब्रह्मविद्या तु मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती ॥१॥
पावकीं च दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वलशालिनी।
यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधानगणार्दिनी ॥२॥
पावमानीं दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी।
दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥३॥
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥४॥
तत्पदम् पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम्।
वरेण्यम् कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥५॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥६॥
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।
तद्वर्णः पातु मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम् ॥७॥
चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तु कारकः।
नासापुटे वकारो मे रेकारस्तु कपोलयोः ॥८॥
णिकारस्त्वधरोष्ठे च यंकारस्त्वधरोष्ठके।
आस्यमध्ये भकारस्तु र्गोकारश्चिबुके तथा ॥९॥
देकारः कण्ठदेशे च वकारः स्कन्धदेशयोः।
स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तके ॥१०॥
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा।
धिकारो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटिद्वयम् ॥११॥
गुह्यम् रक्षतु योकार ऊरु मे नः पदाक्षरम् ।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जंघदेशयोः ॥१२॥
दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम्।
जातवेदेति गायत्री त्र्यम्बकेति दशाक्षरा ॥१३॥
सर्वतः सर्वदा पातु आपोज्योतीति षोडशी।
इदम् तु कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशकम् ॥१४॥
चतुःषष्ठिकलाविद्यासकलैश्वर्यसिद्धिदम्।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् ॥१५॥
स्त्रीगोब्राह्मणमित्रादिद्रोहाद्यखिलपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥१६॥
॥ इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां गायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥

गायत्री सुप्रभातम्

श्री पातूरि सीतारामांजनेयुलु कृत

॥श्रीरस्तु ॥ श्री

जानिरद्रितनयापतिरब्जगर्भः
सर्वे च दैवतगणाः समहर्षयोऽमी।
ऐते भूतनिचयाः समुदीरयन्ति
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१॥
पुष्पोच्चय प्रविलसत्कर कंजयुग्माम्
गंगादिदिव्य तटिनीवरतीरदेशे।
ष्वर्घ्यम् समर्पयितुमत्रजनास्तवैते
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२॥
कर्णेमृतम् विकिरता स्वरसंचयेन
सर्वे द्विजाः श्रुतिगणम् समुदीरयन्ति।
पश्याश्रमासथ वृक्षतलेषु देवि
गायति लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥४॥
गावो महर्षिनिचयाश्रम भूमिभागात्
गन्तुम् वनाय शनकैः शनकैः प्रयान्ति।
वत्सान् पयोऽमृतरसम् ननु पाययित्या
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥४॥
शिष्य प्रबोधनपरा वर मौनि मुख्याः
व्याख्यान्ति वेदगदितम् स्फुट धर्म
ततत्त्वम्। स्वीयाश्रमाङ्गणतलेषु मनोहरेषु
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥५॥
श्रोत्रामृतम् श्रुतिरवम् कलयन्त एते
विस्मृत्य गन्तुमटवीम् फललाभलोभात्।
वृक्षाग्र भूमिषु वनेषु लसन्ति कीराः
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥६॥
मूर्ति त्रयात्मकलिते निगम त्रयेण
वेद्ये स्वरत्रय परिस्फुट मन्तरूपे।
तत्त्वप्रबोधनपरोपनिषत्प्रपञ्चे
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥७॥
विश्वात्मिके निगमशीर्षवतंसरूपे
सर्वागमान्तरुदिते वरतैजसात्मन्।
प्राज्ञात्मिके सृजनपोषणसंहृतिस्थे
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥८॥
तुर्यात्मिके सकलतत्त्वगणानतीते
आनंदभोगकलिते परमार्धदत्रि
ब्रह्मानुभूतिवरदे सततम् जनानाम्।
गायत्रि लोकविनुते सुप्रभातम् ॥९॥
तारस्वरेण मधुरम् परिगीयमाने
मन्द्रस्वरेण मधुरेण च मध्यमेन।
गानात्मिके निखिललोक मनोज्ञ भावे
गायत्रि लोकविनुते तव सुपभातम् ॥१०॥
पापाटवी दहन जागृत मानसा त्वम्
भक्तौघ पालन निरंतर दीक्षिताऽसि।
त्वय्येव विश्वमखिलम् स्थिरतामुपैति
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥११॥
या वैदिकी निखिल पावन पावनी वाक्
या लौकिकी व्यवहृति प्रवणा जनानाम्।
या काव्यरूप कलिता तव रूप मेताः
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१२॥
दिव्यम् विमानमधिरुह्य नभोङ्गणेऽत्र
गायन्ति दिव्य महिमानमिमे भवत्याः।
पश्य प्रसीद निचया दिविजाङ्गनानाम्
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१३॥
हैमीम् रुचम् सकल भूमिरुहाग्रदेशे
ष्वाधाय तत्कृत परोपकृतौ प्रसन्नः।
भानुः करोत्यवसरे कनकाभिषेकम्
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१४॥
दिव्यापगासु सरसीषु वनी निकुङ्जे
षूच्चावचानि कुसुमानि मनोहराणि।
पुल्लानि सन्ति परितस्तव पूजनाय
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१५॥
कुर्वन्ति पक्षिनिचयाः कलगानमेते
वृक्षाग्रमुन्नत् तरासनमाश्रयन्तः।
देवि त्वदीय महिमानमुदीरयन्तो
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१६॥
विश्वेशि विष्णुभगिनि श्रुतिवाक्स्वरूपे
तन्मात्रिके निखिलमन्तमयस्वरूपे।
गानात्मिके निखिलतत्त्वनिजस्वरूपे
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१७॥
तेजोमयि त्रिभुवनावनसक्तचित्ते
सन्धात्मिके सकल काल कला स्वरूपे।
मृत्युंजये जयिनि नित्यनिरंतरात्मन्
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१८॥
त्वामेव देवि परितो निखिलानि तन्त्रा
ण्याभाति तत्त्वमखिलम् भवतीम् विवृण्वत्।
त्वम् सर्वदाऽसि तरुणारुणदिव्यदेहे
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥१९॥
नित्याऽसि देवि भवती निखिले प्रपञ्चे
वन्द्याऽसि सर्व भुवनैः सततोद्यतासि।
धी प्रेरिकाऽसि भुवनस्य चराचरस्य
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२०॥
वन्दामहे भगवतीम् भवतीम् भवाब्धि
सन्तारिणीम् त्रिकरणैः करुणामृताब्दे।
सम्पश्य चिन्मयतनो करुणार्द्रदृष्ट्या
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२१॥
त्वम् मातृकामयतनुः परम प्रभावा
त्वय्येव देवि परमः पुरुषः पुराणः।
त्वत्तः समस्त भुवनानि समुल्लसन्ति
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२२॥
त्वम् वै प्रसूर्निखिलदेवगणस्य देवि
त्वम् स्तूयसे त्रिषवणम् निखिलैश्च लोकैः।
त्वम् देश काल परमार्थ परिस्फुटासि
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२३॥
त्वम् गाधिसूनु परमर्षि वरेण दृष्टा
तेजोमयी सवितुरात्ममयाखिलार्था।
सर्वार्थदा प्रणत भक्त जनस्य शश्वत्
गायत्रि लोकविनुतो तव सुप्रभातम् ॥२४॥
संकल्प्य लोकमखिलम् मनसैव सूषे
कारुण्यभाव कलिताऽवसि लोकमाता।
कोपान्विता तमखिलम् कुरुषे प्रलीनम्
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२५॥
मुक्ताभ विद्रुम सुवर्ण महेन्द्र नील
श्वेतप्रभैर् भुवन रक्षण बुद्धि दीक्षैः।
वक्त्रैर्युते निगम मातरुदारसत्त्वे
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२६॥
कारुण्य वीचि निचयामल कान्ति कान्ताम्
ब्रह्मादि सर्व दिविजेड्य महाप्रभावाम्।
प्रीत्या प्रसारय दृशम् मयि लोकमातः
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२७॥
श्री लक्ष्मणादि गुरु सत्करुणैकलब्ध
विद्या विनीत मतियानय माङनेयः।
संसेवतेऽत्रभवतीम् भुवतीम् वचोभिः
गायत्रि लोकविनुते तव सुप्रभातम् ॥२८॥

॥ इति सीतारामाङ्जनेय कवि कृत गायत्री सुप्रभातम्॥

गायत्रीरहस्योपनिषत्

॥ गायत्रीरहस्योपनिषत् ॥

ॐ स्वस्ति सिद्धम् । ॐ नमो ब्रह्मणे ।

ॐ नमस्कृत्य याज्ञवल्क्य ऋषिः स्वयंभुवं परिपृच्छ्हति।

हे ब्रह्मन् गायत्र्या उत्पत्तिः श्रोतुमिच्छ्हामि ।

अथातो वसिष्ठः स्वयंभुवं परिपृच्छ्हति ।

यो ब्रह्मा स ब्रह्मोवाच ।

ब्रह्मज्ञानोत्पत्तेः प्रकृतिं व्याख्यास्यामः ।

को नाम स्वयंभू पुरुष इति ।

तेनाङ्गुलीमथ्यमानात् सलिलमभवत् ।

सलिलात् फेनमभवत् । फेनाद्बुद्बुदमभवत् ।

बुद्बुदादण्डमभवत् । अण्डाद्ब्रह्माभवत् ।

ब्रह्मणो वायुरभवत् । वायोरग्निरभवत् ।

अग्नेरोङ्कारोऽभवत् । ओङ्काराद्व्याहरृतिरभवत् ।

व्याहरृत्या गायत्र्यभवत् ।गायत्र्या सावित्र्यभवत् ।

सावित्र्या सरस्वत्यभवत्। सरस्वत्या सर्वे वेदा अभवन् ।

सर्वेभ्यो वेदेभ्यः सर्वे लोका अभवन् ।

सर्वेभ्यो लोकेभ्यः सर्वे प्राणिनोऽभवन् ।

अथातो गायत्री व्याहृतयश्च प्रवर्तन्ते ।

का च गायत्री काश्च व्याहृतयः ।किं भूः किं भुवः किं सुवः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं किं तत् किं सवितुः किं वरेण्यं किं भर्गः किं देवस्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचोदयात् ।ॐ भूरिति भुवो लोकः । भुव इत्यन्तरिक्षलोकः । स्वरिति स्वर्गलोकः । मह इति महर्लोकः । जन इति जनोलोकः । तप इति तपोलोकः । सत्यमिति सत्यलोकः। तदिति तदसौ तेजोमय तेजोऽग्निर्देवता । सवितुरिति सविता सावित्रमादित्यो वै । वरेण्यमित्यत्र प्रजापतिः । भर्ग इत्यापो वै भर्गः । देवस्य इतीन्द्रो देवो द्योतत इति स इन्द्रस्तस्मात् सर्वपुरुषो नाम रुद्रः । धीमहीत्यन्तरात्मा । धिय इत्यन्तरात्मा परः । य इति सदाशिवपुरुषः । नो इत्यस्माकं स्वधर्मे । प्रचोदयादिति प्रचोदित काम इमान् लोकान् प्रत्याश्रयते यः परो धर्म इत्येषा गायत्री । सा च किं गोत्रा कत्यक्षरा कतिपादा । कति कुक्षयः । कानि शीर्षाणि । सांख्यायनगोत्रा स चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री त्रिपादा चतुष्पादा । पुनस्तस्याश्चत्वारः पादाः षट् कुक्षिकाः पञ्च शीर्षाणि भवन्ति । के च पादाः काश्च कुक्षयः कानि शीर्षाणि । ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति। यजुर्वेदो द्वितीयः पादः। सामवेदस्तृतीयः पादः । अथर्ववेदश्चतुर्थः पादः । पूर्वा दिक् प्रथमा कुक्षिर्भवति। दक्षिणा द्वितीया कुक्षिर्भवति। पश्चिमा तृतीया कुक्षिर्भवति । उत्तरा चतुर्थी कुक्षिर्भवति। ऊर्ध्वं पञ्चमी कुक्षिर्भवति । अधः षष्ठी कुक्षिर्भवति । व्याकरणोऽस्याः प्रथमः शीर्षो भवति । शिक्षा द्वितीयः। कल्पस्तृतीयः। निरुक्तश्चतुर्थः। ज्योतिषामयनमिति पञ्चमः। का दिक् को वर्णः किमायतनं कः स्वरः किं लक्षणम्। कानि अक्षरदैवतानि क ऋषयः कानि च्हन्दांसि का शक्तयः कानि तत्त्वानि के चावयवाः । पूर्वायां भवतु गायत्री । मध्यमायां भवतु सावित्री । पश्चिमायां भवतु सरस्वती । रक्ता गायत्री । श्वेता सावित्री । कृष्णा सरस्वती । पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौरायतनानि ।

अकारोकारमकाररूपोदात्तादिस्वरात्मिका । पूर्वा सन्ध्या हंसवाहिनी ब्राह्मी । मध्यमा वृषभवाहिनी माहेश्वरी । पश्चिमा गरुडवाहिनी वैष्णवी । पूर्वाह्णकालिका सन्ध्या गायत्री कुमारी रक्ता रक्ताङ्गी रक्तवासिनी रक्तगन्धमाल्यानुलेपनी पाशाकुशाङ्क्षमालाकमण्डलुव रहस्ता हंसारूढा ब्रह्मदैवत्या ऋग्वेदसहिता आदित्यपथगामिनी भूमण्डलवासिनी । मध्याह्नकालिका सन्ध्या सावित्री युवती श्वेताङ्गी श्वेतवासिनीश्वेतगन्धमाल्यानुलेपनी त्रिशूलडमरुहस्ता वृषभारूढा रुद्रदैवत्यायजुर्वेदसहिता आदित्यपथगामिनी भुवोलोके व्यवस्थिता । सायं सन्ध्या सरस्वती वृद्धा

कृष्णाङ्गी कृष्णवासिनी कृष्णगन्धमाल्यानुलेपना शङ्खचक्रगदाभयहस्ता गरुडारूढा विष्णुदैवत्या सामवेदसहिता आदित्यपथगामिनी स्वर्गलोकव्यवस्थिता। अग्निवायुसूर्य रूपावहनीयगार्हपत्यदक्षिणाग्निरूपा ऋग्यजु सामरूपा भूर्भुवःस्वरिति व्याहृतिरूपा प्रातर्मध्याह्न तृतीय सवनात्मिका सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त रूपा वसुरुद्रादित्यरूपा गायत्रीत्रिष्टुब्जगतीरूपा ब्रह्मशङ्करविष्णु रूपेच्च्हाज्ञानक्रियाशक्तिरूपा स्वराड्विराड्वषड्ब्रह्मरूपेति | प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं तृतीयं सौम्यं चतुर्थमीशानं पञ्चममादित्यं षष्ठं गार्हपत्यं सप्तमं मैत्रमष्टमं भगदैवतं नवममार्यमणं दशमं सावित्रमेकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पौष्णं त्रयोदशमैद्राग्नं चतुर्दशं वायव्यं पञ्चदशं वामदेवं षोडषं मैत्रावरुणं सप्तदशं भ्रातृव्यमष्टादशं वैष्णवमेकोनविंशं वामनं विंशं वैश्वदेवमेकविंशं रौद्रं द्वाविंशं कौबेरं त्रयोविंशमाश्विनं चतुर्विंशं ब्राह्ममिति प्रत्यक्षरदैवतानि । प्रथमं वासिष्ठं द्वितीयं भारद्वाजं तृतीयं गार्ग्यं चतुर्थमुप- मन्यवं पञ्चमं भार्गवं षष्ठं शाण्डिल्यं सप्तमं लोहितमाष्टमं वैष्णवं नवमं शातातपं दशमं सनतकुमारमेकादशं वेदव्यासं द्वादशं शुकं त्रयोदशं पाराशर्यं चतुर्दशं पौण्ड्रकं पञ्चदशं क्रतुं षोडशं दाक्षं सप्तदशं काश्यपमष्टादशमात्रेयम् एकोन विंशमगस्त्यं विंशमौद्दालकमेकविंशमाङ्गिरसं द्वाविंशं नामिकेतुं त्रयोविंशं मौद्गल्यं चतुर्विंशमाङ्गिरस वैश्वामित्र मिति प्रत्यक्षराणामृषयो भवन्ति । गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्क्षद्रपङ्क्ति बृहत्युष्णिगदितिरिति त्रिरावृत्तेन च्हन्दांसि प्रतिपाद्यन्ते । प्रह्लादिनी प्रज्ञाविश्वभद्रा विलासिनी प्रभा शान्ता मा कान्ति स्पर्शा दुर्गा सरस्वती विरूपा विशालाक्षी शालिनी व्यापिनी विमला तमोऽपहारिणीसूक्ष्मावयवा पद्मालया विरजा विश्वरूपा भद्रा कृपासर्वतोमुखीति चतुर्विंशतिशक्तयो निगद्यन्ते । पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशगन्धरसरूपस्पर्श शब्दवाक्यानि पादपायूपस्थत्वक्क्ष द्रचक्षुश्रोत्र जिह्वाघ्राणमनोबुद्ध्य हङ्कार चित्तज्ञानानीति प्रत्यक्षराणां तत्त्वानि प्रतीयन्ते । चम्पकातसी कुङ्कुमपिङ्गलेन्द्र नीलाग्निप्रभोद्यत्सूर्य विद्युत्तार कसरोजगौरमरतकशुक्ल कुन्दे न्दुशङ्खपाण्डुनेत्र नीलोत्पलचन्दनागुरुकस्तूरी गोरोचन घनसारसन्निभं प्रत्यक्षरमनुस्म्रृत्य समस्तपात कोपपातकमहापातका गम्यागमनगोहत्या ब्रह्महत्या भ्रूणहत्यावी रहत्या पुरुषहत्याऽजन्मकृतहत्यास्त्रीहत्या गुरुहत्या पितृहत्या प्राणहत्या चराचरहत्याऽ भक्ष्यभक्षणप्रतिग्रह स्वकर्म विच्च्हेदन स्वाम्यार्तिहीन कर्मकरणपरधनापहरण शूद्रान्न भोजनशत्रुमारण चण्डालीगमनादिसमस्त पापहरणार्थं संस्मरेत् । मूर्धा ब्रह्मा शिखान्तो विष्णुर्ललाटं रुद्रचक्षुषी चन्द्रादित्यौ कर्णौ शुक्रबृहस्पती नासापुटे अश्विनौ दन्तोष्ठावुभे सन्ध्ये मुखं मरुतः स्तनौ वस्वादयो हृदयं पर्जन्य उदरमाकाशो नाभिरग्निः कटिरिन्द्राग्नी जघनं प्राजापत्यमूरू कैलासमूलं जानुनी विश्वेदेवौ जङ्घे शिशिरः गुल्फानि पृथिवीवनस्पत्यादीनि नखानि महती अस्थीनि नवग्रहा असृक्केतुर्मांसमृतुसन्धयः काल द्वयास्फालनं संवत्सरो निमेषोऽहोरात्रमिति वाग्देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये । य इदं गायत्रीरहस्यमधीते तेन क्रतुसहस्रमिष्टं भवति । य इदं गायत्रीरहस्यमधीते दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरमध्याह्नयोः षण्मासकृतानि पापानि नाशयति । सायं प्रातरधीयानो जन्मकृतं पापं नाशयति । य इदं गायत्रीरहस्यं ब्राह्मणः पठेत् तेन गायत्र्याः षष्टिसहस्रलक्षाणि जप्तानि भवन्ति । सर्वान् वेदानधीतो भवति । सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति । अपेयपानात् पूतो भवति । अभक्ष्यभक्षणात् पूतो भवति। वृषलीगमनात् पूतो भवति। अब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । पङ्क्तिषु सहस्रपानात् पूतो भवति । अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा ब्रह्मलोकं स गच्च्हति । इत्याह भगवान्ब्रह्मा॥ इति गायत्रीरहस्योपनिषत् समाप्ता ॥

गायत्री मन्त्रार्थः सार्थ

अथ सर्वदेवात्मनः सर्वशक्तेः सर्वावभासकतेजोमयस्य परमात्मनः सर्वात्मकत्वद्योतनार्थं सर्वात्मकत्वप्रतिपादक गायत्रीमहामन्त्रस्योपासनप्रकारः प्रकाश्यते । तत्र गायत्रीं प्रणवादिसप्तव्याहृत्युपेतां शिरःसमेतां सर्ववेदसारमिति वदन्ति।, एवंविशिष्टा गायत्री प्राणायामैरुपास्या । सप्रणव व्याहृतित्रयोपेता प्रणवान्ता गायत्री जपादिभिरुपास्या ।

तत्र शुद्धगायत्री प्रत्यग्ब्रह्मैक्यबोधिका । धियो यो नः प्रचोदयादिति नः अस्माकं धियः बुद्धिः यः प्रचोदयात् प्रेरयेत् इति सर्वबुद्धि संज्ञान्तःकरणप्रकाशकः सर्वसाक्षी प्रत्यगात्मा उच्यते । तस्य प्रचोदयाच्छब्दनिर्दिष्टस्यात्मनः स्वरूपभूतं परं ब्रह्म तत्सवितुरित्यादिपदैर्निर्दिश्यते ।

तत्र "ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधःस्मृतः " इति तच्छब्देन प्रत्यग्भूतं स्वतःसिद्धं परं ब्रह्मोच्यते । सवितुरिति सृष्टिस्थितिलय लक्षणकस्य सर्वप्रपञ्चस्य समस्तद्वैतविभ्रमस्याधिष्ठानं लक्ष्यते । वरेण्यमिति सर्ववरणीयं निरतिशयानन्दरूपम् । भर्ग इत्यविद्यादि दोषभर्जनात्मकज्ञानैकविषयम् । देवस्येति सर्वद्योतनात्मकाखण्ड चिदेकरसम् । सवितुर्देवस्येत्यत्र षष्ठ्यर्थो राहोः शिर इतिवदौपचारिकः बुद्ध्यादिसर्वदृश्यसाक्षिलक्षणं यन्मे स्वरूपं तत्सर्वाधिष्ठानभूतं परमानन्दं निरस्तसमस्तानर्थरूपं स्वप्रकाशचिदात्मकं ब्रह्मेत्येवं धीमहि ध्यायेम ।

एवं सति सह ब्रह्मणा स्वविवर्तजडप्रपञ्चस्य रज्जुसर्पन्यायेन अपवाद सामानाधिकरण्यरूपमेकत्वं।, सोऽयमिति न्यायेन सर्वसाक्षिप्रत्यगात्मनो ब्रह्मणा सह तादात्म्यरूपमेकत्वं भवतीति सर्वात्मकब्रह्मबोधकोऽयं गायत्रीमन्त्रः संपद्यते ।

सप्तव्याहृतिनामयमर्थःभूरिति सन्मात्रमुच्यते भुव इति सर्वं भावयति प्रकाशयतीति व्युत्पत्त्या चिद्रूपमुच्यते । सुव्रियत इति व्युत्पत्त्या सुष्ठु सर्वैर्व्रियमाणसुखस्वरूपमुच्यते । मह इति महीयते पूज्यत इति व्युत्पत्त्या सर्वातिशयत्वमुच्यते । जन इतिजनयतीति जनः। सकल कारणत्वमुच्यते । तप इति सर्वतेजोरूपत्वम् । सत्यमिति सर्वबाधरहितम् । एतदुक्तं भवतियल्लोके सद्रूपं तदोंकारवाच्यं ब्रह्मैव। आत्मनोऽस्य सच्चिद्रूपस्वभावादिति । अथ भूरादयः सर्वलोका ओंकारावाच्य ब्रह्मात्मकाः। न तद्व्यतिरिक्तं किंचिदस्तीति व्याहृतयोऽपि सर्वात्मक ब्रह्मबोधिकाः।

गायत्रीशिरसोऽप्ययमेवार्थः आप इत्याप्नोतीति व्युत्पत्त्या व्यापित्वमुच्यते ज्योतिरिति प्रकाशरूपत्वम् । रस इति सर्वातिशयत्वम् । अमृतमिति मरणादि संसारनिर्मुक्तत्वम् । सर्वव्यापिसर्वप्रकाशकसर्वोत्कृष्टनित्यमुक्तमात्मरूपं सच्चिदात्मकं यदोंकारवाच्यं ब्रह्म तदहमस्मि ।

इति गायत्रीमन्त्रस्यार्थः ।
गुहाशयब्रह्महुताशनोऽहं कर्त्रेदमंशाख्य हविर्हुतं सत।
विलीयते नेदमहं भवानी त्येष प्रकारस्तु विभिद्यतेऽत्र ॥
यदस्ति यद्भाति तदात्मरूपं नान्यत्ततो भाति न चान्यदस्ति ।
स्वभावसंवित्प्रविभाति केवला ग्राह्यं ग्रहीतेति मृषैव कल्पना ॥

श्री गायत्री दिव्य सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ।

ध्यानम्

रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां
रक्तारक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम्।
गायत्री कमलासनां करतलव्यानद्धकुण्डाम्बुजां
पद्माक्षीं च वरस्रजञ्च दधतीं हंसाधिरूढां भजे॥
ॐ तत्काररूपा तत्वज्ञा तत्पदार्थस्वरूपिणि ।
तपस्स्व्याध्यायनिरता तपस्विजननन्नुता ॥१॥
तत्कीर्तिगुणसम्पन्ना तथ्यवाक्च तपोनिधिः।
तत्वोपदेशसम्बन्धा तपोलोकनिवासिनी ॥२॥
तरुणादित्यसङ्काशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
तमोपहारिणि तन्त्री तारिणिताररूपिणि ॥३॥
तलादिभुवनान्तस्था तर्कशास्त्रविधायिनी ।
तन्त्रसारा तन्त्रमाता तन्त्रमार्गप्रदर्शिनी ॥४॥
तत्वा तन्त्रविधानज्ञा तन्त्रस्था तन्त्रसाक्षिणि ।
तदेकध्याननिरता तत्वज्ञानप्रबोधिनी ॥५॥
तन्नाममन्त्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता ।
साकाररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी ॥६॥
संसारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा ।
सकला सत्यसङ्कल्पा सत्या सत्यप्रदायिनी ॥७॥
सन्तोषजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी ।
समुद्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥८॥
समानी सामदेवी च समस्तसुरसेविता ।
सर्वसम्पत्तिजननी सद्गुणा सकलेष्टदा ॥९॥
सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता ।
साध्या सिद्धा सुधावासा सिद्धिस्साध्यप्रदायिनी ॥१०॥
सद्युगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा ।
सर्ववेदान्तनिलया सर्वशास्त्रार्थगोचरा ॥११॥
सहस्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी ।
समया समयाचारा सदसद्ग्रन्थिभेदिनी ॥१२॥
सप्तकोटिमहामन्त्रमाता सर्वप्रदायिनी ।
सगुणा सम्भ्रमा साक्षी सर्वचैतन्यरूपिणी ॥१३॥
सत्कीर्तिस्सात्विका साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी ।
सङ्कल्परूपिणी सन्ध्या सालग्रामनिवासिनी ॥१४॥
सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ।
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥१५॥
विप्रप्रीर्विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी ।
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥१६॥
विप्रोपाधिविनिर्भेत्री विप्रहत्याविमोचनी ।
विप्रत्राता विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥१७॥
विप्रभोजनसन्तुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी ।
विष्णुमाया विष्णुवन्द्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥१८॥
वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ।
विकाररहिता विश्वविज्ञानघनरूपिणी ॥१९॥
विबुधा विष्णुसङ्कल्पा विश्वामित्रप्रसादिनी ।
विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्वा विश्वसाक्षिणी ॥२०॥
विवेकिनी वियद्रूपा विजया विश्वमोहिनी ।
विद्याधरी विधानज्ञा वेदतत्वार्थरूपिणी ॥२१॥
विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमङ्गला ।
विश्वम्भरासमाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी ॥२२॥
विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्धिनी ।
विवाहरहिता विन्ध्या विन्ध्याचलनिवासिनी ॥२३॥
विद्याविद्याकरी विद्या विद्याविद्याप्रबोधिनी ।
विमला विभवा वेद्या विश्वस्था विविधोज्ज्वला ॥२४॥
वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका ।
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपालिनी ॥२५॥
वीरधीर्विविधाकारा विरोधिजननाशिनी ।
तुकाररूपा तुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ॥२६॥
तुरङ्गी तुरगारूढा तुलादानफलप्रदा ।
तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टिप्रदायिनी ॥२७॥
तुरङ्गमप्रसन्तुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा ।
तुङ्गोत्तुङ्गा तुङ्गकुचा तुहिनाचलसंस्थिता ॥२८॥
तुम्बुरादिस्तुतिप्रीता तुषारशिखरीश्वरी ।
तुष्टा च तुष्टिजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥२९॥
तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुर्यरूपिणी ।
तुरीयगुणगम्भीरा तुर्यनादस्वरूपिणी ॥३०॥
तुर्यविद्यालास्यतुष्टा तूर्यशास्त्रार्थवादिनी ।
तुरीयशास्त्रतत्वज्ञा तूर्यनादविनोदिनी ॥३१॥
तूर्यनादान्तनिलया तूर्यानन्दस्वरूपिणी ।
तुरीयभक्तिजननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी ॥३२॥

वकाररूपा वागीशी वरेण्या वरसंविधा ।
वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी ॥३३॥
विकल्पशमनी वाणी वाञ्छितार्थफलप्रदा ।
वयस्था च वयोमध्या वयोवस्थाविवर्जिता ॥३४॥
वन्दिनी वादिनी वर्या वाङ्मयी वीरवन्दिता ।
वानप्रस्थाश्रमस्था च वनदुर्गा वनालया ॥३५॥
वनजाक्षी वनचरी वनिता विश्वमोहिनी ।
वसिष्ठावामदेवादिवन्द्या वन्द्यस्वरूपिणी ॥३६॥
वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा ।
वसुमाता वसुत्राता वसुजन्मविमोचनी ॥३७॥
वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेव मनोहरी ।
वासवार्चितपादश्रीर्वासवारिविनाशिनी ॥३८॥
वागीशी वाङ्मनस्थायी वशिनी वनवासभूः ।
वामदेवी वरारोहा वाद्यघोषणतत्परा ॥३९॥
वाचस्पतिसमाराध्या वेदमाता विनोदिनी ।
रेकाररूपा रेवा च रेवातीरनिवासिनी ॥४०॥
राजीवलोचना रामा रागिणिरतिवन्दिता ।
रमणीरामजप्ता च राज्यपा राजताद्रिगा ॥४१॥
राकिणी रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला ।
रेणुकारमणी रम्या रतिवृद्धा रता रतिः ॥४२॥
रावणानन्दसन्धायी राजश्री राजशेखरी ।
रणमद्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा ॥४३॥
रविमण्डलमध्यस्था रजनी रविलोचना ।
रथाङ्गपाणि रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता ॥४४॥
रम्भादिकन्यकाराध्या राज्यदा राज्यवर्धिनी ।
रजताद्रीशसक्थिस्था रम्या राजीवलोचना ॥४५॥
रम्यवाणी रमाराध्या राज्यधात्री रतोत्सवा ।
रेवती च रतोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी ॥४६॥
रङ्गप्रवृद्धमधुरा रङ्गमण्डपमध्यगा ।
रञ्जिता राजजननी रम्या राकेन्दुमध्यगा ॥४७॥
राविणी रागिणी रञ्ज्या राजराजेश्वरार्चिता ।
राजन्वती राजनीती रजताचलवासिनी ॥४८॥
राघवार्चितपादश्री राघवा राघवप्रिया ।
रत्ननूपुरमध्याढ्या रत्नद्वीपनिवासिनी ॥४९॥
रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमण्डपमध्यगा ।
रत्नाभिषेकसन्तुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी ॥५०॥
णिकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना ।
निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा ॥५१॥
नीवारशूकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ।
नित्योत्सवा नित्यपूज्या नित्यानन्दस्वरूपिणी ॥५२॥
निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्ता निरुपद्रवा ।
निस्संशया निरीहा च निर्लोभा नीलमूर्धजा ॥५३॥
निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ।
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥५४॥
नीलग्रीवा निराहारा निरञ्जनवरप्रदा ।
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥५५॥
नारायणी निरीहा च निर्मला निर्गुणप्रिया ।
निश्चिन्ता निगमाचारनिखिलागम च वेदिनी ॥५६॥
निमेषानिमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी ।
निवातदीपमध्यस्था निर्विघ्ना नीचनाशिनी ॥५७॥
नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा निष्कशोभिता ।
नीलांशुकपरीधाना निन्दघ्नी च निरीश्वरी ॥५८॥
निश्वासोच्छ्वासमध्यस्था नित्ययानविलासिनी ।
यङ्काररूपा यन्त्रेशी यन्त्री यन्त्रयशस्विनी ॥५९॥
यन्त्राराधनसन्तुष्टा यजमानस्वरूपिणी ।
योगिपूज्या यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥६०॥
यमघ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी ।
यमादीयोगनिरता यतिदुःखापहारिणी ॥६१॥
यज्ञा यज्वा यजुर्गेया यज्ञेश्वरपतिव्रता ।
यज्ञसूत्रप्रदा यष्ट्री यज्ञकर्मफलप्रदा ॥६२॥
यवाङ्कुरप्रिया यन्त्री यवदघ्नी यवार्चिता ।
यज्ञकर्ती यज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी ॥६३॥
यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षिणी ।
भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी ॥६४॥
भक्तप्रिया भक्तसखा भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ।
भगिनी भक्तसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥६५॥
भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्धविमोचनी ।
भक्तस्वरूपिणी भाग्या भक्तारोग्यप्रदायिनी ॥६६॥
भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ।
भास्करी भैरवी भोग्या भवानी भयनाशिनी ॥६७॥
भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयङ्करी ।
भगनिष्यन्दिनी भूम्नी भवबन्धविमोचनी ॥६८॥
भीमा भवसखा भङ्गीभङ्गुरा भीमदर्शिनी ।
भल्ली भल्लीधरा भीरुर्भेरुण्डा भीमपापहा ॥६९॥

भावज्ञा भोगदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥७०॥
भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसागरतारिणी ।
भण्डासुरवधोत्साहा भाग्यदा भावमोदिनी ॥७१॥
गोकाररूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुप्रिया ।
गोरोचनप्रिया गौरी गोविन्दगुणवर्धिनी ॥७२॥
गोपालचेष्टासन्तुष्टा गोवर्धनविवर्धिनी ।
गोविन्दरूपिणी गोप्त्री गोकुलानांविवर्धिनी ॥७३॥
गीता गीतप्रिया गेया गोदा गोरूपधारिणी ।
गोपी गोहत्यशमनी गुणिनी गुणिविग्रहा ॥७४॥
गोविन्दजननी गोष्ठा गोप्रदा गोकुलोत्सवा ।
गोचरी गौतमी गङ्गा गोमुखी गुणवासिनी ॥७५॥
गोपाली गोमया गुम्भा गोष्ठी गोपुरवासिनी ।
गरुडा गमनश्रेष्ठा गारुडा गरुडध्वजा ॥७६॥
गम्भीरा गण्डकी गुण्डा गरुडध्वजवल्लभा ।
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुणोद्भवा ॥७७॥
देकाररूपा देवेशी दृग्रूपा देवतार्चिता ।
देवराजेश्वरार्धाङ्गी दीनदैन्यविमोचनी ॥७८॥
देकालपरिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी ।
देवमाता देवमोहा देवदानवमोहिनी ॥७९॥
देवेन्द्रार्चितपादश्री देवदेवप्रसादिनी ।
देशान्तरी देशरूपा देवालयनिवासिनी ॥८०॥
देशभ्रमणसन्तुष्टा देशस्वास्थ्यप्रदायिनी ।
देवयाना देवता च देवसैन्यप्रपालिनी ॥८१॥
वकाररूपा वाग्देवी वेदमानसगोचरा ।
वैकुण्ठदेशिका वेद्या वायुरूपा वरप्रदा ॥८२॥
वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्डप्रसादिनी ।
वैचित्र्यरूपा वसुधा वसुस्थाना वसुप्रिया ॥८३॥
वषट्कारस्वरूपा च वरारोहा वरासना ।
वैदेही जननी वेद्या वैदेहीशोकनाशिनी ॥८४॥
वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी ।
वेदान्तवादिनी चैव वेदान्तनिलयप्रिया ॥८५॥
वेदश्रवा वेदघोषा वेदगीता विनोदिनी ।
वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञा वेदमार्ग प्रदर्शिनी ॥८६॥
वैदिकीकर्मफलदा वेदसागरवाडवा ।
वेदवन्द्या वेदगुह्या वेदाश्वरथवाहिनी ॥८७॥
वेदचक्रा वेदवन्द्या वेदाङ्गी वेदवित्कविः ।
सकाररूपा सामन्ता सामगान विचक्षणा ॥८८॥
साम्राज्ञी नामरूपा च सदानन्दप्रदायिनी ।
सर्वदृक्सन्निविष्टा च सर्वसम्प्रेषिणीसहा ॥८९॥
सव्यापसव्यदा सव्यसध्रीची च सहायिनी ।
सकला सागरा सारा सार्वभौमस्वरूपिणी ॥९०॥
सन्तोषजननी सेव्या सर्वेशी सर्वरञ्जनी ।
सरस्वती समाराध्या सामदा सिन्धुसेविता ॥९१॥
सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी ।
समस्तभुवनेशानी सर्वकामफलप्रदा ॥९२॥
सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी ।
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःखविमोचनी ॥९३॥
सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोचनी ।
समदृष्टिस्समगुणा सर्वगोप्त्री सहायिनी ॥९४॥
सामर्थ्यवाहिनि साङ्ख्या सान्द्रानन्दपयोधरा ।
सङ्कीर्णमन्दिरस्थाना साकेतकुलपालिनी ॥९५॥
संहारिणी सुधारूपा साकेतपुरवासिनी ।
सम्बोधिनी समस्तेशी सत्यज्ञानस्वरूपिणी ॥९६॥
सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभावसुसंस्थिता ।
सन्ध्यावन्दनसुप्रीता सन्मार्गकुलपालिनी ॥९७॥
सञ्जीविनी सर्वमेधा सभ्या साधुसुपूजिता ।
समिद्धा सामिधेनी च सामान्या सामवेदिनी ॥९८॥
समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपावनी ।
सर्पिणी सर्पमाता च समादानसुखप्रदा ॥९९॥
सर्वरोगप्रशमनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा ।
सङ्क्रमा समदा सिन्धुः सर्गादिकरणक्षमा ॥१००॥
सङ्कटा सङ्कटहरा सकुङ्कुमविलेपना ।
सुमुखा सुमुखप्रीता समानाधिकवर्जिता ॥१०१॥
संस्तुता स्तुतिसुप्रीता सत्यवादी सदास्पदा ।
धीकाररूपा धीमाता धीरा धीरप्रसादिनी ॥१०२॥
धीरोत्तमा धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा ।
धृतिरूपा धनाढ्या च धनपा धनदायिनी ॥१०३॥
धीरूपा धीरवन्द्या च धीप्रभा धीरमानसा ।
धीगेया धीपदस्था च धीशाना धीप्रसादिनी ॥१०४॥
मकाररूपा मैत्रेया महामङ्गलदेवता ।
मनोवैकल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥१०५॥
मलयध्वजराजश्रीर्मायामोहविभेदिनी ।
महादेवी महारूपा महाभैरवपूजिता ॥१०६॥

मनुप्रीता मन्त्रमूर्तिर्मन्त्रवश्या महेश्वरी ।
मत्तमातङ्गगमना मधुरा मेरुमण्टपा ॥१०७॥
महागुप्ता महाभूता महाभयविनाशिनी ।
महाशौर्या मन्त्रिणी च महावैरिविनाशिनी ॥१०८॥
महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी ।
मही च मण्डलस्था च मधुरागमपूजिता ॥१०९॥
मेधा मेधाकरी मेध्या माधवी मधुमर्धिनी ।
मन्त्रा मन्त्रमयी मान्या माया माधवमन्त्रिणी ॥११०॥
मायादूरा च मायावी मायाज्ञा मानदायिनी ।
मायासङ्कल्पजननी मायामायविनोदिनी ॥१११॥
माया प्रपञ्चशमनी मायासंहाररूपिणी ।
मायामन्त्रप्रसादा च मायाजनविमोहिनी ॥११२॥
महापथा महाभोगा महविघ्नविनाशिनी ।
महानुभावा मन्त्राढ्या महमङ्गलदेवता ॥११३॥
हिकाररूपा हृद्या च हितकार्यप्रवर्धिनी ।
हेयोपाधिविनिर्मुक्ता हीनलोकविनाशिनी ॥११४॥
ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या ह्रीं देवी ह्रीं स्वभाविनी ।
ह्रीं मन्दिरा हितकरा हृष्टा च ह्रीं कुलोद्भवा ॥११५॥
हितप्रज्ञा हितप्रीता हितकारुण्यवर्धिनी ।
हितासिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥११६॥
हिमा हैमवती हैम्नी हेमाचलनिवासिनी ।
हिमागजा हितकरी हितकर्मस्वभाविनी ॥११७॥
धीकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी ।
धनुर्धरा धराधारा धर्मकर्मफलप्रदा ॥११८॥
धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी ।
धनुर्विद्या धनुर्वेदा धन्या धूर्तविनाशिनी ॥११९॥
धनधान्याधेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी ।
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी ॥१२०॥
धर्मस्वरूपा धर्मेशी धर्माधर्मविचारिणी ।
धर्मसूक्ष्मा धर्मगेहा धर्मिष्ठा धर्मगोचरा ॥१२१॥
योकाररूपा योगेशी योगस्था योगरूपिणी ।
योग्या योगीशवरदा योगमार्गनिवासिनी ॥१२२॥
योगासनस्था योगेशी योगमायाविलासिनी ।
योगिनी योगरक्ता च योगाङ्गी योगविग्रहा ॥१२३॥
योगवासा योगभाग्या योगमार्गप्रदर्शिनी ।
योकाररूपा योधाढ्यायोध्री योधसुतत्परा ॥१२४॥
योगिनी योगिनीसेव्या योगज्ञानप्रबोधिनी ।
योगेश्वरप्राणानाथा योगीश्वरहृदिस्थिता ॥१२५॥
योगा योगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविधायिनी ।
योगराजेश्वराराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ॥१२६॥
नकाररूपा नादेशी नामपारायणप्रिया ।
नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी ॥१२७॥
नारायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चितांघ्रिका ।
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥१२८॥
नरसिंहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी ।
नवग्रहार्चितपदा नवमीपूजनप्रिया ॥१२९॥
नैमित्तिकार्थफलदा नन्दितारिविनाशिनी ।
नवपीठस्थिता नादा नवर्षिगणसेविता ॥१३०॥
नवसूत्राविधानज्ञा नैमिशारण्यवासिनी ।
नवचन्दनदिग्धाङ्गी नवकुङ्कुमधारिणी ॥१३१॥
नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ।
नव्यभस्मविदग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा ॥१३२॥
प्रकाररूपा प्राणेशी प्राणसंरक्षणीपरा ।
प्राणसञ्जीविनी प्राच्या प्राणिप्राणप्रबोधिनी ॥१३३॥
प्रज्ञा प्राज्ञा प्रभापुष्पा प्रतीची प्रभुदा प्रिया ।
प्राचीना प्राणिचित्तस्था प्रभा प्रज्ञानरूपिणी ॥१३४॥
प्रभातकर्मसन्तुष्टा प्राणायामपरायणा ।
प्रायज्ञा प्रणवा प्राणा प्रवृत्तिः प्रकृतिः परा ॥१३५॥
प्रबन्धा प्रथमा चैव प्रगा प्रारब्धनाशिनी ।
प्रबोधनिरता प्रेक्ष्या प्रबन्धा प्राणसाक्षिणी ॥१३६॥
प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षपरमेश्वरी ।
प्रणवाद्यन्तनिलया प्रणवादिः प्रजेश्वरी ॥१३७॥
चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी ।
चैतन्यचेतनस्था च चतुरा च चमत्कृतिः ॥१३८॥
चक्रवर्तिकुलाधारा चक्रिणी चक्रधारिणी ।
चित्तचेया चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥१३९॥
चिन्ताचित्तप्रशमनी चिन्तितार्थफलप्रदा ।
चाम्पेयी चम्पकप्रीता चण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥१४०॥
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डविनाशिनी ।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा चिकुरालका ॥१४१॥
चैतन्यरूपिणी चैत्री चेतना चित्तसाक्षिणी ।
चित्रा चित्रविचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥१४२॥
चलना चक्रसंस्था च चाम्पेयी चलचित्रिणी ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रकोटिसुशीतला ॥१४३॥

चन्द्रानुजसमाराध्या चन्द्रा चण्डमहोदरी ।
चर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥१४४॥
चराचरनिवासी च चक्रपाणिसहोदरी ।
दकाररूपा दत्तश्रीदारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥१४५॥
दत्तात्रेयस्य वरदा दर्या च दीनवत्सला ।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥१४६॥
दक्षा दाक्षायणी दीक्षा दृष्टा दक्षवरप्रदा ।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥१४७॥
दयावती दमस्वान्ता दनुजारिर्दयानिधिः ।
दन्तशोभनिभा देवी दमना दाडिमस्तना ॥१४८॥
दण्डा च दमयत्री च दण्डिनी दमनप्रिया ।
दण्डकारण्यनिलया दण्डकारिविनाशिनी ॥१४९॥
दंष्ट्राकरालवदना दण्डशोभा दरोदरी ।
दरिद्रारिष्टशमनी दम्या दमनपूजिता ॥१५०॥
दानवार्चित पादश्रीर्द्रविणा द्राविणी दया ।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥१५१॥
दात्री दानप्रिया दाम्नी दानश्रीर्द्विजवन्दिता ।
दन्तिगा दण्डिनी दूर्वा दधिदुग्धस्वरूपिणी ॥१५२॥

दाडिमीबीजसन्दोहा दन्तपङ्क्तिविराजिता ।
दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममण्डलवासिनी ॥१५३॥
दशावतारजननी दशदिग्दैवपूजिता ।
दमा दशदिशा दृश्या दशदासी दयानिधिः ॥१५४॥
देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्या दशकालविरोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्य दशग्रीवविरोधिनी ॥१५५॥
दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा ।
यात्काररूपिणी याज्ञी यादवी यादवार्चिता ॥१५६॥
ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया ।
यजमाना यदुप्रीता यामपूजाफलप्रदा ॥१५७॥
यशस्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी ।
यमादियोगसन्तुष्टा योगीन्द्रहृदया यमा ॥१५८॥
यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिसन्नुता ।
यवीयसी युवप्रीता यात्रानन्दा यतीश्वरी ॥१५९॥
योगप्रिया योगगम्या योगध्येया यथेच्छगा ।
योगप्रिया यज्ञसेनी योगरूपा यथेष्टदा ॥१६०॥

॥श्रीगायत्री दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

निर्जला एकादशी व्रत कथा (13 जून 2019)

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- हे "हे प्रभु! अब आप कृपा करके ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? आप मुझे विस्तारपूर्वक बतायें।"

श्रीकृष्ण ने कहा- हे पाण्डु पुत्र ! इसका वर्णन परम धर्मात्मा श्री व्यासजी करेंगे, जो समस्त शास्त्रों के ज्ञाता और वेद वेदांगों के पारंगत विद्वान हैं ।

श्रीकृष्ण की बात सुन तब वेदव्यासजी कहने लगे सभी माह दोनों ही पक्षों की एकादशियों के दिन भोजन न करे । द्वादशी के दिन स्नान आदि से पवित्र हो कर फूलों से भगवान केशव का पूजन करे । इसके पश्चात् पहले ब्राह्मणों को भोजन कराकर तृप्त करें और फिर स्वयं भोजन करे ।

वेदव्यासजी बोले: राजन् ! जन्म के सूत्तक और मरण आदि के सूत्तक में भी एकादशी को भोजन नहीं करना चाहिए ।

वेदव्यासजी की बात सुनकर भीमसेन बोले : हे पितामह ! आप मेरी उत्तम बात सुनिये । युधिष्ठिर, माता कुन्ती, द्रौपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव ये एकादशी को कभी भोजन नहीं करते तथा मुझसे भी हमेशा यही कहते हैं कि : 'भीमसेन ! तुम भी एकादशी को भोजन मत करो...' किन्तु मैं उन लोगों से यह कहता हूँ कि मुझसे भूख सही नहीं जायेगी अतः मै नहीं करता।

भीमसेन की बात सुनकर व्यासजी ने बोले : हे भीम यदि तुम्हें स्वर्गलोक की प्राप्ति अभीष्ट है और नरक को दूषित समझते हो तो दोनों पक्षों की एकादशीयों के दिन भोजन नहीं करना ।

भीमसेन बोले : हे पितामह ! मैं आपके सामने सच्ची बात कहता हूँ । मैं एक बार भोजन करके भी मुझसे व्रत नहीं किया जा सकता, फिर उपवास करके तो मैं पूरे दिन कैसे रह सकता हूँ? मेरे उदर में अग्नि सदा प्रज्वलित रहती है, अतः जब मैं बहुत अधिक खाता हूँ, तभी यह शांत होती है ।

इसलिए महामुने ! मैं वर्षभर में केवल एक ही उपवास कर सकता हूँ । जिससे स्वर्ग की प्राप्ति सुलभ हो तथा जिसके करने से मैं कल्याण का भागी हो सकूँ, ऐसा कोई एक व्रत निश्चय करके बताइये । मैं उसका यथोचित रुप से पालन करुँगा ।

व्यासजी ने कहा : हे भीम ! ज्येष्ठ मास में सूर्य वृष राशि या मिथुन राशि में हो, शुक्लपक्ष की में जो एकादशी हो, उसका तुम यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करो । केवल कुल्ला या आचमन करने के लिए मुख में जल डाल सकते हो, उसको छोड़कर किसी प्रकार का जल विद्वान पुरुष मुख में न डाले, अन्यथा व्रत भंग हो जाता है । एकादशी को सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्योदय तक मनुष्य जल का त्याग करे तो यह व्रत पूर्ण होता है । तदनन्तर द्वादशी को प्रभातकाल में स्नान करके ब्राह्मणों को विधिपूर्वक जल और सुवर्ण का दान करे ।

इस प्रकार विधि-विधान से सब कार्य पूरा करके जितेन्द्रिय पुरुष ब्राह्मणों के साथ भोजन करे । वर्षभर में जितनी एकादशीयाँ होती हैं, उन सबका फल निर्जला एकादशी के सेवन से मनुष्य प्राप्त कर लेता है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है । शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले भगवान केशव ने स्वयं मुझसे कहा था कि: यदि मानव सबको छोड़कर केवल मेरी शरण में आ जाय और एकादशी को निराहार रहे तो वह सब पापों से छूट जाता है ।

एकादशी व्रत करनेवाले पुरुष के पास विशालकाय, विकराल आकृति और काले रंगवाले दण्ड पाशधारी भयंकर यमदूत नहीं जाते । अंतकाल में पीताम्बरधारी, सौम्य स्वभाववाले, हाथ में सुदर्शन

धारण करनेवाले और मन के समान वेगशाली विष्णु के दूत आखिर उसे भगवान विष्णु के धाम में ले जाते हैं । अत: निर्जला एकादशी को पूर्ण यत्न करके उपवास और श्रीहरि का पूजन करो । यदि स्त्री हो या पुरुष, यदि उसने मेरु पर्वत के बराबर भी महान पाप किया हो तो वह सब इस एकादशी व्रत के प्रभाव से नष्ट हो जाता है ।

जो मनुष्य एकादशी के दिन जल के नियम का पालन करता है, वह पुण्य का भागी होता है । उसे एक-एक प्रहर में कोटि-कोटि स्वर्णमुद्रा दान करने का फल प्राप्त होना सुना गया है । मनुष्य निर्जला एकादशी के दिन स्नान, दान, जप, होम आदि जो भी धार्मिक कर्म करता है, वह सब अक्षय होता है, एसा भगवान श्रीकृष्ण का कथन है । निर्जला एकादशी को विधिपूर्वक उत्तम प्रकार से व्रत-उपवास करके मनुष्य वैष्णव पद को प्राप्त कर लेता है ।

व्यासजी ने आगे कहा: जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाता है, वह पाप का भोजन करता है । इस लोक में वह चाण्डाल के समान है और मरने पर दुर्गति को प्राप्त होता है ।

जो ज्येष्ठ के शुक्लपक्ष में एकादशी को उपवास करके दान करेंगे, उसे परम पद की प्राप्ति होंती है । जिन्होंने एकादशी को उपवास किया है, उन्के द्वार किये गय ब्रह्म हत्या, शराब सेवन, चोरी तथा गुरुद्रोह आदि होने पर भी सब पातकों से मुक्त हो जाते हैं।

व्यासजी ने कहा : हे भीम ! निर्जला एकादशी के दिन श्रद्धालु स्त्री-पुरुषों के लिए जो विशेष दान और कर्त्तव्य विहित हैं, उन्हें ध्यान पूर्वक सुनो: एकादशी के दिन जल में शयन करनेवाले भगवान विष्णु का पूजन और धेनु का दान करना चाहिए अथवा प्रत्यक्ष धेनु या पुष्टिकारक धेनु का दान उचित है ।

पर्याप्त दक्षिणा और भाँति-भाँति के मिष्ठान्नों द्वारा यत्न पूर्वक ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करना चाहिए । ब्राह्मणों के संतुष्ट होने पर श्रीहरि मोक्ष प्रदान करते हैं।

जो शास्त्रोंक्त वचन के अनुसार विशि-विधान से श्रीहरि की पूजा और रात्रि में जागरण करते हुए इस श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत करता है, वह अपने साथ-साथ अपनी सौ पीढ़ियों के पूर्वजो को और आनेवाली सौ पीढ़ियों को भगवान वासुदेव के परम धाम में पहुँचा देता है । निर्जला एकादशी के दिन अन्न, वस्त्र, गौ, जल, शैय्या, सुन्दर आसन, कमण्डल तथा छाता दान करने का विशेष महत्व है ।

जो श्रेष्ठ तथा सुपात्र ब्राह्मण को जूता दान करता है, वह सोने के विमान पर बैठकर स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है । जो इस एकादशी की महिमा को भक्तिपूर्वक सुनता अथवा उसका वर्णन करता है, वह स्वर्गलोक में जाता है । चतुर्दशीयुक्त अमावस्या को सूर्यग्रहण के समय श्राद्ध करके मनुष्य जिस फल को प्राप्त करता है, वही फल इसके श्रवण से भी प्राप्त होता है ।

पहले दन्तधावन करके यह संकल्प करना चाहिए कि मैं भगवान केशव की प्रसन्न्ता के लिए इस एकादशी को निराहार रहकर आचमन के सिवा दूसरे जल का भी त्याग करूँगा । फिर दूसरे दिन द्वादशी को भगवान श्रीविष्णु का पूजन करना चाहिए ।

व्यासजी ने कहा : हे भीम ! ज्येष्ठ मास में शुक्लपक्ष की जो शुभ एकादशी होती है, उसका निर्जल व्रत करना चाहिए । उस दिन श्रेष्ठ ब्राह्मणों को शक्कर के साथ जलयुक्त के घड़े दान करने चाहिए । ऐसा करने से मनुष्य भगवान विष्णु के समीप सुख का अनुभव करता है । तत्पश्चात् द्वादशी को ब्राह्मण भोजन कराने के बाद स्वयं भोजन करे ।

जो इस प्रकार पूर्ण रुप से इस पापनाशिनी निर्जला एकादशी का व्रत करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर आनंदमय पद को प्राप्त होता है ।

यह सुनकर भीमसेन ने भी इस शुभ एकादशी का व्रत आरम्भ कर दिया । तबसे यह लोक मे 'पाण्डव द्वादशी' के नाम से भी विख्यात हुई ।

***

योगिनी एकादशी व्रत कथा 28/29 जून 2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- "हे प्रभु! अब आप कृपा करके आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? आप मुझे विस्तारपूर्वक बतायें।"

श्रीकृष्ण ने कहा- "हे पाण्डु पुत्र ! आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम "योगिनी एकादशी" है। योगिनी एकादशी के व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह व्रत इसलोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाला है। हे अर्जुन! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। योगिनी एकादशीके व्रत से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

मैं तुम्हें पुराण में कही हुई कथा सुनाता हूँ, हे अर्जुन ध्यानपूर्वक श्रवण करो- कुबेर नाम का एक राजा अलकापुरी नाम की नगरी में राज्य करता था। वह परम शिव-भक्त था। राजा का हेममाली नामक एक यक्ष सेवक था, जो पूजा के लिए फूल लाया करता था। हेममाली की विशालाक्षी नाम की अति सुन्दर स्त्री थी।

एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प लेकर आया, किन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर अपनी स्त्री के साथ रमण करने लगा। इस भोग-विलास में दोपहर हो गई।

हेममाली की राह देखते-देखते जब राजा कुबेर को दोपहर हो गई तो राजा ने क्रोधपूर्वक अपने अन्य सेवकों को आज्ञा दी कि तुम जाकर पता लगाओ कि हेममाली अभी तक पुष्प लेकर क्यों नहीं आया। जब सेवकों ने उसका पता लगा के राजा के पास आकर बताया- 'हे राजन! वह हेममाली अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है।'

इस बात को सुन राजा ने हेममाली को बुलाने की आज्ञा दी। डर से काँपता हुआ हेममाली राजा के सामने उपस्थित हुआ। उसे देखकर कुबेर को अत्यन्त क्रोध आया। राजा ने कहा- 'अरे अधम! तूने मेरे परम पूजनीय देवों के देव भगवान शिवजी का अपमान किया है। मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री के वियोग में तड़पे और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी का जीवन व्यतीत करे।

कुबेर के श्राप से वह तत्क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी उससे बिछड़ गई।

मृत्युलोक में उसने अनेक भयंकर कष्ट भोगे, उसकी बुद्धि मलिन न हुई और उसे पूर्व जन्म की भी सुध रही। अनेक कष्टों को भोगता हुआ तथा अपने पूर्व जन्म के कुकर्मो को याद करता हुआ वह हिमालय पर्वत की तरफ चल पड़ा।

चलते-चलते वह मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में जा पहुँचा। मार्कण्डेय ऋषि अत्यन्त तपस्वी थे। मार्कण्डेय ऋषि दूसरे ब्रह्मा के समान प्रतीत हो रहे थे और उनका वह आश्रम ब्रह्माजी की सभा के समान शोभा दे रहा था। ऋषि को देखकर हेममाली वहाँ गया और उन्हें प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

हेममाली को देखकर मार्कण्डेय ऋषि ने कहा तूने कौन-से कर्म किये हैं, जिससे तू कोढ़ी हुआ और भयानक कष्ट भोग रहा है।

महर्षि की बात सुनकर हेममाली बोला हे मुनिश्रेष्ठ! मैं राजा कुबेर का अनुचर था। मेरा नाम हेममाली है। मैं प्रतिदिन मानसरोवर से फूल लाकर शिव पूजा के समय राजा कुबेर को दिया करता था। एक दिन स्त्री मोहँ में फँस जाने के कारण मुझे समय का ज्ञान ही नहीं रहा और मैं दोपहर तक पुष्प राजा तक न पहुँचा सका।

तब राजा ने क्रोध मे मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बनकर दुख भोग। इस कारण मैं कोढ़ी हो गया हूँ तथा पृथ्वी पर आकर कष्ट भोग रहा हूँ, अतः कृपा करके आप कोई ऐसा उपाय बतलाये, जिससे मेरी मुक्ति हो।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा 'हे हेममाली! तूने सत्य वचन कहे हैं, इसलिए मैं तुम्हारें उद्धार के लिए एक व्रत बताता हूँ। यदि तूम आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की

योगिनी नामक एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करोगेतो तेरे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।

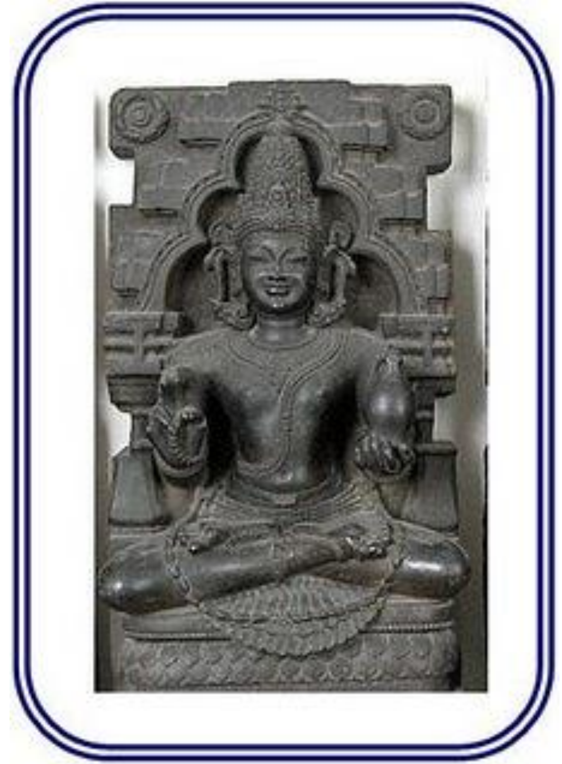
महर्षि के वचन सुन हेममाली अति प्रसन्न हुआ और महर्षि के वचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का पूर्ण विधि-विधान से व्रत करने लगा। इस व्रत के प्रभाव से अपने पुराने स्वरूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ सुखपूर्वक रहने लगा। योगिनी एकादशी हे राजन! इस योगिनी एकादशी की कथा का फल अट्ठासी सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराने के समान है। इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में मोक्ष प्राप्त करके जीव स्वर्ग का अधिकारी बनता है।"

कथा-सार: मनुष्य को पूजा-अर्चना इत्यादि धार्मिक कार्य में आलस्य या प्रमाद नहीं करना चाहिए, अपितु मन को संयम में रखकर सदैव इष्ट सेवा करनी चाहिए।

शनिदेव का परिचय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पदः ब्रह्मा
रंगः काला
तत्वः वायु
जातिः शूद्र
प्रकृतिः तामसिक
विवरणः क्षीण और लम्बा शरीर, गहरी पीली आँखें, वात, बड़े दांत, अकर्मण्य, लंगड़ापन, मोटे बालों.
धातुः स्नायु
निवासः मलिन जमीन
समय अवधिः साल
स्वादः कसैले
मजबूत दिशाः पश्चिम
पेड़ः पीपल, बांबी
कपड़ेः काले, नीले, बहु रंग का वस्त्र
मौसमः सिशिर Sishira
पदार्थः धातु,



शनि ग्रह

शनि सौरमण्डल के प्रएक सदस्य ग्रह है। यह सूरज से छठे स्थान पर है और सौर मंडल में बृहस्पति के बाद सबसे बड़ा ग्रह हैं। इसके कक्षीय परिभ्रमण का पथ १४,२९,४०,००० किलोमीटर है। शनि ग्रह की खोज प्राचीन काल में ही हो गई थी। लेकिन वैज्ञानिक द्रष्टी कोण से गैलीलियो गैलिली ने सन् १६१० में दूरबीन की सहायता से इस ग्रह को खोजा था। शनि ग्रह की रचना ७५% हाइड्रोजन और २५% हीलियम से हुई है। जल, मिथेन,अमोनिया और पत्थर यहाँ बहुत कम मात्रा में पाए जाते हैं। सौर मण्डल में चार ग्रहों को गैस दानव कहा जाता है, क्योंकि इनमें मिटटी-पत्थर की बजाय अधिकतर गैस है और इनका आकार बहुत ही विशाल है। शनि इनमे से एक है - बाकी तीन बृहस्पति, अरुण(युरेनस) और वरुण (नॅप्टयून) हैं।

शनि के छल्ले

शनि ग्रह के चारों ओर कई उपग्रही छल्ले हैं। यह छल्ले बहुत ही पतले होते हैं। हालांकि यह छल्ले चौड़ाई में २५०,००० किलोमीटर है लेकिन यह मोटाई में एक किलोमीटर से भी कम हैं। इन छल्लों के कण मुख्यतः बर्फ और बर्फ से ढ़के पथरीले पदार्थों से बने हैं। नये वैज्ञानिक शोध के अनुशार शनि ग्रह के छल्ले ४-५ अरब वर्ष पहले बने हों जिस समय सौर प्रणाली अपनी निर्माण अवस्था में ही थी। पहले ऐसा माना जाता था कि ये छल्ले डायनासौर युग में अस्तित्व में आए थे। अमेरिका में वैज्ञानिकों ने में पाया कि शनि ग्रह के छल्ले दस करोड़ साल पहले बनने के बजाय उस समय अस्तित्व में आए जब सौर प्रणाली अपनी शैशवावस्था में थी। १९७० के दशक में वैज्ञानिक यह मानने लगे थे कि शनि ग्रह के छल्ले काफी युवा हैं और संभवतः यह किसी धूमकेतु के बड़े चंद्रमा से टकराने के कारण पैदा हुए हैं। कुछ वैज्ञानिको के अनुशार शनि के छल्ले हमेशा से थे लेकिन उनमें

लगातार बदलाव आता रहा और वे आने वाले कई अरबों साल तक अस्तित्व में रहेंगे।

भारतीय शास्त्रो के अनुशार शनिदेव का वर्णन

वैदूर्य कांति रमल, प्रजानां वाणातसी
कुसुम वर्ण विभश्च शरत:।
अन्यापि वर्ण भुव गच्छति
तत्सवर्णाभि
सूर्यात्मज: अव्यतीति मुनि प्रवाद:॥

भावार्थ:- शनि ग्रह वैदूर्यरत्न अथवा बाणफ़ूल या अलसी के फ़ूल जैसे निर्मल रंग से जब प्रकाशित होता है, तो उस समय प्रजा के लिये शुभ फ़ल देता है यह अन्य वर्णों को प्रकाश देता है, तो उच्च वर्णों को समाप्त करता है, ऐसाऋषि महात्मा कहते हैं।

शनिदेव का स्वरुप:

शनैश्चर का शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान हैं। शनिदेव के सिर पर स्वर्ण मुकुट गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित होते हैं। शनिदेव का वर्ण कृष्ण, वाहन गीध तथा लोहे का बना रथ है।

सूर्यदेव के पुत्र हैं शनिदेव

ज्योतिष के विद्वानो के अनुशार यह संपूर्ण संसार सौरमंडल के ग्रहों द्वारा नियंत्रित हैं और शनिदेव इन ग्रहो में से मुख्य नियंत्रक हैं। शनिदेव को ग्रहों के न्यायाधीश मंडल का प्रधान न्यायाधीश कहा गया हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की शनिदेव के निर्णय के अनुसार ही अन्य ग्रह संबंधित व्यक्ति को शुभा-शुभ फल प्रदान करते हैं। जड़-चेतन सभी पर ग्रहों का अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव निश्चित पड़ता हैं। आपके मार्गदर्शन हेतु शनिदेव से संबंधित कुछ विशिष्ट जानकारियां यहां प्रस्तुत हैं।

पुरातन काल से लोगों के अंदर शनिदेव के प्रति गलत धारणाएं, भय घर किये बैठा हैं, शनिदेव नाम सुनते ही लोग भयभीत हो जाते हैं। शनिदेव का पौराणिक परिचय आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत हैं जिससे शनिदेव से संबंधी व्याप्त विभिन्न भ्रांतियों के निवारण में आपको सहायता मिले।

विविध पुराणों में शनिदेव के प्रादुर्भाव व उनके विशिष्ट गुणों की अनेक चर्चा उप्लब्ध है।

पुराणो के अनुसार शनिदेव महर्षि कश्यप के पुत्र सूर्य की संतान हैं। सूर्य विश्व की आत्मा व साक्षात ब्रह्म का स्वरूप हैं। शनिदेवकी माता का नाम छाया अथवा सुवर्णा हैं। मनु सावर्णि, यमराज शनिदेव के भाई और यमुना बहन हैं।

शास्त्रोक्त वर्णित हैं की वंश का प्रभाव संतान पर अवश्य पड़ता हैं। शनिदेव का जन्म कश्यप वंश में हुवा हैं और शनिदेव साक्षात ब्रह्मस्वरूप सूर्यदेव के पुत्र हैं अतः शनिदेव अद्वितीय शक्ति व व्यक्तित्व के स्वामी हैं। शनिदेव आशुतोष भगवान शिव के अनन्य भक्त हैं।

पोराणिक कथा के अनुशार प्रशंगवश सूर्य देव ने अपनी पत्नी अर्थात शनिदेव की मां छाया पर नाराज हो गये और उन्हें शाप तक देने को तैयार हो गये। शनिदेव को सूर्यदेव का ऐसा व्यवहार सहन न हुआ। उनके मन में सूर्य से भी अधिक शक्तिशाली बनने की इच्छा जागृत हुई। शनिदेव ने बिना किसी संकोच सूर्य से ही अपनी शक्तिप्राप्ति के उपाय पूछने लगे।

सूर्यदेव ने सुना कि शनि उनसे अधिक शक्तिशाली होना चाहता है, सुनते ही उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। सब सूर्यदेव ने शनि को काशी में जाकर भगवान शिव का पार्थिवलिंग बनाकर पूजन व अभिषेक करने का आदेश दिया। शनिदेव काशी में आकर पार्थिव शिवलिंग बनाकर उपासना में लिन हो गये। शिवजी ने उनकी उपासना से प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहां। शनि ने शिवजी से दो वरदान मांगे। एक यह कि मैं अपने पिता से भी अधिक शक्तिशाली बनूं और दूसरा यह कि पिता से सात गुना दूरी पर सात उपग्रहों से घिरा हुआ मेरा मंडल हो। शिवजी ने तथास्तु कह उन्हें वरदान दे दिया।

ज्योतिषशास्त्र में अंतरिक्ष, विरान स्थानों, श्मसानों, बीहड़ वन, प्रांतरों, दुर्गम-घाटियों, पर्वतों, गुफाओं, खदानों व जन शून्य आकाश-पाताल के रहस्यपूर्ण-स्थल आदि को शनिदेव के अधिकार क्षेत्र माना गया है। शनिदेव के अधिकार क्षेत्र में केवल रहस्यमय व गुह्य ज्ञान के उपरांत कर्मक्षेत्र में, सतत् चेष्टा, श्रम, सेवा - लाचार, विकलांगों, रोगी व वृध्दों की सहायता आदि भी आते हैं।

शनिदेव कर्म के कारक ग्रह होने की वजह से मनुष्य को क्रियमाण कर्मों का अवलंबन लेकर अपने पूर्वकृत कर्मों के फल भोग को भी अपने अनुरूप बनाने में सक्षम हो सकता हैं।

ज्योतिषीय विश्लेषण के अनुशार बताये गये उपायों अपना कर प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। ज्योतिष विद्या से मनुष्य अपने भविष्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपने कत्तव्यों द्वारा प्रतिकूल स्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता हैं।

संपूर्ण चराचर जगत ईश्वरिय शक्तियों के संकल्प से सृजन हुवा हैं। उसी ईश्वरिय शक्तियों की इच्छानुसार नव ग्रहों को विश्व के समस्त जड़-चेतन को नियंत्रित व अनुशासित करने का कार्य दिया गया है। मानव समेत समस्त जीवो को मिलने वाले सुख-दुख ग्रहों के शुभ-अशुभ प्रभावो द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं। लेकिन ग्रहो के शुभ-अशुभ प्रभाव में किसी व्यक्ति या जीव विशेष से इन ग्रहो का कोई पक्षपात नहीं होता, क्योकि किसी भी व्यक्ति या जीव को मिलने वाले सुख-दुखों उस जीव द्वारा किये गय कर्म ही होते हैं।

जीव विशेष के कर्मो के कारक ग्रह शनिदेव होने की वजह से उनकी क्रियमाण कर्मों के संपादन में प्रमुख भूमिका होती है। जीव के द्वारा किये गये कर्मों से किसी कर्म का फल कब और किस प्रकार भोगना है, इसका निर्धारण नव ग्रहों द्वारा ही होता हैं।

सभी जीव के शुभ-अशुभ कर्मों का फल प्रदान करने में शनिदेव दण्डाधिकारी न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हैं। क्योकि अशुभ कर्मों के लिए दण्ड प्रदान करते समय शनि नहीं देर करते है और नहीं पक्षपात। दण्ड देते समय दया आदि भाव शनिदेव को छू नहीं पाते, इस लिये लोगों में शनि के नाम से भय के लहर दौड जाती है। इसी लिये शास्त्रों में शनिदेव को क्रूर, कुटिल व पाप ग्रह संज्ञा दि गई है। शनिदेव जितने कठोर हैं उतने ही अंदर से कृपालु व दयालु भी है। शनिदेव की कृपा प्राप्ति हेतु मनुष्यो को अपने कर्मो को सुधारना चाहिए।

क्योकि विद्वानो के मतानुशार पूर्वजन्म के संचित पुण्य और पापों का फल जीव को वर्तमान जीवन में ग्रहों के अनुसार भोगने पडते हैं।

ग्रहो के शुभ-अशुभ प्रभाव महादशा, अंतर्दशा आदि के अनुशार प्राप्त होते हैं। अतः ग्रहो के अनिष्ट फलों से बचाव के लिए उचित उपाय किया जा सकता है।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने शास्त्रो में शनिदेव के अनुकूल व प्रतिकूल प्रभावों का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण कर उसकी विस्तृत जानकारी हमें प्रदान की हैं।

यदि किसी जातक के लिये शनिदेव अनुकूल होते हैं तो जातक को अपार धन-वैभव व ऐश्वर्यादि की प्राप्ति होती हैं, यदि प्रतिकूल हो, तो व्यक्ति को भीषण कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति विशेष के संचित धन, संपदा का नाश होता है। व्यकि निंदित कर्मो रत हो जाता हैं उसे लोकनिंदा का पात्र बनना पड़ता हैं। उसे पग-पग पर दुःख, कष्ट, रोग व अपमान का सामना करना पड़ता है। उन्हें तरह-तरह की यातनाएं भी झेलनी पड़ जाती हैं।

शनिदेव उन्हीं लोगो को अधिक कष्ट प्रदान करते हैं जो लोग गलत काम में सलग्न होते हैं। अच्छे कर्म करने वालों पर शनिदेव अति प्रसन्न व उनके अनुकूल फल प्रदान करते हैं।

अतः शुभ कर्म करने से शनि की कृपा प्राप्त होगी और शनि कृपा से ही जीवन का मूल उद्देश्य पूर्ण होगा।

शास्त्रो में उल्लेखित हैं की शनिदेव के दंड से शनिदेव के गुरु साक्षात शिवजी को भी ढाई दिन के लिये छुपना पडा था। शनिदेव के कोप के कारण पार्वती नंदन गणेशजी का शिर कट गया था।

शनि के रत्न और उपरत्न नीलम, नीलिमा, नीलमणि, जामुनिया, नीला कटेला, आदि शनि के रत्न और उपरत्न हैं। अच्छा रत्न शनिवार को पुष्य नक्षत्र में धारण करना चाहिये। इन रत्नों मे किसी भी रत्न को धारण करते ही फ़ायदा मिल जाता है।

शनि की जडी बूटियां

बिच्छू बूटी की जड या शमी जिसे छोंकरा भी कहते है की जड शनिवार को पुष्य नक्षत्र में काले धागे में पुरुष और स्त्री दोनो ही दाहिने हाथ की भुजा में बान्धने से शनि के कुप्रभावों में कमी आना शुरु

ज्योतिषी जानकारी :

शनि एक राशि में तीस महीने रहते हैं। शनि मकर और कुम्भ राशि के स्वामी हैं तथा शनिकी महादशा 19 वर्ष की होती है। शनि का प्रभाव एक राशि पर ढ़ाई वर्ष और साढ़े साती के रूप में साढे सात वर्ष अवधि तक भोगना पढ़ता हैं।

शनिदेव के काले होने का रहस्य!

इस बारे में एक कथा प्रचलित है, जब शनिदेव माता के गर्भ में थे, तब शिव भक्तिनी माता ने घोर तपस्या की, धूप-गर्मी की तपन में शनि का रंग काला हो गया। लेकिन मां के इसी तप ने उन्हे आपार शक्ति दी और नग्रहो में से एक ग्रह बना दिया।

शनिदेव की गति धीमी होने का कारण

शनिदेव का अन्य सभी ग्रहों से मंद होने का कारण इनका लंगड़ाकर चलना है। वे लंगड़ाकर क्यों चलते हैं, इसके संबंध में सूर्यतंत्र में वर्णित कथा इस प्रकार हैं।

एक बार सूर्य देव का तेज सहन न कर पाने की वजह से संज्ञा देवी ने अपने शरीर से अपने जैसी ही एक प्रतिमूर्ति तैयार की और उसका नाम स्वर्णा रखा। उसे आज्ञा दी कि तुम मेरी अनुपस्थिति में मेरी सारी संतानों की देखरेख करते हुए सूर्य देव की सेवा करो और पत्नी सुख भोगो।

एसा आदेश देकर संज्ञा अपने पिता के घर चली गई। स्वर्णा ने भी अपने आप को इस तरह ढ़ाला कि सूर्य देव भी यह रहस्य न जान सके। इस बीच सूर्य देव से स्वर्णा को पांच पुत्र और दो पुत्रियां हुई। धीरे-धीरे स्वर्णा अपने बच्चों पर अधिक और संज्ञा की संतानों पर कम ध्यान देने लगी। एक दिन संज्ञा के पुत्र शनि को तेज भूख लगी, तो उसने स्वर्णा से भोजन मांगा। तब स्वर्णा ने कहा कि अभी ठहरो, पहले मैं भगवान्‌का भोग लगा लूं और तुम्हारे छोटे भाई-बहनों को खिला दूं, फिर तुम्हें भोजन दूंगी। यह सुनकर शनि को क्रोध आ गया और उन्होंने माता को मारने के लिए अपना पैर उठाया, तो स्वर्णा ने शनि को श्राप दिया कि तेरा पांव अभी टूट जाए।

माता का श्राप सुनकर शनिदेव डरकर अपने पिता के पास गए और सारा किस्सा कह सुनाया। सूर्यदेव तुरन्त समझ गए कि कोई भी माता अपने पुत्र को इस तरह का शाप नही दे सकती। इसी लिए उनके साथ अपनी पत्नी नही कोई और हैं। सूर्य देव ने क्रोध में आकर पूछा कि बताओ तुम कौन हो, सूर्य का तेज देखकर स्वर्णा घबरा गई और सारी सच्चाई उन्हे बता दी। तब सूर्यदेव नें शनि को समझाया कि स्वर्णा तुमारी माता नही हैं, लेकिन मां समान हैं। इसीलिए उनका दिया शाप व्यर्थ तो नही होगा, परन्तु यह इतना कठोर नही होगा कि टांग पूरी तरह से अलग हो जाए। हां, तुम आजीवन एक पाँव से लंगडाकर चलोगे।

शनिदेव को तेल प्रिय होने का कारण

शनि देव पर तेल चढाया जाता हैं, इस संबंध में आनंद रामायण में एक कथा का उल्लेख मिलता हैं। जब श्री राम की सेना ने सागर सेतु बांध लिया, तब राक्षस इसे हानि न पहुंचा सकें, उसके लिए पवन सुत हनुमान को उसकी देखभाल की जिम्मेदारी सौपी गई। जब हनुमान जी शाम के समय अपने इष्टदेव राम के ध्यान में मग्न थे, तभी सूर्य पुत्र शनि ने अपना काला कुरूप चेहरा बनाकर क्रोधपूर्ण कहा- हे वानर मैं देवताओ में शक्तिशाली शनि हूँ। सुना हैं, तुम बहुत बलशाली हो। आँखें खोलो और मेरे साथ युद्ध करो, मैं तुमसे युद्ध करना चाहता हूँ। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- इस समय मैं अपने प्रभु को याद कर रहा हूं। आप मेरी पूजा में विध्न मत डालिए। आप मेरे आदरणीय है। कृपा करके आप यहा से चले जाइए।

जब शनि देव लड़ने पर उतर आए, तो हनुमान जी ने अपनी पूंछ में लपेटना शुरू कर दिया। फिर उन्हे कसना प्रारंभ कर दिया जोर लगाने पर भी शनि उस बंधन से मुक्त न होकर पीड़ा से व्याकुल होने लगे। हनुमान ने फिर सेतु की परिक्रमा कर शनि के घमंड को तोड़ने के लिए पत्थरो पर पूंछ को झटका दे-दे कर पटकना शुरू कर दिया। इससे शनि का शरीर लहुलुहान

हो गया, जिससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई। तब शनि देव ने हनुमान जी से प्रार्थना की कि मुझे बधंन मुक्त कर दीजिए। मैं अपने अपराध की सजा पा चुका हूँ, फिर मुझसे ऐसी गलती नही होगी।

इस पर हनुमान जी बोले-मैं तुम्हे तभी छोड़ूंगा, जब तुम मुझे वचन दोगे कि श्री राम के भक्त को कभी परेशान नही करोगे। यदि तुमने ऐसा किया, तो मैं तुम्हें कठोर दंड दूंगा। शनि ने गिड़गिड़ाकर कहा -मैं वचन देता हूं कि कभी भूलकर भी आपके और श्री राम के भक्त की राशि पर नही आऊँगा। आप मुझे छोड़ दें। तभी हनुमान जी ने शनिदेव को छोड़ दिया। फिर हनुमान जी से शनिदेव ने अपने घावो की पीड़ा मिटाने के लिए तेल मांगा। हनुमान जी ने जो तेल दिया, उसे घाव पर लगाते ही शनि देव की पीड़ा मिट गई। उसी दिन से शनिदेव को तेल चढ़ाया जाता हैं, जिससे उनकी पीडा शांत हो जाती हैं और वे प्रसन्न हो जाते हैं।

शनिदेव की क्रूरद्रष्टी का कारण

शनिदेव जी की दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्मपुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है- बचपन से ही शनि देवता श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र- प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुँची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसार की सुधबुध ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसलिये उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायगा। ध्यान टूटने पर शनिदेव ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि यह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसी का अनिष्ट हो।

अतः कहा गया है, शनिदेव क्रुर ग्रह नहीं हैं, वो न्यायकर्ता है। व्यक्ति पाप करता रहता है, और जब उस व्यक्ति पर शनि की साढ़ेसाती आती है, तो उसके पापो का हिसाब स्वयं शनिदेव करते है। जब व्यक्ति लोभ, वासना, गुस्सा, मोह से प्रभावित होकर अन्याय, अत्याचार, दूराचार, अनाचार, पापाचार, व्यभिचार का सहारा लेता है, जब सबसे छिप कर कोई पाप कार्य करता हैं, तब समय आने पर शनिदेव के द्वारा व्यक्ति को दंड भी प्राप्त होता हैं। जो राजा का रंक बना देती हैं, वह शनि की साढे-साति ही होती है। लेकिन यदि साढे-साती दशा के दौरान भी व्यक्ति सत्य को नहीं छोड़ेता, पुनः, दया और न्याय का सहारा लेता हैं, एसी अवस्था में सब बहुत ही अच्छे से व्यतीत हो जाता हैं।

शनिवार व्रत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

व्रत माहात्म्यं एवं कथा विधि

शनि-ग्रह की शांति व सभी प्रकार के सुखों की इच्छा रखने वाले स्त्री-पुरुषों को शनिवार का व्रत करना चाहिए। संपूर्ण विधि-विधान से शनिवार का व्रत करने से शनि से संबंधित संपूर्ण पीडा-दोष, रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं, और धन का लाभ होता हैं। व्रती को स्वास्थ्य सुख तथा आयु व बुद्धि की वृद्धि होती हैं।

शनिदेव के प्रभाव में सभी प्रकार के उद्‌योग, व्यवसाय, कल-कारखाने, धातु उद्‌योग, लौह वस्तु, तेल, काले रंग की वस्तु, काले जीव, जानवर, अकाल मृत्यु, पुलिस भय, कारागार, रोग भय, गुरदे का रोग, जुआ, सट्टा, लॉटरी, चोर भय तथा क्रूर कार्य आते हैं।

विद्वानो के अनुशार शनि से संबंधित कष्ट निवारण के लिए शनिवार का व्रत करना परम लाभप्रद होता हैं। शनिवार के व्रत को जानकार व्यक्ति की सलाह से प्रत्येक उम्र के स्त्री-पुरुष कर सकता हैं।

शनिवार का व्रत किसी भी शनिवार से आरंभ किया जा सकता हैं। लेकिन श्रावण मास के शनिवार से व्रत को प्रारंभ किया जाए तो विशेष लाभप्रद रहता हैं।

शनिवार को सूयोदय से पूर्व व्रती मनुष्य को किसी पवित्र नदी-जलाशय आदि के जल में स्नान कर, ऋषि-पितृ अर्पण करके, सुंदर कलश में जल भरकर लाये, उस कलश को शमी अथवा पीपल के पेड़ के नीचे सुंदर वेदी बनावे, उसे गोबर से लीपे, लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत में स्नान कराकर काले चावलों से बनाए हुए चौबीस दल के कमल पर स्थापित करे। शनिदेव का काले रंग के गंध, पुष्प, अष्टांग, धूप, फूल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करे।

उस के पश्चयात शनि के इन दस नामों का श्राद्धा व भक्ति-भाव से से उच्चारण करे-

ॐ कोणस्थाय नमः। ॐ यमाय नमः।
ॐ रौद्रात्मकाय नमः। ॐ बभ्रवे नमः।
ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ कृष्णाय नमः।
ॐ मंदाय नमः। ॐ पिंगलाय नमः।
ॐ पिप्पलाय नमः। ॐ सौरये नमः।

उस वृक्ष में सूत के सात धागे लपेटकर सात परिक्रमा करे तथा वृक्ष का पूजन करे। शनि पूजन सूर्योदय से पूर्व तारों की छांव में करना चाहिए। शनिवार व्रत-कथा को भक्ति और प्रेमपूर्वक सुने। कथा कहने वाले को दक्षिणा दे। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, तेल, नीले वस्त्र का दान करे। आरती और प्रार्थना करके प्रसाद बांटे।

पहले शनिवार को उड़द का भात और दही, दूसरे शनिवार को खीर, तीसरे को खजला, चौथे शनिवार को घी और पूरियों का भोग लगावे। इस प्रकार तेंतीस शनिवार तक इस व्रत को करे। इस प्रकार व्रत करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। इससे सर्वप्रकार के कष्ट, अरिष्ट आदि व्याधियों का नाश होता है और अनेक प्रकार के सुख, साधन, धन, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती हैं। कामना की पूर्ति होने पर शनिवार के व्रत का उद्‌यापन करें। तेंतीस ब्राहमणों को भोजन करावे, व्रत का विसर्जन करे। इस प्रकार व्रत का उद्यापन करने से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है एवं सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती हैं। कामना पूर्ति होने पर यदि यह व्रत किया जाए, तो प्राप्त वस्तु का नाश नहीं होता।

ज्योतिष शास्त्र में शनि राहु और केतु के कष्ट निवारण हेतु भी शनिवार के व्रत का विधान हैं। इस व्रत में शनि की लोहे की, राहु व केतु की शीशे की मूर्ति बनवाएं।

- कृष्ण वर्ण वस्त्र, दो भुजा दण्ड और अक्षमालाधारी, काले रंग के आठ घोड़े वाले रथ में बैठे शनि का ध्यान करे।
- कराल बदन, खड्ग, चर्म और शूल से युक्त नीले सिंहासन पर विराजमान वरप्रद राहु का ध्यान करे।

- धूम्रवर्ण, गदादि आयुधों से युक्त, गृद्धासन पर विराजमान विकटासन और वरप्रद केतु का ध्यान करे।

इन्ही स्वरूपों में मुर्तियों का निर्माण करावे अथवा गोलाकार मूर्ति बनावे या बाजार से खरीद ले।

काले रंग के चावलोम से चौबीस दल का कमल निर्माण करे। कमल के मध्य में शनि, दक्षिण भाग में राहु और वाम भाग में केतु की स्थापना करे। रक्त चंदन में केशर मिलाकर, गंध चावल में काजल मिलाकर, काले चावल, काकमाची, कागलहर के काले पुष्प, कस्तूरी आदि से 'कृष्ण धूप' और तिल आदि के संयोग से कृष्ण नैवेद्य (भोग) अर्पण करे और इस मंत्र से प्रार्थना एवं नमस्कार करें-

शनैश्चर नमस्तुभ्यं नमस्तेतवथ राहवे।
केतवेऽथ नमस्तुभ्यं सर्वशांति प्रदो भव॥
ॐ ऊर्ध्वकायं महाघोरं चंडादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकायाः सुतं रौद्रं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ पातालधूम संकाशं ताराग्रहविमर्दनम्।
रौर्म रौद्रात्मकं क्रूरं तं केतु प्रणमाम्यहम्॥

सात शनिवार का व्रत करे। शनि हेतु शनि-मंत्र से शनि की समिधा में, राहु हेतु राहु मंत्र से पूर्वा की समिधा में, केतु हेतु केतु मंत्र से कुशा की समिधा में, कृष्ण जौ के घी व काले तिल से प्रत्येक के लिए १०८ आहुतिया दे और ब्राह्मण को भोजन करावे।

इस प्रकार शनिवार के व्रत के प्रभाव से शनि और राहु-केतु जनित कष्ट, सभी प्रकार के अरिष्ट तथा आदि-व्याधियों का सर्वथा नाश होता हैं।

श्री शनिवार व्रत कथा

पौराणिक कथा के अनुशार एक बार समस्त प्राणियों का हित चाहने वाले मुनिगण नैमिषारण्य में एकत्र हुए। उस समय व्यास जी के शिष्य सूतजी अपने शिष्यो के साथ श्रीहरि का स्मरण करते हुए वहां पर आए। समस्त शास्त्रों के ज्ञाता श्री सूतजी को आया देखकर महातेजस्वी शौनकादि मुनियों ने उठकर श्री सूतजी को प्रणाम किया। मुनियों द्वारा दिए आसन पर श्री सूतजी बैठ गए।

श्री सूतजी से शौनक आदि मुनियों ने विनयपूर्वक पूछा- हे मुनि! इस कलिकाल में हरि भक्ति किस प्रकार से होगी? सभी प्राणी पाप करने में तत्पर होंगे, मनुष्यों की आयु कम होगी। ग्रह कष्ट, धन रहित और अनेक पीड़ायुक्त मनुष्य होंगे। हे सूतजी! पुण्य अति परिश्रम से प्राप्त होता है, इस कारण कलियुग में कोई भी मनुष्य पुण्य न कर पायेगा। पुण्य के नष्ट होने से मनुष्यों की प्रकृति पापमय होगी, इस कारण तुच्छ विचार करने वाले मनुष्य अपने अंश सहित नष्ट

हो जाएंगे। हे सूतजी! जिस तरह थोड़े ही परिश्रम, थोड़े धन से, थोड़े समय में पुण्य प्राप्त हो, ऐसा कोई उपाय हम लोगों को बतलाइए। हे महामुने, हमने यह भी सुना है कि शनि के प्रकोप से देवता भी मुक्त नहीं हो पाते । शनि की क्रूर दृष्टि ने भगवान श्रीगणेश जी का सिर उसके पिता के हाथों कटवा दिया। शनि की दृष्टि कष्टों को देने वाली हैं, इसलिए कोई ऐसा व्रत बताएं, जिसे करने से शनिदेव प्रसन्न हो।

सूतजी बोले- हे मुनिश्रेष्ठ तुम धन्य हो। तुम्हीं वैष्णवों में अग्रगण्य हो, क्योंकि सब प्राणियों का हित चाहते हो। मैं आपसे उत्तम व्रत को कहता हूं। ध्यान देकर सुनें- इसके करने से भगवान शंकर प्रसन्न होते है और शनि ग्रह के कष्ट प्राप्त नहीं होते।

हे ऋषियो! युधिष्ठिर आदि पांडव जब वनवास में अनेक कष्ट भोग रहे थे, उस समय उनके प्रिय सखा श्रीकृष्ण उनके पास पहुंचे। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण का बहुत आदर किया और सुंदर आसन पर बैठाया। श्रीकृष्ण बोले- हे युधिष्ठिर! कुशलपूर्वक तो हो? युधिष्ठिर ने कहा- हे प्रभो! आपकी कृपा है। आपसे कुछ छिपा नहिं है! कृपाकर कोई ऐसा उपाय बतलाएं, जिसके करने से यह ग्रह कष्ट न व्यापे। हमें इससे छुटकारा मिले। यह शनि ग्रह बहुत कष्ट देता है।

श्रीकृष्ण बोले- राजन! आपने बहुत ही सुंदर बात पूछी है। आपसे एक उत्तम व्रत कहता हूं, सुनो। जो मनुष्य भक्ति और श्रद्धायुक्त होकर शनिवार के दिन भगवान शंकर का व्रत करते हैं, उन्हें शनि की ग्रह दशा मे कोई कष्ट नहीं होता। उनको निर्धनता नहीं सताती तथा इस लोक में अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर अंत में शिवलोक की प्राप्ति होती है। युधिष्ठिर बोले- हे प्रभु! सबसे पहले यह व्रत किसने किया था, कृपा करके इसे विस्तारपूर्वक कहें तथा इसकी विधि भी बतलाएं।

भगवान श्रीकृष्ण बोले- राजन! शनिवार के दिन, विशेषकर श्रावण मास में शनिवार के दिन लौहनिर्मित प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर, अनेक प्रकार के गंध, अष्टांग, धूप, फल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करे, शनि के दस नामों का उच्चारण करे। तिल, जौ, उड़द, गुड़, लोहा, नीले वस्त्र का दान करे। फिर भगवान शंकर का विधिपूर्वक पूजन कर आरती-प्रार्थना करे- हे भोलेनाथ! मैं आपकी शरण हूं, आप मेरे ऊपर कृपा करें। मेरी रक्षा करें।

हे युधिष्ठिर! पहले शनिवार को उड़द का भात, दूसरे को केवल खीर, तीसरे को खजला, चौथे को पूरियों का भोग लगावे। व्रत की समाप्ति पर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे। इस प्रकार करने से सभी अनिष्ट, कष्ट, आधिव्यादियों का सर्वथा नाश होता है। शनि, राहु, केते से प्राप्त होने वाले दोष दूर होते हैं और

अनेक प्रकार के सुख-साधन एवं पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त होता हैं।

सबसे पूर्व जिसने इस व्रत को किया था, उसका इतिहास भी सुनो-

पूर्वकाल में इस पृथ्वी पर एक राजा राज्य करता था। राजाने अपने शत्रुओं को अपने वश में कर लिया। दैव गति से राजा और राजकुमार पर शनि की दशा आई। राजा को उसके शत्रुओं ने मार दिया। राजकुमार भी बेसहारा हो गया। राजगुरु को भी बैरियों ने मार दिया। उसकी विधवा ब्राह्मणी तथा उसका पुत्र शुचिव्रत रह गया। ब्राह्मणी ने राजकुमार धर्मगुप्त को अपने साथ ले लिया और नगर को छोड़कर चल दी।

गरीब ब्राह्मणी दोनों कुमारो का बहुत कठिनाई से निर्वाह कर पाती थी। कभी किसी शहर में और कभी किसी नगर में दोनों कुमारों को लिए घूमती रहती थी। एक दिन वह ब्राह्मणी जब दोनों कुमारों को लिए एक नगर से दुसरे नगर जा रही थी कि उसे मार्ग में महर्षि शांडिल्य के दर्शन हुए। ब्राह्मणी ने दोनों बालकों के साथ मुनि के चरणों मे प्रणाम किया और बोली- महर्षि! मैं आज आपके दर्शन कर कृतार्थ हो गई। यह मेरे दोनों कुमार आपकी शरण है, आप इनकी रक्षा करें। मुनिवर! यह शुचिव्रत मेरा पुत्र है और यह धर्मगुप्त राजपुत्र है और मेरा धर्मपुत्र है। हम घोर दारिद्र्य में हैं, आप हमारा उद्धार कीजिए। मुनि शांडिल्य ने ब्राह्मणी की सब बात सुनी और बोले-देवी! तुम्हारे ऊपर शनि का प्रकोप है, अतः आप शनिवार के दिन व्रत करके भोले शंकर की आराधना किया करो, इससे तुम्हारा कल्याण होगा।

ब्राह्मणी और दोनों कुमार मुनि को प्रणाम कर शिव मंदिर के लिए चल दिए। दोनों कुमारों ने ब्राह्मणी सहित मुनि के उपदेश के अनुसार शनिवार का व्रत किया तथा शिवजी का पूजन किया। दोनों कुमारों को यह व्रत करते-करते चार मास व्यतीत हो गए। एक दिन शुचिव्रत स्नान करने के लिए गया। उसके साथ राजकुमार नहीं था। कीचड़ में उसे एक बहुत बड़ा कलश दिखाई दिया। शुचिव्रत ने उसको उठाया और देखा तो उसमें धन था। शुचिव्रत उस कलश को लेकर घर आया और मां से बोला- हे मां! शिवजी ने इस कलश के रुप में धन दिया है।

माता ने आदेश दिया- बेटा! तुम दोनों इसको बांट लो। मां का वचन सुनकर शुचिव्रत बहुत ही प्रसन्न हुआ और धर्मगुप्त से बोला- भैया! अपना हिस्सा ले लो। परंतु शिवभक्त राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा-मां! मैं हिसा लेना नहीं चाहता, क्योंकि जो कोई अपने सुकृत से कुछ भी पाता है, वह उसी का भाग है और उसे आप ही भोगना चाहिये। शिवजी मुझ पर भी कभी कृपा करेंगे।

धर्मगुप्त प्रेम और भक्ति के साथ शनि का व्रत करके पूजा करने लगा। इस प्रकार उसे एक वर्ष व्यतीत हो गया। बसंत ऋतु का आगमन हुआ। राजकुमार धर्मगुप्त तथा ब्राह्मण पुत्र शुचिव्रत दोनों ही वन में घूमने गए। दोनों वन में घूमते-घूमते काफी दूर निकल गए। उनको वहां सैकड़ों गंधर्व कन्याएं खेलती हुई मिलीं। ब्राह्मण कुमार बोला- भैया! चरित्रवान पुरुषों को चाहिए कि वे स्त्रियों से बचकर रहें। ये मनुष्य को शीघ्र ही मोह लेती हैं। विशेष रूप से ब्रह्मचारी को स्त्रियों से न तो संभाषण करना चाहिए, तथा न ही मिलना चाहिए। परंतु गंधर्व कन्याओं की क्रीड़ा को देखने की इच्छा रखने वाला राजकुमार उनके पास अकेला चला गया।

गंधर्व कन्याओं में से एक सुंदरी उस राजकुमार पर मोहित हो गई और अपनी सखियों से बोली- यहां से थोड़ी दूरी पर एक सुंदर वन है, उसमें नाना प्रकार के फूल खिले हैं। तुम सब जाकर उन सुंदर फूलों को तोड़कर ले आओ, तब तक मैं यहीं बैठी हूं। सखियां उस गंधर्व कन्या की आज्ञा पाकर चली गई और वह सुंदर गंधर्व कन्या राजकुमार पर दृष्टि गड़ाकर बैठ गई। उसे अकेला देखकर राजकुमार भी उसके पास चला आया।

राजकुमार को देखकर गंधर्व कन्या उठी और बैठने के लिए कमल-पत्तों का आसन दिया। राजकुमार आसन पर बैठ गया। गंधर्व कन्या ने पूछा- आप कौन है? किस देश के रहने वाले हैं तथा आपका आगमन कैसे हुआ है? राजकुमार ने कहा- मैं विदर्भ देश के राजा

का पुत्र हूं, मेरा नाम धर्मगुप्त है। मेरे माता-पिता स्वर्गलोक सिधार चुके हैं। शत्रुओं ने मेरा राज्य छीन लिया है। मैं राजगुरु की पत्नी के साथ रहता हूं, वह मेरी धर्म माता हैं।

फिर राजकुमार ने उस गंधर्व कन्या से पूछा- आप कौन है? किसकी पुत्री हैं और किस कार्य से यहां पर आपका आगमन हुआ है?

गंधर्व कन्या ने कहा- विद्रविक नाम के गंधर्व की मैं पुत्री हूं। मेरा नाम अंशुमति है। आपको आता देख आपसे बात करने की इच्छा हुई, इसी से मैं सखियों को अलग भेजकर अकेली रह गई हूं। गंधर्व कहते हैं कि मेरे बराबर संगीत विद्या में कोई निपुण नहीं है। भगवान शंकर ने हम दोनों पर कृपा की है, इसलिए आपको यहां पर भेजा है। अब से लेकर मेरा-आपका प्रेम कभी न टूटे। ऐसा कहकर कन्या ने अपने गले का मोतियों का हार राजकुमार के गले में डाल दिया।

राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा- मेरे पास न राज है, न धन। आप मेरी भार्या कैसे बनेंगी? आपके पिता है, आपने उनकी आज्ञा भी नहीं ली। गंधर्व कन्या बोली- अब आप घर जाएं, लेकिन परसों प्रातःकाल यहां अवश्य पधारें। राजकुमार से ऐसा कहकर गंधर्व कन्या अपनी सहेलियों के पास चली गई। राजकुमार धर्मगुप्त शुचिव्रत के पास चला आया और उसे सब समाचार कह सुनाया।

राजकुमार धर्मगुप्त तीसरे दिन शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में गया। उसने देखा कि स्वयं गंधर्वराज विद्रविक उस कन्या को साथ लेकर उपस्थित हैं। गंधर्वराज ने दोनों कुमारों का अभिवादन किया और दोनों को सुंदर आसन पर बिठाकर राजकुमार से कहा राजकुमार! मैं परसों कैलाश पर गौरी शंकर के दर्शन करने गया था। वहां करुणारूपी सुधा के सागर भोले शंकरजी महाराज ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा- गंधर्वराज! पृथ्वी पर धर्मगुप्त नाम का राजभ्रष्ट राजकुमार है।

उसके परिवार के लोगों को शत्रुओं ने समाप्त कर दिया है। वह बालक गुरु के कहने से शनिवार का व्रत करता है और सदा मेरी सेवा में लगा रहता है। तुम उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सके।

गौरीशंकर की आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपने घर चला आया। वहां मेरी पुत्री अंशुमति ने भी ऐसी ही प्रार्थना की। शिवशंकर की आज्ञा तथा अंशुमति के मन की बात जानकर मैं ही इसको इस वन में लाया हूं।

मैं इसे आपको सौंपता हूं। मैं आपके शत्रुओं को परास्त कर आपको आपका राज्य दिला दूंगा।

ऐसा कहकर गंधर्वराज ने अपनी कन्या का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया तथा अंशुमति की सहेली की शादी ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत के साथ कर दी। उसने राजकुमार की सहायता के लिए गंधर्वो की चतुरंगिणी सेना भी दी।

धर्मगुप्त के शत्रुओं ने जब यह समाचार सुना तो उन्होने राजकुमार का अधीनता स्वीकार कर ली और राज्य भी लौटा दिया। धर्मगुप्त सिंहासन पर बैठा। उसने अपने धर्म भाई शुचिव्रत को मंत्री नियुक्त किया। जिस ब्राह्मणी ने उसे पुत्र की तरह पाला था, उसे राजमाता बनाया। इस प्रकार शनिवार के व्रत के प्रभाव और शिवजी की कृपा से धर्मगुप्त फिर से विदर्भराज हुआ।

श्रीकृष्ण भगवान बोले- हे पांडुनंदन! आप भी यह व्रत करें तो कुछ समय बाद आपको राज्य प्राप्त होगा और सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। आपके बुरे दिनों की शीघ्र समाप्ति होगी।

युधिष्ठिर ने शनिवार व्रत की कथा सुनकर श्रीकृष्ण भगवान की पूजा की और व्रत आरंभ किया। इसी व्रत के प्रभाव से महाभारत में पांडवोंने द्रोण, भीष्म और कर्ण जैसे महारथियों को परास्त किया- सबसे बढ़कर उन्हें श्रीकृष्ण जैसा योग्य सारथी मिला तथा छिना हुआ राज्य प्राप्त कर वर्षों तक उसका सुख भोगा और फिर देह त्यागकर स्वर्ग की प्राप्ति की।

शनि प्रदोष व्रत का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सनातन धर्म में प्रदोष व्रत का विशेष महत्व माना जाता हैं। प्रत्येक माह के शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों के तेरहवें दिन अर्थात त्रयोदशी को प्रदोष व्रत कहाजाता हैं।

इस दिन किए जाने वाले व्रत को प्रदोष व्रत कहा जाता हैं। प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना करने का विधान हैं।

विद्वानो के मतानुशार प्रदोष व्रत से व्यक्ति को सफलता, शान्ति प्रदान करने वाला एवं उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाला हैं। एसी धार्मिक मान्यता हैं कि प्रदोष के दिन भगवान शिव के किसी भी रूप का दर्शन करने मात्र से व्यक्ति की सारी अज्ञानता का नाश कर देता हैं और भक्त को शिव की कृपा का भागी बनाता हैं।

जब शनिवार के दिन प्रदोष व्रत पड़ता हैं, तो उसे शनि प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता हैं। शनिदेव नवग्रहों में से एक महाग्रह हैं। शनिदेव के बारे में शास्त्रों में वर्णन है कि शनि का कोप अत्यन्त भयंकर होता हैं। भयंकर कोप शान्त करने हेतु पुराणों में उल्लेख हैं की शनि प्रदोष व्रत करने से शनि देव का प्रकोप स्वतः शान्त हो जाता है।

जिन लोगों पर शनि की साढ़ेसाती और ढैया का प्रभाव हो, उनके लिए शनि प्रदोष व्रत करना विशेष हितकारी माना गया है। पूर्ण विधि-विधान व निष्ठा से किया गया प्रदोष व्रत शनिदेव की कृपा प्राप्त करने का एक शास्त्रोक्त व आसान उपाय है। प्रदोष व्रत के प्रभाव से शनि से संबंधित पीडा दूर होती हैं, और शनिदेव का आशीर्वाद भी मिलता है जिससे व्यक्ति की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती जाती हैं।

शनि प्रदोष के दिन शनि की कारक वस्तुओं जैसे लोहा, तैल, काले तिल, काली उड़द, कोयला और कम्बल आदि का दान करना शुभ फलप्रद होता हैं, और शनि-मंदिर में जाकर तैल का दिया जलाता है तथा उपवास करता है, शनिदेव उससे प्रसन्न होकर उसके सारे दुःखों को दूर कर देते हैं। विद्वानो के अनुशार शास्त्रों में वर्णित है कि उत्तम संतान की कामना रखने वाले दम्पत्ति को शनि प्रदोष व्रत अवश्य करना चाहिए। शास्त्रो में शनि प्रदोष व्रत शीघ्र ही संतान देने वाला माना गया हैं।

संतान-प्राप्ति के हेतु शनि प्रदोष वाले दिन सुबह स्नानादी करने के पश्चात पति-पत्नी को मिलकर शिव-पार्वती और गणेश की का विधि-विधान से पूजन-अर्चन करना चाहिए और शिवलिंग पर जलाभिषेक करना चाहिए। इसके पश्चयात शनिदेव की कृपा प्राप्त करने हेतु पीपल के वृक्ष की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए। साथ ही दम्पत्ति को पूरे दिन उपवास करना चाहिए। ऐसा करने से जल्दी ही संतान की प्राप्ति होती है। शनि प्रदोष व्रत के दिन साधक को संध्या-काल में भगवान का भजन-पूजन करना चाहिए और शिवलिंग का जल और बिल्व की पत्तियों से अभिषेक करना चाहिए। साथ ही इस दिन महामृत्युंजय-मंत्र के जाप का भी विधान है। इस दिन प्रदोष व्रत कथा का पाठ करना चाहिए और पूजा के बाद भभूत को मस्तक पर लगाना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार जो साधक इस तरह शनि प्रदोष व्रत का पालन करता है, उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं और सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी होती

शनि-साढ़ेसाती के शांति उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः"** इस मंत्र का जप प्रतिदिन १०८ बार करने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- श्री शिवलिंग पर ताँबे का सर्प (नाग) चढ़ाने से शनि साढेसाती का अशुभता में कमी आती हैं।
- आक के पौधे पर सात शनिवार तक लोहे की सात कील चढ़ाने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- किसी मंदिर में काले रंग की वस्तुएं एवं सात बादाम सात शनिवार तक लगातार दान करने से शनि की साढेसाती में शनि से संबंधित कष्ट दूर होते हैं।
- हनुमान की पूजा-अर्चना करने से हनुमानजी की प्रतिमा को सिंदूर व तेल चढाने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- शनिवार का व्रत करने से भी शनि के अशुभ प्रभवो में कमी आति हैं।
- शनिवार को किसी हनुमान जी की प्रतिमा को सिंदूर, चमेली का तेल, चांदी के वर्क का चोला चढ़ाए। हनुमानजी को जनेऊ, लाल फूल की माला, लड्डु तथा पान अर्पण करने से साढ़ेसाती से संबंधित कष्टो से छुटकारा मिलता हैं।
- सप्तधान अर्थात सात प्रकार के अन्न का दान करने से व शनिवार को प्रातः पीपल का पूजन कर पीपल के मूल में जल अर्पण करने से भी विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।
- स्नान करते समय लाजवन्ती, लौंग, लोबान, चौलाई, काला तिल, गौर, काली मिर्च, मंगरैला, कुल्थी, गौमूत्र आदि में से पांच या सात या उस्से से अधिक वस्तु जो भी प्राप्त हो उसका चूर्ण बना कर को जल में मिलाकर दक्षिण दिशा की और मुख कर के खड़े होकर स्नान करें। इस जल से स्नान करने के पश्चात् किसी भी तरह का साबुन या तेल का प्रयोग नहीं करें। इस जल को शरीर पर डालने से पूर्व साबुन आदि लगले व शुद्ध पाने से झाग को साफ करने के पश्चयात औषधि मिले जल से स्नान किया जा सकता हैं।
- शनिवार के दिन शनि से संबंदित वस्तुएं जेसे काले उड़द, तेल, काले तिल, लोहे से बनी वस्तु, श्याम वस्त्र आदि का दान देने से शनि पीड़ा का शमन होता हैं।
- एक सूखा नारियल लेकर उसमें चाकू या किल से छोटा सा गोल छेद बना लें। इस छेद में नारियल में आटे का बूरा, बादाम, काजू, किशमिश, पिस्ता, अखरोट या छुआरा मिलाकर नारियल में भरें। नारियल को पुनः बन्द कर किसी पीपल के पास भूमि के अन्दर इस प्रकार गाड़ दें की चीटियां आसानी से तलाश लें, किन्तु अन्य जानवर न पा सकें। घर लौटकर हाथ-पैर धोकर घर में प्रवेश करें। इस प्रकार ८ शनिवार तक यह क्रिया सम्पन्न करने से शनि पीडाका शमन होता हैं।
- शिवलिंग पर कच्चा दूध चढाते हुए **"अमोघ शिव कवच"** का पाठ करने से शनि पीडा शांत होती हैं।
- प्रत्येक शनिवार को मछलियों को जौ के आटे से बनी गोलियाँ खाने को डालने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- प्रतिदिन **शनि वज्रपंजर कवच**, **दशरथ-कृत-शनि-स्तोत्र** अथवा **शनैश्चरस्तवराजः** का नियमित पाठ करने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- भोजन करने से पूर्व परोसी गयी थाली में से एक ग्रास निकालकर काले कुत्ते को खिलाएँ अथवा शनिवार को शाम के समय उड़द की दाल के पकौडे व इमरती कुत्ते को खिलाए।
- शनिवार के दिन काले कपड़े में जौ, नारियल, लोहे की चौकोर शीट, काले तिल, कच्चे कोयले व काले चने को पोटली में बांधकर बहते हुए पानी में डालना लाभप्रद होता हैं।

- काली गाय व काले कुत्ते को तेल से चुपड़ी रोटी, चने की दाल व गुड खिलाना लाभप्रद रहता है।
- वट वृक्ष को दूध में शहद व गुड़ को मिलाकर सींचने से लाभ होता हैं।
- शनिवार, अमावस्या आदि विशेष दिनों पर 'शनि-मन्दिर' में जाकर आक-पर्ण (मदार के पत्ते) एवं पुष्पों की माला मूर्ति पर चढ़ाएँ। एक या आधा चम्मच तेल भी चढ़ाने से लाभ होता है।
- लोहे में बना प्राण-प्रतिष्ठित शनियंत्र प्राप्त करले लें।

शिवलिंग का यथा शक्ति पूजन करें। हो सके, जलाभिषेक करें। पाँच श्वेत पुष्प और एक बिल्व-पत्र चढ़ाएँ। शिव-मन्त्र का जप करें, फिर प्रार्थना करें। यथा- **ॐ श्रीशंकराय नमः। श्रीकैलास-पतये नमः। श्रीपार्वती-पतये नमः। श्रीविघ्न-हर्ताय नमः। श्रीसुख-दात्रे नमः। ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!**

इस प्रकार प्रार्थना के शिवलिंग के सामने एक नारियल और एक मुट्ठी गेहूँ रखें। नमस्कार कर घर वापस आएँ।

शनि एवं शनि-भार्या-स्तोत्र का नित्य तीन पाठ करने से **'शनि-ग्रह'** की पीड़ा निश्चय की दूर होती है।

शनि-भार्या-स्तोत्र

यः पुरा राज्य-भ्रष्टाय, नलाय प्रददो किल। स्वप्ने शौरिः स्वयं, मन्त्रं सर्व-काम-फल-प्रदम्॥१॥ क्रोडं नीलाञ्जन-प्रख्यं, नील-जीमूत-सन्निभम्। छाया-मार्तण्ड सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्॥२॥ ॐ नमोऽर्क-पुत्राय शनैश्चराय, नीहार-वर्णाञ्जन-नीलकाय।स्मृत्वा रहस्यं भुवि मानुषत्वे, फल-प्रदो मेभव सूर्य-पुत्र॥३॥ नमोऽस्तु प्रेत-राजाय, कृष्ण-वर्णाय ते नमः। शनैश्चराय क्रूराय, सिद्धि-बुद्धि प्रदायिने॥४॥ य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहम्। मामकानां भयं तस्य, स्वप्नेष्वपि न जायते॥५॥ गार्गेय कौशिकस्यापि, पिप्लादो महामुनिः। शनैश्चर-कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥६॥ क्रोडस्तु पिंगलो बभ्रुः, कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। शौरिः शनैश्चरो मन्दः, पिप्लादेन संयुतः॥७॥ एतानि शनि-नामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्। तस्य शौरेः कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥८॥ ध्वजनी धामनी चैव, कंकाली कलह-प्रिया। कलही कण्टकी चापि, अजा महिषी तुरगंमा॥९॥ नामानि शनि-भार्यायाः, नित्यं जपति यः पुमान्। तस्य दुःखा विनश्यन्ति, सुख-सौभाग्यं वर्द्धते॥१०॥

श्री शनि चालीसा

दोह

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि,। कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥
जयति जयति शनिदेव दयाला। करत यदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै। माथे रतन मुकुट छवि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके। हिये माल मुक्तत मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशुल कुठारा। पल विच करैं आरिहिं संहारा॥
पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन। यम कोणस्थ, रौद्र, दुःखभंजन॥
सौरी, मन्द, शनि दशनामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं। रकंहुं राव करै क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होई निहारत। तृणहू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो। कैकेइहुं की मति हरि लीन्हों॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई। मातु जानकी गई चतुराई॥
लखनहिं शक्ति विकल करि डारा। मचिंगा दल में हाहाकारा॥
रावण की गति मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरंग बीर की डांका॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा॥
हार नौलाखा लाग्यो चोरी। हाथ पैर डरवायो तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहिं घर कोल्हू चनवायो॥
विनय राग दीपक महं कीन्हों। तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हों॥
हरिश्रचन्द् नृप नारि बिकानी। आपहु भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी। भूजी मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहि गहयो जब जाई। पार्वती को सती कराई॥
तनिक विलोकत ही करि रीसा। नभ ठडि गयो गौरिसुत सीसा॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी। बची द्रौपदी होति उघारी॥
कौरव के भी गति मारयो। युद्ध महाभारत करि डारयो॥
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला। लेकर कूदि परयो पाताला॥
शेष देव-लखि विनती लाई। रवि को मुख ते दियो छुड़ई॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना। जग दिग्ज गर्दभ मृग स्वाना॥
जम्बुक सिंह आदि नखधारी। सो फल जज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवै। हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करै बहु नष्ट कर डारै। मृग दे कष्ट प्रण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी। चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा। स्वर्ण लौह चांजी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं। धन जन सम्पत्ति नष्ट करावै॥
समता ताम्र रजत शुभकारी। स्र्वण सर्व सुख मंगल कारी॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै। कबहु न दशा निकृष्ट समावै॥
अदभुत नाथ दिखावैं लीला। करै शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई। विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत। दीप दान दे बहु सुख पावत॥
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा। शनि सुमिरत सुख होत प्रकाश॥

दोहा

पाठ शनिचर देव को की विमल तैयार।
करत पाठ चालिस दिन हो भवसागर पार॥

शनि सम्बन्धी व्यापार और नौकरी

काले रंग की वस्तुयें, लोहा से बनी वस्तुयें, ऊन, तेल, गैस, कोयला, कार्बन से बनी वस्तुयें, चमडा, मशीनों के पार्ट्स, पेट्रोल, पत्थर, तिल और रंग का व्यापार शनि से जुडे जातकों को फ़ायदा देने वाला होता है.चपरासी की नौकरी, ड्राइवर, समाज कल्याण की नौकरी नगर पालिका वाले काम, जज, वकील, राजदूत आदि वाले पद शनि की नौकरी मे आते हैं।

शनि सम्बन्धी दान पुण्य

पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों के समय में शनि पीडा के निवारण के लिए स्वयं के वजन के बराबर या दशांश वजन के काले चने, काले कपडे, जामुन के फ़ल, काले उडद, काली गाय, काले जूते, तिल, भैंस, लोहा, तेल, नीलम, कुलथी, काले व नीले फ़ूल, कस्तूरी आदि दान की वस्तुओं का दान किया जाता है। यदि इन नक्षत्रो व शनिवार का संयोग हो तो और भी उत्तमफल प्राप्त होते हैं।

सामुद्रिक शास्त्र में शनि रेखा का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र भी ज्योतिष शास्त्र की तरह कई रहस्यो से भरा हुवा महासागर की तरह गहरा है। जिसमे हाथ का आकार, रेखा, नाखून, हथेली का रंग एवं हथेली पर स्थित पर्वतों को काफी महत्व दिया गया है। सामुद्रिक शास्त्र में मनुष्य की हथेली पर ग्रहो में प्रमुख नवग्रहो के लिए अलग अलग स्थान निर्धारित किया गया हैं। उन ग्रहों के लिए निर्घारित किये गये स्थान को ही पर्वत कहा गया हैं। जानकारो की माने तो हथेली पर स्थित पर्वत हमारे शरीर के चुम्बकीय केन्द्र होते हैं जो संबंधित ग्रहों से उर्जा प्राप्त कर मस्तिष्क एवं शरीर के विभिन्न हिस्सो तक उस उर्जा को पहुंचाते हैं।

इस अंक में हम आपका मर्गदर्शन कर रहे हैं।

शनि पर्वत व शनि रेखा

हथेली पर मध्यमा अंगुली अर्थात सबसे बडी वाली अंगुली (मिडील फिंगर) के मूल में शनि का स्थान होता है जिसे शनि पर्वत कहा जाता हैं। हथेली पर स्थित शनि पर्वत से व्यक्ति का स्वभाव, गृहस्थ जीवन और स्वास्थ्य को दर्शाता हैं। हथेली पर स्थित शनि पर्वत व्यक्ति की साधरण-आसाधारण प्रकृति के बारें में सरलता से ज्ञात किया जा सकता है।

पूर्ण विकसित:

जिस व्यक्ति की हथेली में शनि पर्वत उभरा हुवा अर्थात पूर्ण विकसीत हो एसे व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होते हैं, इन्हें अपनी मेहनत का पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। व्यक्ति अपनी मेहनत के बल पर श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त करते हैं। एसे व्यक्ति अधिकतर अकेले रहना पसंद करते देखे गये हैं। व्यक्ति का स्वभाव थोडा चिड़चिड़ा होता हैं।

एसे व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। दिन प्रति-दिन सफलता प्राप्त करते जाते हैं। एसे व्यक्ति अपने कार्य के प्रति अत्याधिक समर्पित होते हैं जिस कारण वह अपने गृहस्थ जीवन की परवाह नहीं करते! लेकिन उन्नत शनि पर्वत होने के कारण कभी-कभी व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति सजग और जिम्मेदार भी होता है। व्यक्ति समय के साथ साथ ज्यादा रहस्यवादी होते जाते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत उभरहुवा और प्रभावशाली होता हैं। वह व्यक्ति सफल रहस्यवादी विषयो के जानकार जेसे जादूगर, इंजीनियर शोध कर्ता आदि होते हैं। व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण मितव्ययी होते हैं। व्यक्ति अचल सम्पति खरीदने में ज्यादा विश्वास रखते हैं।

संगीत, नृत्य आदि कला में इनका रूझान कम रहता हैं। ऐसे व्यक्ति थोडे शकी मिजाज के होते हैं। बचपन से ही इनके दिमाग में छोटी-छोटी बातो को लेकर सन्देहशीलता होती हैं इस कारण व्यक्ति अपने परिजनो पर भी शक करने से नहीं चूकते।

कुछ जानकारो के अनुशार अत्याधिक विकसित अर्थात उभरा शनि पर्वत व्यक्ति को आत्महत्या करने को प्रेरित करता हैं। जरूरत से ज्यादा विकसित शनि पर्वत वाले व्यक्ति धृतकार्य करने वाले जैसे डाकू, ठग, लुटेरे, आदि होता हैं। ऐसे व्यक्तियों की हथेली में शनि पर्वत साधारणत: पीलापन लिए हुए होता हैं। इनकी हथेलियां कुछ पीलापन लिये होती हैं।

शनि पर्वत शुभ लक्ष्ण युक्त हो तो मनुष्य, इंजीनियर, वैज्ञानिक, जादूगर, साहित्यकार, ज्योतिषी, कृषक अथवा रसायन शास्त्री होते हैं।

शुभ शनि पर्वत वाले व्यक्ति प्राय: अपने माता-पिता की इकलौती संतान या सभी संतानो में से अधिक प्रिय होते हैं।

स्वभाव से संतोषी और थोडे कंजूस होते हैं।

एसे व्यक्ति यदि लेखन कार्य से जुडे हो, तो धार्मिक व रहस्यवाद लेखन उनका प्रिय विषय होता है।

मध्याम विकसित पर्वत:

शनि पर्वत के मध्यम विकसित होने से व्यक्ति अपने जीवन में मध्यम सफलता व सम्मान प्राप्त कर पाता।

अविकसित पर्वत:

यदि किसी व्यक्ति की हथेली में शनि पर्वत नही होता है तो उस व्यक्ति का जीवन उद्देश्यहीन व महत्वहीन होता हैं। यदि शनि पर्वत सामान्य रूप से उभरा हुआ हो तो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भाग्य पर विश्वास करने वाला होता हैं। उसे अपने अधिकतर कार्यो में असफलता प्राप्त होती है। यदि मध्यमा अंगुली का सिरा नुकीला हो और शनि पर्वत विकसित हो तो व्यक्ति अत्याधिक कल्पनाशिल होता है।

व्यक्ति के हाथ-पैर ठंडे होते हैं, दांत रोग भी होता हैं। एसे व्यक्ति को दुर्घटनाओं में अधिकतर पैरों और नीचे के अंगों में चोट लगती हैं। उनका स्वास्थ्य अधिकतर निर्बल होता हैं।

यदि शनि पर्वत गुरू पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो यह शुभफल प्राप्त होने के संकेत हैं। व्यक्ति को समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति होती हैं।

यदि शनि पर्वत सूर्य पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो यह व्यक्ति के आलसी, निर्धन होने के लक्षण होते हैं। एसे व्यक्ति अपने भाग्य के भरोसे पर जीवित रहने वाले होते हैं। इनमें जरूरत से ज्यादा हताशा और निराशा के भाव होते हैं। एसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य को नकारात्मक द्रष्टी से ही देखते हैं।

यदि शनि पर्वत पर जरूरत से ज्यादा रेखाएं स्थित हों तो व्यक्ति डरपोक, कायर और बहुत भोगप्रिय होता हैं।

यदि हथेली पर शनि पर्वत और बुध पर्वत दोनों ही पूर्ण विकसित हो, तो व्यक्ति एक सफल व्यापारी होता हैं। उसे अपने जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

शनि के विभिन्न पाया का प्रभाव

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुशार किसी भी व्यक्ति की जन्म राशि से शनि जिस भी भाव में गोचर कर रहा होता है। उसके अनुसार शनि के पाया अर्थात पाद फल विचार किया जाता हैं। व्यक्ति की जन्म कुण्डली से शनि पाया के फलों का विस्तार से अध्ययन किया जाता हैं।

जन्म राशि के अनुसार शनि पाया की शुभता या अशुभता का निर्धारण निम्न रुप से किया जाता हैं।

जब शनि गोचर में किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 1, 6, 11 भाव में भ्रमण करते है, तो शनि के पाद स्वर्ण के माने जाते हैं। उसी तरह जब शनि किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 2, 5, 9 वें भाव में गोचर करते है. तो शनि के पाद रजत के माने जाते हैं। जब शनि किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 3, 7, 10 वें भाव में गोचर करते है, तो शनि के पाद ताम्र के माने जाते हैं और जब शनि किसी व्यक्ति की जन्म राशि से 4, 8, 12 वें भाव में भ्रमण करते है, तो शनि के पाद लोहे के माने जाते हैं।

शास्त्रोक्त विधान से शनि पाया की अवधि में मिलने वाले सामान्य फल

1. सोने का पाया की अवधि के फल

सोने का पाया की अवधि में व्यक्ति को कई प्रकार के सुख-साधन प्राप्त होने की संभावनाएं अधिक बनती हैं। आर्थिक द्रष्टी से धन व समृद्धि की वृद्धो के लिये भी यह समय व्यक्ति के अनुकुल होता हैं।

2. चांदी का पाया की अवधि के फल

रजत का पाया की अवधि व्यक्ति को शुभ फल देने वाली मानी गई हैं। अवधि में व्यक्ति को सब प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं।

3. तांबे का पाया की अवधि के फल

शनि के गोचर की तांबे का पाया की अवधि व्यक्ति को मिले- जुले फल प्रदान करने वाली होती हैं। इस अवधि में व्यक्ति को जीवन के कई क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती हैं। इस अवधि में व्यक्ति को कुछ क्षेत्रों में असफलता का भी सामना करना पड सकता हैं।

4. लोहे का पाया की अवधि के फल

शनि गोचर की लोहे का पाया की अवधि में व्यक्ति को आर्थिक मामलो में हानि हो सकती है। नौकरी, व्यवसाय के लिये भी यह समय प्रतिकुल रहने की अधिक संभावनाएं बनती हैं। इस अवधि में व्यक्ति को स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है।

जन्म राशि से विभिन्न भावों में शनि के फल

1. प्रथम भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि अर्थात प्रथम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का सोने का पाया कहा जाता हैं। सोने के पाये में शनि व्यक्ति के स्वास्थ्य सुख को बढाता हैं। परंतु व्यक्ति को संतान से कष्ट हो सकता हैं। व्यक्ति के लम्बे समय से रुके हुए कार्य पूरे होते है. व्यक्ति को नौकरी व व्यवसायीक

कार्यो से लाभ प्राप्त होता हैं। किन्तु शिक्षा क्षेत्र में बाधाएं बनी रह सकती हैं।

2. द्वितीय भाव में शनि रजत पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि द्वितीय भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का रजत का पाया कहा जाता हैं। रजत के पाये में शनि व्यक्ति को नौकरी-व्यवसाय के कार्यो में सफलता प्राप्त होती हैं। आर्थिक मामलो में सुधार होता हैं। भूमि-भवन-वाहन इत्यादि से लाभ प्राप्त होता हैं। इस समयावधि में इष्ट मित्रो व पारिवारीक सदस्यो का सहयोग प्राप्त होता हैं। व्यक्ति के मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं।

3. तृतीय भाव में शनि ताम्रपाद पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि तृतीय भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का ताम्र का पाया कहा जाता हैं। ताम्र पाया में शनि व्यक्ति को धर्मिक कार्यो में रुचि बढाता हैं। यदि पढाई कर रहे तो उच्च शिक्षा प्ताप्ति की सम्भावनाये अधिक होती हैं। नौकरी में उन्नति व व्यापार में वृद्धि हो सकती हैं। अपने बल-बुद्धि से शत्रुओं को पराजित करने में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। दाम्पत्य जीवन तानवपूर्ण हो सकता हैं। आकस्मिक दुर्घटनाएं भी हो सकती है.

4. चतुर्थ भाव में शनि लौहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि चतुर्थ भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का लौहे का पाया कहा जाता हैं। लौह पाया में नौकरी-व्यवसाय के कार्यो में अत्याधिक बाधाएं और नुक्शान हो सकता हैं। उसके रोजगार का स्त्रोत एकाधिक बार बदलता रहता हैं। लौह पाया में मानसिक तनाव बढने की संभावनाएं अधिक बनती हैं। पारिवार में कलह की अधिकता होती हैं। व्यक्ति के मान-सम्मान की हानि हो सकती हैं।

5. पंचम भाव में शनि रजत पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि पंचम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का रजत का पाया कहा जाता हैं। रजत पाया में नौकरी- में उन्नत्ति व्यापार में वृद्धि हो सकती हैं। जातक के घर में मंगलकार्य सम्पन्न होते हैं। इस अवधि में अधिकतर शुभ फल अधिक प्राप्त होते हैं। अपने विरोधि व शत्रु को परास्त करने में व्यक्ति सफल रहता हैं। लेकिन दांम्पत्य सुख में कमी हो सकती हैं।

6. छठे भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि छठे भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का स्वर्ण का पाया कहा जाता हैं। स्वर्ण पाया में जातक को शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं। नौकरी-व्यवसाय के कार्यो में अधिक लाभ प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं। एक से अधिक स्तोत्र से धन लाभ केयोग बनते हैं। भूमि-भवन-वाहन के सुख में वृद्धि होती हैं।

7. सप्तम भाव में शनि ताम्र पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि सप्तम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का ताम्र का पाया कहा जाता हैं। ताम्र पाया में व्यक्ति के भौतिक सुख-साधनो में वृद्धि होने के योग बनते हैं। लेकिन व्यक्ति को मानसिक तनाव बना रहता हैं। जातक के जीवन साथी के स्वास्थ्य में गिरावट हो सकती हैं।

8. अष्टम भाव में शनि लोहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि अष्टम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का लौहे का पाया कहा जाता हैं। लौह पाया में व्यक्ति के कष्टों में बढोतरी हो सकती हैं। परिवारिक सदस्यो के बिच में आपसी तनाव व मतभेद बढने की अधिक संभावना होती हैं। आकस्मिक घटनाओं के कारण व्यक्ति की परेशानियां बढ सकती हैं। मान-सम्मान में कमी हो सकती हैं। कर्ज के कारण परेशानी संभव हैं।

9. नवम भाव में शनि रजत पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि नवम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का रजत का पाया कहा जाता हैं। रजत पाया में व्यक्ति की आर्थिक स्थिती में सुधार होता है। एकाधिक स्त्रोत से धन लाभ प्रात होता हैं। व्यक्ति के पुराने शत्रु भी परास्त होते हैं।

10. दशम भाव में शनि ताम्र पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि दशम भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का ताम्र का पाया कहा जाता हैं। ताम्र पाया में व्यक्ति को अत्याधिक परिश्रम के उपरांत सफलता प्राप्त होती हैं। लम्बे समय

से चली आरही योजनाएं भी पूर्ण हो सकती हैं। व्यक्ति को इस अवधि में अपने लक्ष्यों के प्रति सचेत रहना चाहिए। कभी-कभी आलस्य के भाव प्रगति में बाधाएं डाल सकते हैं।

11. एकादश भाव में शनि स्वर्ण पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि एकादश भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का स्वर्ण का पाया कहा जाता हैं। स्वर्ण पाया में व्यक्ति को सभी प्रकार के भौतिक सुख साधन प्राप्त होते हैं। कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती हैं। धन-सपत्ति में वृद्धि होती हैं। मान सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।

12. द्वादश भाव में शनि लौहे पाया विचार

गोचर में जब शनि व्यक्ति की जन्म राशि द्वादश भाव में स्थित हो तो इस अवधि को शनि का लौहे का पाया कहा जाता हैं। लौह पाया में व्यक्ति के अपने सगे-संबंधियों व इष्ट मित्रो से संबन्ध खराब हो सकते हैं। आवश्यक्ता से अधिक खर्च व कर्ज से परेशानी संभव हैं। अनावश्यक किसी कार्यो में झूठे आरोप लग सकते हैं। मानसिक अस्थिरता रह सकती हैं। दूरस्थ स्थानो की यात्रा संभव हैं।

***

शनिग्रह से संबंधित रोग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

- उन्माद नाम का रोग शनि की देन है। जब दिमाग में सोचने विचारने की शक्ति का नाश हो जाता है। जो व्यक्ति करता जा रहा है। उसे करता जाता है। उसे यह पता नही है कि वह जो कर रहा है। संसार के लोगों के प्रति उसके क्या कर्तव्य हैं। उसे पता नही होता। सभी को एक लकडी से हांकने वाली बात उसके जीवन में मिलती है। मानव वध करने में नही हिचकना। शराब और मांस का लगातार प्रयोग करना। जहां भी रहना आतंक मचाये रहना। जो भी सगे सम्बन्धी हैं। उनके प्रति हमेशा चिन्ता देते रहना आदि उन्माद नाम के रोग के लक्षण है।

- वात रोग का अर्थ है वायु वाले रोग। जो लोग बिना कुछ अच्छा खाये पिये फ़ूलते चले जाते है। शरीर में वायु कुपित हो जाती है। उठना बैठना दूभर हो जाता है। शनि यह रोग देकर जातक को एक जगह पटक देता है। यह रोग लगातार सट्टा। जुआ। लाटरी। घुडदौड और अन्य तुरत पैसा बनाने वाले कामों को करने वाले लोगों मे अधिक देखा जाता है। किसी भी इस तरह के काम करते वक्त व्यक्ति लम्बी सांस खींचता है। उस लम्बी सांस के अन्दर जो हारने या जीतने की चाहत रखने पर ठंडी वायु होती है वह शरीर के अन्दर ही रुक जाती है। और अंगों के अन्दर भरती रहती है। अनैतिक काम करने वालों और अनाचार काम करने वालों के प्रति भी इस तरह के लक्षण देखे गये है।

- भगन्दर रोग गुदा मे घाव या न जाने वाले फ़ोडे के रूप में होता है। अधिक चिन्ता करने से यह रोग अधिक मात्रा में होता देखा गया है। चिन्ता करने से जो भी खाया जाता है। वह आंतों में जमा होता रहता है। पचता नही है। और चिन्ता करने से उवासी लगातार छोडने से शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है। मल गांठों के रूप मे आमाशय से बाहर कडा होकर गुदा मार्ग से जब बाहर निकलता है तो लौह पिण्ड की भांति गुदा के छेद की मुलायम दीवाल को फ़ाडता हुआ निकलता है। लगातार मल का इसी तरह से निकलने पर पहले से पैदा हुए घाव ठीक नही हो पाते हैं। और इतना अधिक संक्रमण हो जाता है, कि किसी प्रकार की एन्टीबायटिक काम नही कर पाती है।

- गठिया रोग शनि की ही देन है। शीलन भरे स्थानों का निवास। चोरी और डकैती आदि करने वाले लोग अधिकतर इसी तरह का स्थान चुनते है। चिन्ताओं के कारण एकान्त बंध जगह पर पडे रहना। अनैतिक रूप से संबंध करना। शरीर में जितने भी जोड हैं। रज या वीर्य स्खलित होने के समय वे भयंकर रूप से उत्तेजित हो जाते हैं। धीरे-धीरे शरीर का तेज खत्म हो जाता है। और जातक के जोडों के अन्दर सूजन पैदा होने के बाद जातक को उठने बैठने और रोज के कामों को करने में भयंकर परेशानी उठानी पडती है। इस रोग को देकर शनि जातक को अपने द्वारा किये गये अधिक वासना के दुष्परिणामों की सजा को भुगतवाता है.

- स्नायु रोग के कारण शरीर की नशें पूरी तरह से अपना काम नही कर पाती हैं। वह आंखों के अन्दर कमजोरी महसूस करता है। सिर की पीडा। किसी भी बात का विचार करते ही मूर्छा आजाना मिर्गी। हिस्टीरिया। उत्तेजना। भूत का खेलने लग जाना आदि इसी कारण से ही पैदा होता है। अगर लगातार शनि के बीज मंत्र का जाप जातक से करवाया जाय। उडद की दाल का प्रयोग करवाया जाय। रोटी मे चने का प्रयोग किया जाय। लोहे के बर्तन में खाना खाया जाये। तो इस रोग से मुक्ति मिल जाती है इन रोगों के अलावा पेट के रोग। जंघाओं के रोग। टीबी। कैंसर आदि रोग भी शनि की देन है।

शनिदेव की कृपा प्राप्ति के सरल उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- शास्त्रो में शनि देव को वृद्धावस्था का स्वामी कहा गया हैं। जो व्यक्ति अपने माता पिता व बुजुर्गो का सम्मान करता हैं उस व्यक्ति पर शनि देव बहुत प्रसन्न होते हैं। जो व्यक्ति अपने माता-पिता व बुजुर्गो का अपमान उस व्यक्ति पर शनिदेव का कोप हो जाता हैं व उस व्यक्ति से सुख-समृद्धि दूर चली जाती हैं।
- निर्धनो व असहाय जीवो की सहायता करने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं। असहाय व्यक्ति को काला छाता, चमड़े के जूते चप्पल भेट करने से शनि देव प्रसन्न होते है।
- शनि देव को उड़द के लड्डू बहुत प्रिय है। अत शनिवार को लड्डू का भोग लगा कर बाँटना लाभप्रद होता हैं।
- शनिवार के दिन तेल से मालिश कर स्नान करना चाहिए।
- लोहे कि कोई वस्तु शनि मंदिर में दान करनी चाहिए, ऐसी वस्तु दान करे जो मंदिर मे काम आसके।
- शनि से उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए भगवान शिवजी और हनुमान जी की पूजा एक साथ करना विशेष लाभप्रद होता हैं। शनिदेव को शांत करने के लिये शनि चालीसा, शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, बजरंगबाण हनुमान बाहुक का पाठ करना शुभदायक होता हैं।
- शनिरत्न नीलम के साथ पन्ना भी धारण करने से लाभ होता हैं।
- मछलियों को आटे से बनी गोलियां खिलाये।
- हर शनिवार व मंगलवार को काले कुत्ते को मीठी रोटीया खिलाये।
- श्री हनुमान जी या शनि मंदिर में पीपल का पेड हो तो संध्या के समय दीपक जलाना शनि, हनुमान और भैरवजी के दर्शन अत्यंत लाभकारी है।
- शनिवार का व्रत करे तथा एक समय बिना नमक का भोजन ले।
- खाली पेट नाश्ते से पूर्व काली मिर्च चबाकर गुड या बताशे से खाए।
- भोजन करते समय नमक कम होने पर काला नमक तथा मिर्च कम होने पर काली मिर्च प्रयोग करे।
- भोजन के उपरांत लोंग खाए।
- शनिवार मंगलवार को क्रोध न करे।
- भोजन करते समय मोंन रहे।
- प्रत्येक शनिवार को सोते समय शरीर व नाखूनों पर तेल मसले।
- मांस, मछली, मद तथा नशीली चीजो का सेवन बिलकुल न करे।
- गुड़ व चने से बनी वस्तु भोग लगाकर अधिक से अधिक लोगो को बाँटना चाहिए।
- लोहे के बर्तन में तेल भरकर अपना चेहरा देखकर दान करदे। यदि दान हेतु योग्य पात्र न मिले तो उसमे बत्ती लगाकर उसे शनि मंदिर में जला देना चाहिए।
- प्रत्येक शनि अमावस्या को अपने वजन का दशांश सरसों के तेल का अभिषेक करना चाहिए।
- शनि मृत्युंजय स्रोत दशरथ कृत शनि स्रोत का ४० दिन तक नियमित पाठ करे।
- घोड़े की नाल अथवा नाव की कील से बना छल्ला अभिमंत्रित करके धारण करना शनि के अशुभ प्रभाव को कम करता है।
- अपने निवास स्थान व व्यवसायीक स्थान पर घोडे की नाल को U आकार मे अवश्य लगाये।

- कपूर को नारियल के तेल में डालकर सिर में लगाये, शनिवार के दिन भोजन में उड़द की दाल का अत्यधिक सेवन करे, कर्मो को सुधारे, निवास स्थान पर अँधेरा, सूनापन व खंडहर की स्थिति न होने दे।
- प्रति माह की अमावस्या आने से पूर्व अपने घर व व्यवसायीक स्थल की सफाई व धुलाई करे व तेल का दीपक जलाए।
- शनि मंदिर में काले चने, कच्चा कोयला, काली हल्दी, काले तिल, काला कम्बल, तेल आदी शनि से संबंधित वस्तुओं का दान दे।
- 16 शनिवार सूर्यास्त्र के समय एक पानी वाला नारियल, 5 बादाम, कुछ दक्षिणा शनि मंदिर में चढ़ाये।
- शनि के शुभ फल प्राप्ति हेतु दक्षिण दिशा में सिराहना कर सोये। व पश्चिम दिशा में मुख कर सारे कार्य करे व अपने पूजन स्थान में शनि यंत्र स्थापीत करें।
- प्रत्येक शनिवार को रात्रि में सोते समय आँखों में काजल या सुरमा लगाये व शनिवार को नीला या काला कपडा अवश्य पहने।
- **प्रत्येक शनि अमावस्या, शनि जयंती या शनिवार को शनि मंदिर अवश्य जाये।**

शनि के विभिन्न मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शम का अर्थ पाप नाशक देवता के रूप में भी कहा जाता है। 'श' का अर्थ होता है कल्याणकारी शांति प्रदान करने वाला ग्रह "शनि शम्य्ते पापंम" अर्थात शनि ग्रह हमारे पापो का शमन करता है। हमारे पापो का नाश करता है। इसलिए इसे शनि कहा गया है। शनि की उपासना के लिए निम्न में से किसी एक मंत्र अथवा एकाधिक मंत्र का श्रद्धानुसार नियमित एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल अत्याधिक लाभदायक होता हैं।

बीज मंत्र-

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

दशाक्षर शनि मंत्र-

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

वैदिक मंत्र-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः॥

पौराणिक मंत्र-

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥

शनिग्रह पीडा निवारक मंत्र-

सिउर्यपुतरे दिर्घ्दाहो विश्लाछ : शिवप्रिय :।
मंद्चार: प्रसन्नात्मा पीडा हस्तु में शनि:॥

कष्ट निवारण शनि मंत्र-

नीलाम्बर: शुल्धर: किरीट: गध्स्र्तिथ्स्रसक्रो धनुष्मान।
चतुभुर: सुर्यसुत: प्रसान्त: स्दाद्स्तु मह व्रंदोद्ल्पगामी॥

सुख-स्म्रधिदायक शनि मंत्र-

कोणस्थ : पिंगलो बभ्र: कृष्णो रौद्रांत को यम:।
सौरी: शनैश्रौ मंद पिपलादेन संस्तुत:॥

सर्वबाधा निवारण शनि गायत्री मंत्र-

ॐ भगभवाय विद्वाहे मृत्युपुराय धीमहि तन्नो शनि: प्रचोदयात:।

शनि पत्नी नाम स्तुति-

ॐ शं शनैचारय नम:।
धव्जनी धामिनी चैव कंकाली कलाह्प्रिया।
कंटकी कलही चादय तुरंगी महिषी अजा॥
ॐ शं शनैचारय नम:।

महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री महाकाल शनि मृत्युञ्जय स्तोत्र मन्त्रस्य पिप्लाद ऋषिरनुष्टुप्छन्दो महाकाल शनिर्देवता शं बीजं मायसी शक्तिः काल पुरुषायेति कीलकं मम अकाल अपमृत्यु निवारणार्थे पाठे विनियोगः।

श्री गणेशाय नमः।

ॐ महाकाल शनि मृत्युञ्जायाय नमः।

नीलाद्रीशोभाञ्चितदिव्यमूर्तिः खड्गो त्रिदण्डी शरचापहस्तः।
शम्भुर्महाकालशनिः पुरारिर्जयत्यशेषासुरनाशकारी ।।१

मेरुपृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम् ।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छतिस्म जगद्धितम् ।।२

।।पार्वत्युवाच।।

भगवन् ! देवदेवेश ! भक्तानुग्रहकारक ! ।
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्व सूचितम् ।।३।।

तदेवत्वं महाबाहो ! लोकानां हितकारकम् ।
तव मूर्ति प्रभेदस्य महाकालस्य साम्प्रतम् ।।४

शनेर्मृत्युञ्जयस्तोत्रं ब्रूहि मे नेत्रजन्मनः ।
अकाल मृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम् ।।५

शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्तवं शुभम् ।
प्रतिनाम चथुर्यन्तं नमोन्तं मनुनायुतम् ।।६

।।श्रीशंकर उवाच।।

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोक-हितेरते ।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।७

शनिमृत्युञ्जयस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवऽधुना ।
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वशत्रु विमर्दनम् ।।८

सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम् ।
शरीरारोग्यकरणमायुर्वृद्धिकरं नृणाम् ।।९

यदि भक्तासि मे गौरी गोपनीयं प्रयत्नतः ।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु तच्छ्रृणुष्व महेश्वरी ! ।।१०

ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत् ।
महोग्रं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत् ।।११

गले तु विन्यसेन्मन्दं बाहवोर्महाग्रहं न्यसेत् ।
हृदि न्यसेन्महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत् ।।१२

जान्वोम्तुडुचरं न्यस्य पादयोस्तु शनैश्चरम्।
एवं न्यासविधि कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनेः ।।१३

न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि तनौ श्यार्वा पठेन्नरः ।
कल्पादियुगभेदांश्च करांगन्यासरुपिणः ।।१४

कालात्मनो न्यसेद् गात्रे मृत्युञ्जय ! नमोऽस्तु ते ।
मन्वन्तराणि सर्वाणि महाकालस्वरुपिणः ।।१५

भावयेत्प्रति प्रत्यंगे महाकालाय ते नमः ।
भावयेत्प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः ।।१६

नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः ।
सौरये च नमस्तेऽतु गण्डयोर्विन्यसेद्दतून् ।।१७

श्रावणं भावयेदक्ष्णोर्नमः कृष्णनिभाय च ।
महोग्राय नमो भार्दं तथा श्रवणयोर्न्यसेत् ।।१८

नमो वै दुर्निरीक्ष्याय चाश्विनं विन्यसेन्मुखे ।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत् ।।१९

मार्गशीर्ष न्यसेद्-बाहवोर्महारौद्राय ते नमः ।
ऊर्द्वलोक-निवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत् ।।२०

नमः कालप्रबोधाय माघं वै चोदरेन्यसेत् ।
मन्दगाय नमो मेढ्रे न्यसेर्द्वफाल्गुनं तथा ।।२१

ऊर्वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोस्भवाय च ।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवर्त्तकाय च ।।२२

जंघयोर्भावयेज्ज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा ।
आषाढ़ं पाद्योश्चैव शनये च नमस्तथा ।।२३

कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपादमस्तके ।
न्यसेदाशीर्षपादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च ।।२४

नयसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः ।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वांगुलौ न्यसेत् ।।२५

न्यसेद्-गुल्फ-द्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च ।
विष्णुभं भावयेज्जंघोभये शिष्टतमाय ते ।।२६

जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णरुचे नमः ।
ऊरुद्वये वारुर्णान्यसेत्कालभृते नमः ।।२७

पूर्वभाद्रं न्यसेन्मेढ्रे जटाजूटधराय च ।
पृष्ठउत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा ।।२८

रेवतीं च न्यसेन्नाभो नमो मन्दचराय च ।
गर्भदेशे न्यसेद्दस्त्रं नमः श्यामतराय च ।।२९
नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत् ।
न्येसत्कृत्तिकां हृदये नमस्तैलप्रियाय च ।।३०
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारीणे ।
मृगं न्येसतद्वाम हस्ते त्रिदण्डोल्लसिताय च ।।३१
दक्षोर्द्ध्व भावयेद्रौद्रं नमो वै बाणधारिणे ।
पुनर्वसुमूर्द्ध्व नमो वै चापधारिणे ।।३२
तिष्यं न्यसेद्दक्षबाहौ नमस्ते हर मन्यवे ।
सार्पं न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः ।।३३
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे ।
मुखे न्यसेद्-भगर्क्षं च नमः क्रूरग्रहाय च ।।३४
भावयेद्दक्षनासायामर्यमाणश्व योगिने ।
भावयेद्वामनासायां हस्तर्क्षं धारिणे नमः ।।३५
त्वाष्ट्रं न्यसेद्दक्षकर्णे कृसरान्न प्रियाय ते ।
स्वातीं न्येसद्वामकर्णे नमो बृह्ममयाय ते ।।३६
विशाखां च दक्षनेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये ।
विष्कुम्भं भावयेच्छीर्षसन्धौ कालाय ते नमः ।।३७
प्रीतियोगं भ्रुवोः सन्धौ महामन्दं ! नमोऽस्तु ते ।
नेत्रयोः सन्धावायुष्मद्योगं भीष्माय ते नमः ।।३८
सौभाग्यं भावयेन्नासासन्धौ फलाशनाय च ।
शोभनं भावयेत्कर्णे सन्धौ पिण्यात्मने नमः ।।३९
नमः कृष्णयातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत् ।
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे ।।४०
धृतिं न्यसेद्दक्षवाहौ पृष्ठे छायासुताय च ।
तन्मूलसन्धौ शूलं च न्यसेदुग्राय ते नमः ।।४१
तत्कूर्परे न्यसेदगण्डे नित्यानन्दाय ते नमः ।
वृद्धिं तन्मणिबन्धे च कालज्ञाय नमो न्यसेत् ।।४२
ध्रुवं तदङ्गुली-मूलसन्धौ कृष्णाय ते नमः ।
व्याघातं भावयेद्वामबाहुपृष्ठे कृशाय च ।।४३
हर्षणं तन्मूलसन्धौ भुतसन्तापिने नमः ।
तत्कूर्परे न्यसेद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तु ते ।।४४
सिद्धिं तन्मणिबन्धे च न्यसेत् कालाग्नये नमः ।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत्कालकृते नमः ।।४५
वरीयांसं दक्षपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः ।
परिघं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोऽस्तु ते ।।४६
न्यसेद्दक्षोरुसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे ।
तज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेहाय ते नमः ।।४७
साध्यं न्यसेच्च तद्-गुल्फसन्धौ घोराय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः ।।४८
न्यसेद्वामारुसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः ।
ब्रह्मयोगं च तज्जानो न्यसेत्सद्योगिने नमः ।।४९
ऐन्द्रं तद्-गुल्फसन्धौ च योगाऽधीशाय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ नमो भव्याय वैधृतिम् ।।५०
चर्मणि बवकरणं भावयेद्यज्वने नमः ।
बालवं भावयेद्रक्ते संहारक ! नमोऽस्तु ते ।।५१
कौलवं भावयेदस्थ्नि नमस्ते सर्वभक्षिणे ।
तैत्तिलं भावयेन्मसि आममांसप्रियाय ते ।।५२
गरं न्यसेद्वपायां च सर्वग्रासाय ते नमः ।
न्यसेद्वणिजं मज्जायां सर्वान्तक ! नमोऽस्तु ते ।।५३
विर्येविभावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे ।
रुद्रमित्र ! पितृवसुवारीण्येतांश्च पञ्च च ।।५४
मुहूर्तांश्च दक्षपादनखेषु भावयेन्नमः ।
खगेशाय च खस्थाय खेचराय स्वरुपिणे ।।५५
पुरुहूतशतमखे विश्ववेधो-विधूंस्तथा ।
मुहूर्तांश्च वामपादनखेषु भावयेन्नमः ।।५६
सत्यव्रताय सत्याय नित्यसत्याय ते नमः ।
सिद्धेश्वर ! नमस्तुभ्यं योगेश्वर ! नमोऽस्तु ते ।।५७
वह्निनक्तंचरांश्चैव वरुणार्यमयोनकान् ।
मुहूर्तांश्च दक्षहस्तनखेषु भावयेन्नमः ।।५८
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिणे दक्षदृष्टये ।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वामदृष्टये ।।५९
वामहस्तनखेष्वन्त्यवर्णेशाय नमोऽस्तु ते ।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषाजपष्द्वस्त्रांश्च भावयेत् ।।६०
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमणकारिणे ।
राशिनाथाय राशीनां फलदात्रे नमोऽस्तु ते ।।६१
यमाग्नि-चन्द्रादितिजविधातृंश्च विभावयेत् ।
ऊर्द्ध्व-हस्त-दक्षनखेष्वत्यकालाय ते नमः ।।६२
तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्रकुम्भगृहाय च ।
समीरत्वष्टजीवांश्च विष्णु तिग्म द्युतीन्नयसेत् ।।६३
ऊर्ध्व-वामहस्त-नखेष्वन्यग्रह निवारिणे ।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च ।।६४
रविवारं ललाटे च न्यसेद्-भीमदृशे नमः ।
सोमवारं न्यसेदास्ये नमो मृतप्रियाय च ।।६५

भौमवारं न्यसेत्स्वान्ते नमो ब्रह्म-स्वरुपिणे ।
मेढ्रं न्यसेत्सौम्यवारं नमो जीव-स्वरुपिणे ।।६६
वृषणे गुरुवारं च नमो मन्त्र-स्वरुपिणे ।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलयकारिणे ।।६७
पादयोः शनिवारं च निर्मांसाय नमोऽस्तु ते ।
घटिका न्यसेत्केशेषु नमस्ते सूक्ष्मरुपिणे ।।६८
कालरुपिन्नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशकः !।
त्रिपुरस्य वधार्थाय शम्भुजाताय ते नमः ।।६९
नमः कालशरीराय कालनुन्नाय ते नमः ।
कालहेतो ! नमस्तुभ्यं कालनन्दाय वै नमः ।।७०
अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः ।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः ।।७१
निमेषादिमहाकल्पकालरुपं च भैरवम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७२
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७३
कर्त्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७४
हर्त्तारं ग्रहजातानां फलानामघकारिणाम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७५
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तमव्ययम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७६
कारणं सुखदुःखानां भावाऽभाव-स्वरुपिणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७७
अकाल-मृत्यु-हरणऽमपमृत्यु निवारणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७८
कालरुपेण संसार भक्षयन्तं महाग्रहम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।७९
दुर्निरीक्ष्यं स्थूलरोमं भीषणं दीर्घ-लोचनम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।८०
ग्रहाणां ग्रहभूतं च सर्वग्रह-निवारणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ।।८१
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः ।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम् ।।८२
कालदेव जगत्सर्वं काल एव विलीयते ।
कालरुपं स्वयं शम्भुः कालात्मा ग्रहदेवता ।।८३

चण्डीशो रुद्रडाकिन्याक्रान्तश्चण्डीश उच्यते ।
विद्युदाकलितो नद्यां समारुढो रसाधिपः ।।८४
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिह्वया ललितः पुनः ।
क्षतजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युता युतः ।।८५
नमोऽन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे ।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेनं जपेन्नरः ।।८६
यः पठेच्छ्रणुयाद्वापि ध्यात्त्वा सम्पूज्य भक्तितः ।
त्रस्य मृत्योर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये !।।८७
ज्वराः सर्वे विनश्यन्ति दद्रु-विस्फोटकच्छुकाः ।
दिवा सौरिं स्मरेत् रात्रौ महाकालं यजन् पठेत ।।८८
जन्मर्क्षे च यदा सौरिर्जपेदेतत्सहस्त्रकम् ।
वेधगे वामवेधे वा जपेदर्द्धसहस्त्रकम् ।।८९
द्वितीये द्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टमेऽपि वा ।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दिनावधि ।।९०
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपञ्चमे ।
गोचरे जन्मलग्नेशे दशास्वन्तर्दशासु च ।।९१
गुरुलाघवज्ञानेन पठेदावृत्तिसंख्यया ।
शतमेकं त्रयं वाथ शतयुग्मं कदाचन ।।९२
आपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि च जयं भवेत् ।
महाकालालये पीठे ह्यथवा जलसन्निधौ ।।९३
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतो गृहे ।
नियमेनैकभक्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना ।।९४
श्रोतव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम् ।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयाभिधम् ।।९५
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रम समन्वितम् ।
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा पूजायां च निशामुखे ।।९६
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितो भयम् ।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा ।।९७
नाऽकाले मरणं तेषां नाऽपमृत्युभयं भवेत् ।
आयुर्वर्षशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविनः ।।९८
नाऽतः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत् ।
शान्तिकं शीघ्रफलदं स्तोत्रमेतन्मयोदितम् ।।९९
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ।
कथनीयं महादेवि ! नैवाभक्तस्य कस्यचित् ।।१००
।। इति मार्तण्ड-भैरव-तन्त्रे महाकाल-शनि-मृत्युञ्जय-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

॥ शनैश्चरस्तवराजः॥

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री गणेशाय नमः ॥
नारद उवाच ॥
ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम ॥१॥
शिरो में भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती ॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः ॥४॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः ।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम् ॥५॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ।
सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो र्दुनिरीक्ष्यो विभीषणः ।
शिखिकण्ठनिभो नीलश्छायाहृदयनन्दनः ॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावलीमुखः ।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः ।
मन्दो मन्दगतिः खंजो तृप्तः संवर्तको यमः ॥९॥
अतृप्तः ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी ।
कुजो बुधो गुरूः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥१०॥
केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैऋतस्तथा ।
शशी मरूत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः ॥११॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्यभुग् राज्यदायकः ॥१२॥
राज्येशो छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रूष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥१५॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनंदनः ।
शतभिद्रुक्षदयिता त्रयोदशितिथिप्रियः ॥१६॥
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगणनायकः ।
तिथ्यात्मकस्तिथिगणो
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥१७॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्याभयदायकः ।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः ॥१८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान्यः स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरे तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥
विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
वाधा याऽन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ॥२४॥
पुत्रवान्धनवान् श्रीमान् जायते नात्र संशयः ॥२५॥

नारद उवाच ॥
स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः ।
दत्त्वा राज्ञे वरः कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा ॥२६॥
॥ इति श्री भविष्यपुराणे शनैश्चरस्तवराजः सम्पूर्णः ।

॥ शनैश्चरस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीशनैश्चरस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः । शनैश्चरो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । । शनैश्चरप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच –

कोणोऽण्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिःपिंगलमन्दोसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमश्थितेन तस्मैइ नमः श्रीरविनन्दनाय ॥२॥
नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृङ्गाः ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमश्थितेन तस्मैइ नमः श्रीरविनन्दनाय॥३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनाणि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमश्थितेन तस्मैइ नमः श्रीरविनन्दनाय॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा ।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवसरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥५॥
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योगिनां ध्यानगतोपि सूक्ष्मस्तस्मैनमः श्रीरविनन्दनाय॥६॥
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यत् ।
गृहाद् गतो योन पुनः प्रयाति तस्मैनमः श्रीरविनन्दनाय॥७॥
स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी ।
एकस्त्रिधाअ ऋग्ययजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते ॥९॥
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥१०॥
एतानि दश नामाअनि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीशनैश्चरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥शनिवज्रपंजरकवचम्॥

श्री गणेशाय नमः ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशनैश्चर-कवच-स्तोत्र-मन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्द, शनैश्चरो देवता, शीं शक्तिः, शूं कीलकम्, शनैश्चर-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ॥१॥

ब्रह्मा उवाच ॥

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥२॥
कवचं देवतावासं वज्रपंजरसंज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥३॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥४॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा ।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ॥५॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु- शुभप्रदः ।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥६॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा ।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥७॥
पदौ मन्दगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः ।
अंगोपांगानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः ॥८॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥९॥
व्यय- जन्म- द्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा ।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥१०॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥११॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
द्वादशाऽष्टमजन्मस्थदोषान्नाशयते सदा ।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥१२॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्म-नारदसंवादे शनिवज्रपंजरकवचम् सम्पूर्णम् ॥

दशरथकृत-शनि-स्तोत्र

दशरथकृत शनि स्तोत्र

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशनि-स्तोत्र-मन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, सौरिर्देवता, शं बीजम्, निः शक्तिः, कृष्णवर्णेति कीलकम्, धर्मार्थ-काम-मोक्षात्मक-चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

कर-न्यासः-

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णांगाय अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यासः-

शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। कृष्णांगाय कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्र-त्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धनः-

"ॐ भूर्भुवः स्वः"

पढ़ते हुए चारों दिशाओं में चुटकी बजाएं।

ध्यानः-

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।

चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाभीष्टकरं वरेण्यम्।।

अर्थात् नीलम के समान कान्तिमान, हाथों में धनुष और शूल धारण करने वाले, मुकुटधारी, गिद्ध पर विराजमान, शत्रुओं को भयभीत करने वाले, चार भुजाधारी, शान्त, वर को देने वाले, सदा भक्तों के हितकारक, सूर्य-पुत्र को मैं प्रणाम करता हूँ।

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः सप्तदीपाधिपोऽभवत्।।१
कृत्तिकान्ते शनिंज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वातु शनिर्यास्यति साम्प्रतं।।२
शकटं भेद्यमित्युक्तं सुराऽसुरभयंकरम्।
द्वासधाब्दं तु भविष्यति सुदारुणम्।।३
एतच्छ्रुत्वा तु तद्वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिवः।
व्याकुलं च जगद्दृष्टवा पौर-जानपदादिकम्।।४
ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च भयमेतत्समागतम्।
देशाश्च नगर ग्रामा भयभीतः समागताः।।५
पप्रच्छ प्रयतोराजा वसिष्ठ प्रमुखान् द्विजान्।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूहि मे द्विजसत्तमः।।६
प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्नेकुतः प्रजाः।
अयं योगोह्यसाध्यश्च ब्रह्म-शक्रादिभिः सुरैः।।७
तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितम्।।८
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम्।
त्रिलक्षयोजनं स्थानं चन्द्रस्योपरिसंस्थिताम्।।९
रोहिणीपृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः।
रथेतुकाञ्चने दिव्ये मणिरत्नविभूषिते।।१०
हंसवर्नहयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छिते।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्वलैः।।११
ब्यराजत तदाकाशे द्वितीये इव भास्करः।
आकर्णचापमाकृष्य सहस्त्रं नियोजितम्।।१२
कृत्तिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्रदिशतांच रोहिणीम्।
दृष्टवा दशरथं चाग्रेतस्थौतु भृकुटीमुखः।।१३
संहारास्त्रं शनिर्दृष्टवा सुराऽसुरनिषूदनम्।
प्रहस्य च भयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत्।।१४

भावार्थः प्राचीन काल में रघुवंश में दशरथ नामक प्रसिद्ध चक्रवती राजा हुए, जो सातों द्वीपों के स्वामी थे। उनके राज्यकाल में एक दिन ज्योतिषियों ने शनि को कृत्तिका के अन्तिम चरण में देखकर राजा से कहा कि अब यह शनि रोहिणी का भेदन कर जायेगा। इसको 'रोहिणी-शकट-भेदन' कहते हैं। यह योग देवता और असुर दोनों ही के लिये भयप्रद होता है तथा इसके पश्चात् बारह वर्ष का घोर दुःखदायी अकाल पड़ता है। ज्योतिषियों की यह बात मन्त्रियों के साथ राजा ने सुनी, इसके साथ ही नगर और जनपद-वासियों को बहुत व्याकुल देखा। उस समय नगर और ग्रामों के निवासी भयभीत होकर राजा से इस विपत्ति से रक्षा की प्रार्थना करने लगे। अपने प्रजाजनों की व्याकुलता को देखकर

राजा दशरथ वशिष्ठ ऋषि तथा प्रमुख ब्राह्मणों से कहने लगे- 'हे ब्राह्मणों ! इस समस्या का कोई समाधान मुझे बताइए।'।।१-६

इस पर वशिष्ठ जी कहने लगे- 'प्रजापति के इस नक्षत्र (रोहिणी) में यदि शनि भेदन होता है तो प्रजाजन सुखी कैसे रह सकते हैं। इस योग के दुष्प्रभाव से तो ब्रह्मा एवं इन्द्रादिक देवता भी रक्षा करने में असमर्थ हैं।।७।।

विद्वानों के यह वचन सुनकर राजा को ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि वे इस संकट की घड़ी को न टाल सके तो उन्हें कायर कहा जाएगा। अतः राजा विचार करके साहस बटोरकर दिव्य धनुष तथा दिव्य आयुधों से युक्त होकर रथ को तीव्र गति से चलाते हुए चन्द्रमा से भी तीन लाख योजन ऊपर नक्षत्र मण्डल में ले गए। मणियों तथा रत्नों से सुशोभित स्वर्ण-निर्मित रथ में बैठे हुए महाबली राजा ने रोहिणी के पीछे आकर रथ को रोक दिया।

सफेद घोड़ों से युक्त और ऊँची-ऊँची ध्वजाओं से सुशोभित मुकुट में जड़े हुए बहुमुल्य रत्नों से प्रकाशमान राजा दशरथ उस समय आकाश में दूसरे सूर्य की भांति चमक रहे थे। शनि को कृत्तिका नक्षत्र के पश्चात् रोहिनी नक्षत्र में प्रवेश का इच्छुक देखकर राजा दशरथ बाण युक्त धनुष कानों तक खींचकर भृकुटियां तानकर शनि के सामने डटकर खड़े हो गए। अपने सामने देव-असुरों के संहारक अस्त्रों से युक्त दशरथ को खड़ा देखकर शनि थोड़ा डर गया और हंसते हुए राजा से कहने लगा।।८-१४

शनि उवाच-

पौरुषं तव राजेन्द्र ! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुरामनुष्याशऽच सिद्ध-विद्याधरोरगाः।।१५
मयाविलोकिताः सर्वेभयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! तपसापौरुषेण च।।१६
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दनः !

भावार्थ: शनि कहने लगा- ' हे राजेन्द्र ! तुम्हारे जैसा पुरुषार्थ मैंने किसी में नहीं देखा, क्योंकि देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और सर्प जाति के जीव मेरे देखने मात्र से ही भय-ग्रस्त हो जाते हैं। हे राजेन्द्र ! मैं तुम्हारी तपस्या और पुरुषार्थ से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अतः हे रघुनन्दन ! जो तुम्हारी इच्छा हो वर मां लो, मैं तुम्हें दूंगा।।१५-१६।।

दशरथ उवाच-

प्रसन्नोयदि मे सौरे ! एकश्चास्तु वरः परः।।१७
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन्।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी।।१८
याचितं तु महासौरे ! नऽन्यमिच्छाम्यहं।
एवमस्तुशनिप्रोक्तं वरलब्ध्वा तु शाश्वतम्।।१९
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरम् सुव्रत ! ।।२०

भावार्थ: दशरथ ने कहा- हे सूर्य-पुत्र शनि-देव ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं केवल एक ही वर मांगता हूँ कि जब तक नदियां, सागर, चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी इस संसार में है, तब तक आप रोहिणी शकट भेदन कदापि न करें। मैं केवल यही वर मांगता हूँ और मेरी कोई इच्छा नहीं है।'

तब शनि ने **'एवमस्तु'** कहकर वर दे दिया। इस प्रकार शनि से वर प्राप्त करके राजा अपने को धन्य समझने लगा। तब शनि ने कहा- 'मैं पुमसे परम प्रसन्न हूँ, तुम और भी वर मांग लो।।१७-२०

प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
नभेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दन।।२१
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरषामदीया च त्रैलोक्ये तु भविष्यति।।२२
एवं वरं तु सम्प्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वा चैव कृताञ्जलिः।।२३
ध्यात्वा सरस्वती देवीं गणनाथं विनायकम्।
राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत्।।२४

भावार्थ: तब राजा ने प्रसन्न होकर शनि से दूसरा वर मांगा। तब शनि कहने लगे- 'हे सूर्य वंशियो के पुत्र तुम निर्भय रहो, निर्भय रहो। बारह वर्ष तक तुम्हारे राज्य में अकाल नहीं पड़ेगा। तुम्हारी यश-कीर्ति तीनों लोकों में फैलेगी। ऐसा वर पाकर राजा प्रसन्न होकर धनुष-बाण रथ में रखकर सरस्वती देवी तथा गणपति का ध्यान

करके शनि की स्तुति इस प्रकार करने लगा।।२१-२४

दशरथकृत शनि स्तोत्र

नम: कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठ निभाय च।
नम: कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नम: ।।२५।।
नमो निर्मांस देहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च ।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदर भयाकृते।।२६
नम: पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नम:।
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते।।२७
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्नरीक्ष्याय वै नम: ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।।२८
नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ।।२९
अधोदृष्टे: नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते ।।३०
तपसा दग्ध-देहाय नित्यं योगरताय च ।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नम: ।।३१
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज-सूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।३२
देवासुरमनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगा:।
त्वया विलोकिता: सर्वे नाशं यान्ति समूलत:।।३३
प्रसाद कुरु मे सौरे ! वारदो भव भास्करे।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबल: ।।३४

भावार्थ: जिनके शरीर का वर्ण कृष्ण नील तथा भगवान् शंकर के समान है, उन शनि देव को नमस्कार है। जो जगत् के लिए कालाग्नि एवं कृतान्त रुप हैं, उन शनैश्चर को बार-बार नमस्कार है।।२५
जिनका शरीर कंकाल जैसा मांस-हीन तथा जिनकी दाढ़ी-मूंछ और जटा बढ़ी हुई है, उन शनिदेव को नमस्कार है। जिनके बड़े-बड़े नेत्र, पीठ में सटा हुआ पेट और भयानक आकार है, उन शनैश्चर देव को नमस्कार है।।२६
जिनके शरीर का ढांचा फैला हुआ है, जिनके रोएं बहुत मोटे हैं, जो लम्बे-चौड़े किन्तु सूके शरीर वाले हैं तथा जिनकी दाढ़ें कालरुप हैं, उन शनिदेव को बार-बार प्रणाम है।।२७
हे शने ! आपके नेत्र कोटर के समान गहरे हैं, आपकी ओर देखना कठिन है, आप घोर रौद्र, भीषण और विकराल हैं, आपको नमस्कार है।।२८
वलीमूख ! आप सब कुछ भक्षण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। सूर्यनन्दन ! भास्कर-पुत्र ! अभय देने वाले देवता ! आपको प्रणाम है।।२९
नीचे की ओर दृष्टि रखने वाले शनिदेव ! आपको नमस्कार है। संवर्तक ! आपको प्रणाम है। मन्दगति से चलने वाले शनैश्चर ! आपका प्रतीक तलवार के समान है, आपको पुनः-पुनः प्रणाम है।।३०
आपने तपस्या से अपनी देह को दग्ध कर लिया है, आप सदा योगाभ्यास में तत्पर, भूख से आतुर और अतृप्त रहते हैं। आपको सदा सर्वदा नमस्कार है।।३१
ज्ञाननेत्र ! आपको प्रणाम है। काश्यपनन्दन सूर्यपुत्र शनिदेव आपको नमस्कार है। आप सन्तुष्ट होने पर राज्य दे देते हैं और रुष्ट होने पर उसे तत्क्षण हर लेते हैं।।३२
देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग- ये सब आपकी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं।।३३
देव मुझ पर प्रसन्न होइए। मैं वर पाने के योग्य हूँ और आपकी शरण में आया हूँ।।३४

एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः।।३५
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते।।३६

भावार्थ: राजा दशरथ के इस प्रकार प्रार्थना करने पर ग्रहों के राजा महाबलवान् सूर्य-पुत्र शनैश्चर बोले- 'उत्तम व्रत के पालक राजा दशरथ ! तुम्हारी इस स्तुति से मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ। रघुनन्दन ! तुम इच्छानुसार वर मांगो, मैं अवश्य दूंगा।।३५-३६

दशरथ उवाच-

प्रसन्नो यदि मे सौरे ! वरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृति-पिंगाक्ष ! पीडा देया न कस्यचित्।।३७

भावार्थ: प्रसादं कुरु मे सौरे ! वरोऽयं मे महेप्सितः।
राजा दशरथ बोले- 'प्रभु ! आज से आप देवता, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी तथा नाग-किसी भी प्राणी को पीड़ा न

दें। बस यही मेरा प्रिय वर है।।३७

शनि उवाच-

अदेयस्तु वरौऽस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते।।३८
त्वयाप्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः।
देवऽसुर-मनुष्याश्च सिद्ध विद्याधरोरगा।।३९
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्म-व्यय-द्वितीयगे।।४०
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वि-त्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः।।४१
न तस्य जायते पीडा कृता वै ममनिश्चितम्।
प्रतिमा लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम्।।४२
वरदां च धनुः-शूल-बाणांकितकरां शुभाम्।
आयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः।।४३
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्धृत्वाक्तैर्नीलपंकजैः।
पायससंशर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्।।४४
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र स्वशक्तया घृत-पायसैः।
तैले वा तेलराशौ वा प्रत्यक्ष व यथाविधिः।।४५
पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यं च लेपयेत्।
नील्या वा कृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः।।४६
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णवस्त्रादिकं शुभम्।
धेनुं वा वृषभं चापि सवत्सां च पयस्विनीम्।।४७
एवं विशेषपूजां च मद्वारे कुरुते नृप !
मन्त्रोद्धारविशेषेण स्तोत्रेणऽनेन पूजयेत्।।४८
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः।
तस्य पीडां न चैवऽहं करिष्यामि कदाचन्।।४९
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्य च।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत्।।५०

भावार्थ: शनि ने कहा- 'हे राजन् ! यद्यपि ऐसा वर मैं किसी को देता नहीं हूँ, किन्तु सन्तुष्ट होने के कारण तुमको दे रहा हूँ। तुम्हारे द्वारा कहे गये इस स्तोत्र को जो मनुष्य, देव अथवा असुर, सिद्ध तथा विद्वान आदि पढ़ेंगे, उन्हें शनि बाधा नहीं होगी। जिनके गोचर में महादशा या अन्तर्दशा में अथवा लग्न स्थान, द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम या द्वादश स्थान में शनि हो वे व्यक्ति यदि पवित्र होकर प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल के समय इस स्तोत्र को ध्यान देकर पढ़ेंगे, उनको निश्चित रुप से मैं पीड़ित नहीं करुंगा।।३८-४१

हे राजन ! जिनको मेरी कृपा प्राप्त करनी है, उन्हें चाहिए कि वे मेरी एक लोहे की मीर्ति बनाएं, जिसकी चार भुजाएं हो और उनमें धनुष, भाला और बाण धारण किए हुए हो।* इसके पश्चात् दस हजार की संख्या में इस स्तोत्र का जप करें, जप का दशांश हवन करे, जिसकी सामग्री काले तिल, शमी-पत्र, घी, नील कमल, खीर, चीनी मिलाकर बनाई जाए। इसके पश्चात् घी तथा दूध से निर्मित पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराएं। उपरोक्त शनि की प्रतिमा को तिल के तेल या तिलों के ढेर में रखकर विधि-विधान-पूर्वक मन्त्र द्वारा पूजन करें, कुंकुम इत्यादि चढ़ाएं, नीली तथा काली तुलसी, शमी-पत्र मुझे प्रसन्न करने के लिए अर्पित करें।

काले रंग के वस्त्र, बैल, दूध देने वाली गाय- बछड़े सहित दान में दें। हे राजन ! जो मन्त्रोद्धारपूर्वक इस स्तोत्र से मेरी पूजा करता है, पूजा करके हाथ जोड़कर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसको मैं किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होने दूंगा। इतना ही नहीं, अन्य ग्रहों की पीड़ा से भी मैं उसकी रक्षा करुंगा। इस तरह अनेकों प्रकार से मैं जगत को पीड़ा से मुक्त करता हूँ।।४२-५०

शनि अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ शनैश्चराय नमः ॥
ॐ शान्ताय नमः ॥
ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः ॥
ॐ शरण्याय नमः ॥
ॐ वरेण्याय नमः ॥
ॐ सर्वेशाय नमः ॥
ॐ सौम्याय नमः ॥
ॐ सुरवन्द्याय नमः ॥
ॐ सुरलोकविहारिणे नमः ॥
ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः ॥
ॐ सुन्दराय नमः ॥
ॐ घनाय नमः ॥
ॐ घनरूपाय नमः ॥
ॐ घनाभरणधारिणे नमः ॥
ॐ घनसारविलेपाय नमः ॥
ॐ खद्योताय नमः ॥
ॐ मन्दाय नमः ॥
ॐ मन्दचेष्टाय नमः ॥
ॐ महनीयगुणात्मने नमः ॥
ॐ मर्त्यपावनपदाय नमः ॥
ॐ महेशाय नमः ॥
ॐ छायापुत्राय नमः ॥
ॐ शर्वाय नमः ॥
ॐ शततूणीरधारिणे नमः ॥
ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः ॥
ॐ अचञ्चलाय नमः ॥
ॐ नीलवर्णाय नमः ॥
ॐ नित्याय नमः ॥
ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः ॥
ॐ नीलाम्बरविभूशणाय नमः ॥
ॐ निश्चलाय नमः ॥
ॐ वेद्याय नमः ॥
ॐ विधिरूपाय नमः ॥
ॐ विरोधाधारभूमये नमः ॥
ॐ भेदास्पदस्वभावाय नमः ॥
ॐ वज्रदेहाय नमः ॥
ॐ वैराग्यदाय नमः ॥

ॐ वीराय नमः ॥
ॐ वीतरोगभयाय नमः ॥
ॐ विपत्परम्परेशाय नमः ॥
ॐ विश्ववन्द्याय नमः ॥
ॐ गृध्नवाहाय नमः ॥
ॐ गूढाय नमः ॥
ॐ कूर्माङ्गाय नमः ॥
ॐ कुरूपिणे नमः ॥
ॐ कुत्सिताय नमः ॥
ॐ गुणाढ्याय नमः ॥
ॐ गोचराय नमः ॥
ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः ॥
ॐ विद्याविद्यास्वरूपिणे नमः ॥
ॐ आयुष्यकारणाय नमः ॥
ॐ आपदुद्धर्त्रे नमः ॥
ॐ विष्णुभक्ताय नमः ॥
ॐ वशिने नमः ॥
ॐ विविधागमवेदिने नमः ॥
ॐ विधिस्तुत्याय नमः ॥
ॐ वन्द्याय नमः ॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥
ॐ वरिष्ठाय नमः ॥
ॐ गरिष्ठाय नमः ॥
ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः ॥
ॐ वरदाभयहस्ताय नमः ॥
ॐ वामनाय नमः ॥
ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः ॥
ॐ श्रेष्ठाय नमः ॥
ॐ मितभाषिणे नमः ॥
ॐ कष्टौघनाशकर्त्रे नमः ॥
ॐ पुष्टिदाय नमः ॥
ॐ स्तुत्याय नमः ॥
ॐ स्तोत्रगम्याय नमः ॥
ॐ भक्तिवश्याय नमः ॥
ॐ भानवे नमः ॥
ॐभानुपुत्राय नमः ॥
ॐ भव्याय नमः ॥
ॐ पावनाय नमः ॥
ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः ॥

ॐ धनदाय नमः ॥
ॐ धनुष्मते नमः ॥
ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः ॥
ॐ तामसाय नमः ॥
ॐ अशेषजनवन्द्याय नमः ॥
ॐ विशेशफलदायिने नमः ॥
ॐ वशीकृतजनेशाय नमः ॥
ॐ पशूनां पतये नमः ॥
ॐ खेचराय नमः ॥
ॐ खगेशाय नमः ॥
ॐ घननीलाम्बराय नमः ॥
ॐ काठिन्यमानसाय नमः ॥
ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः ॥
ॐ नीलच्छत्राय नमः ॥
ॐ नित्याय नमः ॥
ॐ निर्गुणाय नमः ॥
ॐ गुणात्मने नमः ॥
ॐ निरामयाय नमः ॥
ॐ निन्द्याय नमः ॥
ॐ वन्दनीयाय नमः ॥
ॐ धीराय नमः ॥
ॐ दिव्यदेहाय नमः ॥
ॐ दीनार्तिहरणाय नमः ॥
ॐ दैन्यनाशकराय नमः ॥
ॐ आर्यजनगण्याय नमः ॥
ॐ क्रूराय नमः ॥
ॐ क्रूरचेष्टाय नमः ॥
ॐ कामक्रोधकराय नमः ॥
ॐ कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः ॥
ॐ परिपोषितभक्ताय नमः ॥
ॐ परभीतिहराय नमः ॥
ॐ भक्तसंघमनोऽभीष्टफलदाय नमः ॥

॥ इति शनि अष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णम् ॥

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

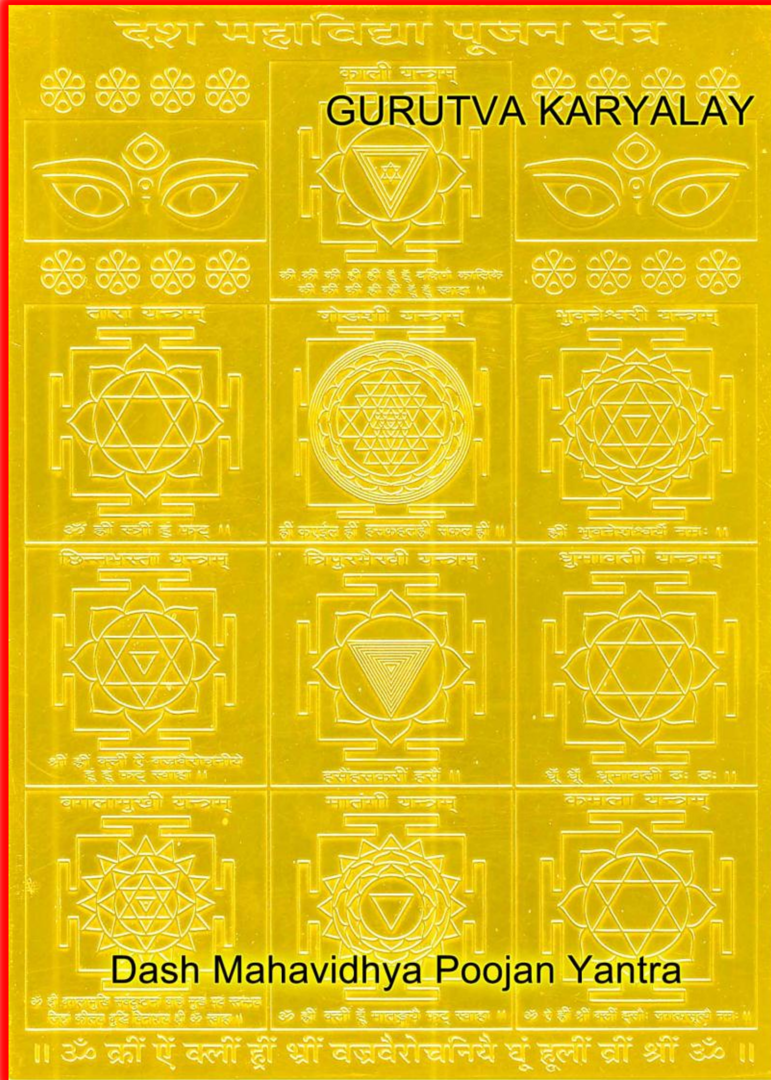
श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- ❖ श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- ❖ जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- ❖ जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- ❖ श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- ❖ विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

अमोद्य महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। >> Order Now

GURUTVA KARYALAY
91+ 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Website: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |

श्री हनुमान यंत्र

शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रहमा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं। श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 325 से 12700 तक** >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित
22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		**ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)**		**ताम्र पत्र पर (Copper)**	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

जून 2019 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	त्रयोदशी	17:09	भरणी	24:42	शोभन	13:05	वणिज	17:09	मेष	-
2	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्दशी	16:36	कृतिका	24:38	अतिगंड	11:37	शकुनि	16:36	मेष	06:45
3	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	अमावस्या	15:31	रोहिणि	24:5	सुकर्मा	09:43	नाग	15:31	वृष	-
4	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	प्रतिपदा	14:00	मृगशिरा	23:08	धृति	07:27	बव	14:00	वृष	11:40
5	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वितीया	12:09	आद्रा	21:53	गंड	26:6	कौलव	12:09	मिथुन	-
6	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	तृतीया	10:03	पुनर्वसु	20:28	वृद्धि	23:12	गर	10:03	मिथुन	14:51
7	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्थी	07:48	पुष्य	18:55	ध्रुव	20:13	विष्टि	07:48	कर्क	-
8	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	पंचमी - षष्ठी	05:29-5:09	आश्लेषा	17:21	व्याघात	17:12	बालव	05:29	कर्क	17:22
9	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	सप्तमी	24:51	मघा	15:48	हर्षण	14:14	गर	13:59	सिंह	-
10	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	अष्टमी	22:38	पूर्वाफाल्गुनी	14:20	वज्र	11:20	विष्टि	11:44	सिंह	20:00
11	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	नवमी	20:34	उत्तराफाल्गुनी	13:00	सिद्धि	08:32	बालव	09:35	कन्या	-
12	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	दशमी	18:40	हस्त	11:50	व्यतिपात	05:53	तैतिल	07:35	कन्या	23:21
13	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	एकादशी	17:01	चित्रा	10:54	परिग्रह	25:12	वणिज	05:48	तुला	-
14	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वादशी	15:39	स्वाती	10:16	शिव	23:14	बालव	15:39	तुला	-

15	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	त्रयोदशी	14:39	विशाखा	09:58	सिद्ध	21:36	तैतिल	14:39	तुला	04:02
16	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्दशी	14:05	अनुराधा	10:06	साध्य	20:20	वणिज	14:05	वृश्चिक	-
17	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	14:00	जेष्ठा	10:42	शुभ	19:29	बव	14:00	वृश्चिक	10:43
18	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	प्रतिपदा	14:27	मूल	11:50	शुक्ल	19:03	कौलव	14:27	धनु	-
19	बुध	आषाढ़	कृष्ण	द्वितीया	15:26	पूर्वाषाढ़	13:29	ब्रह्म	19:03	गर	15:26	धनु	20:00
20	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	तृतीया	16:56	उत्तराषाढ़	15:38	इन्द्र	19:26	विष्टि	16:56	मकर	-
21	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्थी	18:54	श्रवण	18:14	वैधृति	20:08	बव	05:52	मकर	-
22	शनि	आषाढ़	कृष्ण	पंचमी	21:10	धनिष्ठा	21:07	विषकुंभ	21:04	कौलव	08:00	मकर	07:40
23	रवि	आषाढ़	कृष्ण	षष्ठी	23:33	शतभिषा	24:7	प्रीति	22:05	गर	10:21	कुंभ	-
24	सोम	आषाढ़	कृष्ण	सप्तमी	25:53	पूर्वाभाद्रपद	27:1	आयुष्मान	23:01	विष्टि	12:44	कुंभ	20:20
25	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	अष्टमी	27:54	उत्तराभाद्रपद	....	सौभाग्य	23:44	बालव	14:56	मीन	-
26	बुध	आषाढ़	कृष्ण	नवमी	29:26	उत्तराभाद्रपद	05:37	शोभन	24:3	तैतिल	16:44	मीन	-
27	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	....	रेवति	07:43	अतिगंड	23:54	वणिज	17:58	मीन	07:44
28	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	06:36	अश्विनी	09:11	सुकर्मा	23:11	विष्टि	06:20	मेष	-
29	शनि	आषाढ़	कृष्ण	एकादशी	06:32	भरणी	09:57	धृति	21:53	बालव	06:32	मेष	16:03
30	रवि	आषाढ़	कृष्ण	द्वादशी	06:01	कृतिका	10:00	शूल	20:01	तैतिल	06:01	वृष	-

जून 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	शनि	ज्येष्ठ	कृष्ण	त्रयोदशी	17:09	प्रदोष व्रत, त्रिदिवसीय वटसावित्री व्रत का दूसरा दिन (उ.भारत), संध्याकालीन मासिक शिवरात्रि व्रत, सावित्री चतुर्दशी (प.बंगाल)
2	रवि	ज्येष्ठ	कृष्ण	चतुर्दशी	16:36	सूर्योदय कालीन मासिक शिवरात्रि व्रत, सावित्री चतुर्दशी (प.बंगाल) संध्याकालीन अमावस्या,
3	सोम	ज्येष्ठ	कृष्ण	अमावस्या	15:31	सूर्योदय कालीन स्नान-दान हेतु उत्तम श्राद्ध की ज्येष्ठी अमावस्या, वटसावित्री अमावस्या (बरगदाही अमावस), भावुका अमावस, करिदिन, शनि जयंती, फलहारिणी कालिका पूजा (प.बंगाल),
4	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	प्रतिपदा	14:00	गंगा दशहरा स्नान प्रारंभ, करवीर व्रत,
5	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वितीया	12:09	विश्व पर्यावरण दिवस, संध्याकालीन रम्भातृतीया व्रत,
6	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	तृतीया	10:03	सूर्योदय कालीन रम्भातृतीया व्रत, वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चं. अस्त.रा.11:05), महाराणा प्रताप जयंती, उमा चतुर्थी, पुष्य नक्षत्र (रात्रि 20:28 से)
7	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्थी	07:48	पुष्य नक्षत्र (रात्रि 18:55 तक)
8	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	पंचमी - षष्ठी	05:29-5:09	श्रृति पंचमी, स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, महादेव विवाह (उड़ीसा), अरण्यषष्ठी, विंध्यवासिनी महापूजा,जमाई षष्ठी, शीतला षष्ठी,
9	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	सप्तमी	24:51	
10	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	अष्टमी	22:38	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, धूमावती महाविद्या जयंती, ज्येष्ठाष्टमी,
11	मंगल	ज्येष्ठ	शुक्ल	नवमी	20:34	श्रीमहेश नवमी, हरि जयन्ति,
12	बुध	ज्येष्ठ	शुक्ल	दशमी	18:40	प्राचीन गणनानुसार गंगा-दशहरा, बटुक दशमी, भैरव जयन्ति
13	गुरु	ज्येष्ठ	शुक्ल	एकादशी	17:01	दृश्यगणितानुसार गंगा-दशहरा, मां गायत्री जयंति, निर्जला एकादशी व्रत सर्वे, भीम एकादशी,
14	शुक्र	ज्येष्ठ	शुक्ल	द्वादशी	15:39	चम्पक द्वादशी, त्रिविक्रम द्वादशी त्रिस्पृशा महाद्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, श्रीराम द्वादशी, रुक्मिणी विवाह,

						संध्याकालीन प्रदोष व्रत
15	शनि	ज्येष्ठ	शुक्ल	त्रयोदशी	14:39	सूर्योदय कालीन प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रत 3 दिन (मालवा, गुजरात, दक्षिण भारत), गौतमेश्वर दर्शन-यात्रा (काशी), सूर्य की मिथुन संक्रांति (संध्या 05:45 बजे), संक्रान्ति में स्नान-दान हेतु पुण्यकाल मध्याह्न से सूर्यास्त तक रज संक्रांति (ओड़िसा),
16	रवि	ज्येष्ठ	शुक्ल	चतुर्दशी	14:05	चम्पक चतुर्दशी, संध्याकालीन पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत कथा
17	सोम	ज्येष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	14:00	सूर्योदय कालीन स्नान-दान हेतु उत्तम ज्येष्ठी पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा, चंद्र पूर्णिमा, वटसावित्री पूर्णिमा(मालवा, गुजरात, दक्षिण भारत), देव स्नान पूर्णिमा, बिल्वत्रिरात्र व्रत प्रारंभ, सरयू जयंती, संत कबीर जयंती,
18	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	प्रतिपदा	14:27	आषाढ़ मास प्रारंभ, श्री नारद जयन्ती
19	बुध	आषाढ़	कृष्ण	द्वितीया	15:26	-
20	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	तृतीया	16:56	संध्याकालीन संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.09:54)
21	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्थी	18:54	संध्याकालीन कोकिला पंचमी, नाग पूजन (प.बं), योग दिवस
22	शनि	आषाढ़	कृष्ण	पंचमी	21:10	सूर्योदय कालीन कोकिला पंचमी, नाग पूजन (प.बं),
23	रवि	आषाढ़	कृष्ण	षष्ठी	23:33	-
24	सोम	आषाढ़	कृष्ण	सप्तमी	25:53	भानु सप्तमी पर्व, (सूर्यग्रहण समान फलदायक),
25	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	अष्टमी	27:54	शीतलाष्टमी, कालाष्टमी व्रत, भलभलाष्टमी, बोहराष्टमी, प्राचीन मतानुसार शीतलाष्टमी, इन्द्राणी पूजा
26	बुध	आषाढ़	कृष्ण	नवमी	29:26	-
27	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	....	-
28	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	06:36	संध्याकालीन योगिनी एकादशी व्रत,
29	शनि	आषाढ़	कृष्ण	एकादशी	06:32	सूर्योदय कालीन योगिनी एकादशी व्रत,
30	रवि	आषाढ़	कृष्ण	द्वादशी	06:01	प्रदोष व्रत (संतान सुख हेतु उत्तम)

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> **Shop Online | Order Now**

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्यः- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अदद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

जून 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
03	प्रात: 05:16 से रात 12:45 तक	25	प्रात: 05:13 से रात 03:22 तक
06	प्रात: 05:14 से रात 10:17 तक	27	प्रात: 05:13 से अगले दिन प्रात: 05:22 तक
12	प्रात: 05:13 से दोपहर 12:58 तक	28	प्रात: 05:13 से प्रात: 06:55 तक
21	प्रात: 05:13 से संध्या 05:19 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		दि्वपुष्कर योग (दोगुना **फल दायक)**	
23	रात 12:08 से अगले दिन रात 04:57 तक	04	दोपहर 02:27 से रात 05:14 तक
29	सुबह 08:10 से अगले दिन प्रात: 05:13 तक		
गुरु पुष्यामृत योग			
06	रात 10:17 से अगले दिन प्रात: 05:14 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
01	संध्या 05:16 से अगले दिन प्रात:05:02 तक(स्वर्ग)	16	दोपहर 02:02 से रात 01:57 तक (स्वर्ग)
06	रात 08:47 से रात 07:38 तक(पृथ्वी)	20	प्रातः 04:17 से संध्या 05:08 तक (पाताल)
09	रात 12:36 से अगले दिन सुबह 11:29 तक (पाताल)	23	रात 11:53 से अगले दिन दोपहर 01:04 तक(पृथ्वी)
13	प्रातः 05:36 से संध्या 04:49 तक (पाताल)	27	संध्या 06:15 से अगले दिन प्रातः 06:36 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach …………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………………………………..	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ………………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ……………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ……………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach ……………………..	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……………………………….…	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………………………………………	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………..	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach …………..….	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach …………………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ……………………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach …………………….	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………….	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………….	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ……………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach …………….	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……………………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach …………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……………	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………….	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……………………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………….	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach …………………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach …………………….	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach …………………………………..	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……………………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……………………….	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach …………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ………………………..	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ………………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……………………………...	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ………………….	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach …………………………….	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……………………………..	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ………………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ………………………………..	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach …………………………………..	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……………………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ………………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ………………….	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach …………………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach …………………………….	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach …………………………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……………………………..	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach …………………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach …………………………….	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……………………………….	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………….	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ……………………….	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………….	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……………………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ………………….	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ……………………………….	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

जून 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



GURUTVA JYOTISH

Monthly

JUN -2019